लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

# लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ सैतीसवां अंक जुलाई–सितम्बर, 2021

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124

*भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय (केन्द्र में)*
*ऑनलाइन माध्यम से हिंदी पखवाड़ा 2021 का उद्घाटन करते हुए*

*भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय को*
*राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार*
*वर्ष 2020–21 के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।*

*इसके लिए मुख्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों*
*को हार्दिक शुभकामनाएं।*

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# लेखापरीक्षा प्रकाश

## एक सौ सैतीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका
(जुलाई–सितम्बर, 2021)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली–110124

हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# लेखापरीक्षा प्रकाश

## एक सौ सैतीसवां अंक (जुलाई–सितम्बर, 2021)

## अनुक्रमणिका


| | | पृ.सं. |
|---|---|---|
| | पत्रिका परिवार एवं संपादकीय | 5 |
| | पाठकों के नाम पाती | 6 |
| | माननीय गृह मंत्री जी का संदेश | 7 |
| | उद्‌बोधन – भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय | 11 |
| | हिन्दी प्रगति रिपोर्ट के मुख्य अंश | 12 |
| | आपके पत्र | 13 |
| | **लेख** | |
| 1. | देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका<br>*सुश्री अनामिका अंतिल* | 19 |
| 2. | स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका<br>*सुश्री पूनम रानी* | 21 |
| 3. | मातृभाषा की जीवंतता : मूक और बधिर के संदर्भ में<br>*अभय राम सिंह* | 24 |
| 4. | लेखापरीक्षा का बढ़ता महत्व<br>*उदय प्रताप सिंह* | 27 |
| 5. | राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान<br>*सुश्री मीना भारद्वाज* | 31 |
| 6. | अभिव्यक्ति एवं संवाद का सशक्त माध्यम–भाषा<br>*विनोद कुमार शर्मा* | 33 |
| 7. | ध्वनि विज्ञान<br>*गौरव हारिथ* | 35 |
| 8. | रानी अब्बक्का चौटा – भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी<br>*सुश्री सं.ग. श्रीमती* | 39 |

## विषय सूची


| | पृ.सं. |
|---|---|
| 9. प्रदूषण की समस्या एवं उसका निदान<br>*सुश्री राजकुमारी शर्मा* | 41 |
| 10. कोरोना एवं पर्यावरण<br>*सुश्री कुसुमलता* | 44 |
| 11. हिंदी उपन्यास<br>*सुश्री मीनाक्षी* | 47 |
| **कहानियाँ** | |
| 12. हार्ट अटैक<br>*बी.एस. चौहान* | 49 |
| 13. आत्मविश्वास<br>*पवन कुमार* | 54 |
| 14. वेदी की विधवा<br>*मेहरबान सिंह नेगी* | 56 |
| **कविताएँ** | |
| 15. अन्ततः<br>*महेन्द्र 'अनुज'* | 63 |
| 16. निर्झर गान<br>*सुभाष कुमार नेमा* | 64 |
| 17. देख लेना<br>*कुमार भास्कर* | 65 |
| 18. वजूद<br>*रविन्द्र सिंह* | 66 |
| 19. ग़ज़ल<br>*सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'* | 67 |
| 20. अल्पविराम<br>*मुनीष भाटिया* | 68 |
| 21. उपभोक्तावाद<br>*अमित कुमार* | 69 |
| 22. दो कविताएँ<br>*सुश्री लीना दरियाल 'सत्यम'* | 70 |
| 23. 21 मई बनाम 16 जुलाई<br>*केदार नाथ प्रसाद* | 71 |
| 24. आज का इंसान<br>*सुश्री नीतू सिंह* | 72 |
| 25. अभिलाषा<br>*पंकज अरोरा* | 73 |
| 27. मुख्यालय में<br>*हीरा बल्लभ भट्ट* | 74 |
| 28. आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका<br>*कमलजीत सिंह रामुवालिया* | 81 |

**स्वत्वाधिकार**
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

**प्रकाशन**
''लेखापरीक्षा प्रकाश''
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

**प्रकाशक**
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

**एक सौ सैतीसवां अंक**
**(जुलाई–सितम्बर, 2021)**

**पत्रिका परिवार**

**मुख्य संरक्षक**

**श्री गिरीश चंद्र मुर्मू**
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

**संरक्षक**

**श्री जयंती प्रसाद**
उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

**संपादक मण्डल**

**प्रधान संपादक**

**श्री जे.पी.एन. सिंह**
महानिदेशक (राजभाषा)

**श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया**
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

**संपादक**

**श्री अजीत सिंह**
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

**सहायक संपादक**

**सुश्री अनामिका अंतिल**
सहायक प्रशासन अधिकारी

**श्री हीरा बल्लभ भट्ट**
सलाहकार

**रचना चयन समिति**

**श्री अनिल कुमार पिलानी**
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

**सुश्री राजकुमारी शर्मा**
सलाहकार

**मुद्रक :** आकांक्षा इम्प्रेशंस
जी–194, सेक्टर–2, बवाना, दिल्ली

**मूल्य :** राजभाषा के प्रति निष्ठा

# संपादकीय

*पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ सैतीसवां अंक (जुलाई–सितम्बर, 2021) आपके कर–कमलों में है।*

*हिंदी भाषा को भारत में 14 सितंबर, 1949 को राजभाषा का दर्जा मिला, जब इसे भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। 14 सितंबर वह दिन भी है जिसे हम भारत में आधिकारिक हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं। हिंदी दिवस हिंदी भाषा के महत्व को दर्शाता है और अपने समृद्ध इतिहास और सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक महत्व को प्रदर्शित करता है।*

*हिंदी भाषा का साहित्यिक इतिहास काफी पुराना है। हिंदी भाषा का आधुनिक अवतार जो वर्तमान समय में ज्यादातर उपयोग में है, लगभग पिछली 4-5 शताब्दी में प्रफुल्लित हुआ है। स्वतंत्र भारत में गणतंत्र संविधान लागु होने पर हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रयोग करने के लिए संवैधानिक व्यवस्था बनाई गई और हर वर्ष हिंदी दिवस मनाने की परम्परा विकसित हुई। हम हिंदी दिवस को शैक्षणिक संस्थानों, स्कूलों, कॉलेजों और सरकारी कार्यालयों में भी बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं। आज के अत्यधिक व्यावसायिक वातावरण में जहां लोग अपनी जड़ों को भूल रहे हैं, वहाँ हिंदी दिवस हिंदी भाषा को याद कराने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।*

*हिंदी भारतवर्ष की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो देशव्यापी संचार में मदद करती है। हिंदी दिवस महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारतीयों के अपनी भाषा में बोलने एवं लिखने के संघर्ष का प्रतीक है। यद्यपि भारत की हर भाषा अनमोल है और इन्हें संरक्षित और प्रफुल्लित किया जाना चाहिए। परंतु राष्ट्र की एक भाषा जो सभी को एक सूत्र में पिरोए उसके लिए हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। अतः हिंदी दिवस न केवल लोगों को अपनी जड़ों को याद रखने के लिए प्रोत्साहित करता है बल्कि हिंदी भाषा को बढ़ावा भी देता है। हिंदी दिवस हमें यह अहसास दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि हिंदी भाषा में राजकीय कार्य आसानी और प्रभावशाली तरीके से किए जा सकते हैं और ऐसे में हमें हिंदी भाषा में बोलने में गर्व महसूस करना चाहिए।*

*इस अवसर पर मेरा निवेदन है कि राजभाषा की गरिमा को बनाए रखने में अपना अनवरत योगदान देते रहें।*

*जय हिंदी – जय भारती!*

*आपका शुभाकांक्षी*

*कमलजीत सिंह रामुवालिया*
*प्रधान निदेशक*

*नई दिल्ली*

# पाठकों के नाम पाती

प्रिय पाठकगण,

विभागीय गृह–पत्रिका का एक सौ सैतीसवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। आदरणीय पाठकगण आपके स्नेह और सहयोग से ही पत्रिका की प्रतिष्ठा बनी रहती है।

हिंदी दिवस या हिंदी पखवाड़ा मनाने का उद्देश्य हिंदी के प्रयोग के प्रति आम जन में सहजता का भाव पैदा करना है। हिंदी दिवस को त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। यह त्यौहार हिंदी के प्रति सतत् जागरूकता का प्रतीक है, जो हम हर वर्ष मनाते हैं।

यह पाती आपके नाम है। आपसे यह जानने की जिज्ञासा होती है कि क्या वर्ष में एक बार हिंदी दिवस को पर्व के रूप में मनाया जाना उचित है? क्या अन्यत्र किसी देश में उस देश की भाषा का दिवस मनाया जाता है? क्या विश्व के किसी देश में अपनी भाषाओं के प्रचलन के लिए हिंदी बैठकों में हिंदी को अपनाने पर ज़ोर दिया जा रहा है? यदि इन प्रश्नों का उत्तर नहीं में हैं, तो भारतीय भाषाओं की प्रगति की दुकानें आंकड़ों के बल पर कब तक चलती रहेंगीं। हिंदी दिवस अपने में लक्ष्य नहीं है अपितु यह वह अवसर है जब हमें हिंदी राजभाषा में कार्य करने के लिए पुनः समर्पित करके नई ऊर्जा से आगामी समय में राजभाषा को सींचना है।

आपके नाम लिखी हिंदी दिवस की यह पाती कुछ कह रही है कि आओ, हम संकल्प करें कि घर परिवार में आम व्यवहार तक, सरकारी कामकाज से अखबार तक हिंदी ही अपनायेंगे, हिंदी में लिखेंगे, जिन्हें हिंदी नहीं आती, उन्हें सिखायेंगे, सही राह दिखायेंगे, इसी में हम सबका उत्थान एवं राष्ट्र का समग्र उत्थान सम्भव है। मैं आशा करता हूँ आप सही समय पर सही उत्तर हिंदी दिवस को दे पायेंगे।

जय हिंदी – जय भारती!

आपका शुभाकांक्षी
**अजीत सिंह**
संपादक

नई दिल्ली

# हिंदी दिवस 2021

## के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश

## राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

**अमित शाह**
**गृह और सहकारिता मंत्री**
**भारत सरकार**
**AMIT SHAH**
**HOME AND COOPERATION MINISTER**
**GOVERNMENT OF INDIA**

सत्यमेव जयते

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

**"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"**

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

**"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"**

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

**नई दिल्ली,**
**14 सितंबर, 2021**

**(अमित शाह)**

आज़ादी का अमृत महोत्सव

# भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय द्वारा दिनांक 14.09.2021 को दिया गया उद्‌बोधन

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू

प्रिय साथियों,

हिन्दी दिवस के पावन अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। आप सभी जानते हैं कि हमारी संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया। आज हिन्दी को राजभाषा के पद पर आसीन हुए 72 वर्ष हो चुके हैं। भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग की कार्यशैली अन्य विभागों/मंत्रालयों की कार्यशैली से अलग है फिर भी हमने राजभाषा के प्रचार–प्रसार तथा संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु भरसक प्रयास किए हैं।

राजभाषा विभाग द्वारा जारी हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में हमारे कार्यालय द्वारा उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं। हमारा कार्यालय हिन्दी पत्राचार, हिन्दी टिप्पण एवं हिन्दी में किए जाने वाले अन्य कार्यों में राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में निरंतर प्रगति कर रहा है। वर्ष 2019–2020 की तुलना में वर्ष 2020–2021 के दौरान कार्यालय ने अपेक्षाकृत सराहनीय कार्य किया है।

मुझे यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि हमारे कार्यालय को राजभाषा नीति के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, द्वारा प्रदान किए जाने वाले सर्वोच्च पुरस्कार 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार वर्ष 2020–21' में 'प्रथम' स्थान प्राप्त हुआ है। यह हमारे कार्यालय के लिए हिन्दी प्रगति के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि है। इसका श्रेय मुख्यालय के सभी कार्मिकों को जाता है, आप सभी इस उपलब्धि के लिए बधाई के पात्र हैं।

यह गर्व का विषय है कि राजभाषा हिन्दी की व्यापकता और सार्थकता को आज विश्व ने भी स्वीकार किया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हो रहे विकास के परिप्रेक्ष्य में, यह भी जरूरी हो जाता है कि राजभाषा हिन्दी इस दिन–प्रतिदिन होने वाले परिवर्तनों के साथ आगे बढ़े।

मुझे यह जानकर खुशी भी हो रही है कि सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हमारे विभाग में हिन्दी के कार्यों के लिए इसका भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। हिन्दी पत्रिका का ई–संस्करण और ई–ऑफिस में हिन्दी का प्रयोग इसका प्रमुख उदाहरण है।

कोविड–19 महामारी ने विश्व के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी की हैं। हमारे कार्यालय के समस्त अधिकारियों व कार्मिकों ने इस कठिन समय में देश के समक्ष अपनी प्रतिबद्धता और निष्ठा का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस महामारी ने जहां एक ओर कई कठिनाइयाँ खड़ी की हैं, वहीं कई नए अवसरों को भी जन्म दिया है। इसने हमें एहसास दिलाया है कि ईश्वर ने इस देश को प्रतिभावान मानव संसाधन और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध किया है, जिसका समुचित उपयोग कर हम आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

लेखापरीक्षा के कर्तव्यों का आधार जन साधारण के हितों की रक्षा करना है, जिसका पालन विभाग द्वारा लेखाओं के निरीक्षण या लेखापरीक्षा द्वारा किया जाता है। हिन्दी भाषा लेखापरीक्षा तथा जन मानस के बीच की वह कड़ी है, जिससे लेखापरीक्षा का प्रभाव अत्यंत व्यापक हो जाता है। लेखापरीक्षा प्रतिवेदन तथा अन्य दस्तावेज विभाग द्वारा हिन्दी भाषा में भी तैयार किये जाते हैं, ताकि लेखापरीक्षा के प्रभाव को और भी व्यापक करते हुए जन साधारण की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित हो। माननीय प्रधानमंत्री जी ने इसी आधार पर आत्मनिर्भर भारत का नारा दिया है। हम इन प्रयासों को आम लोगों की भाषा, हिन्दी के प्रयोग से और गति दे सकते हैं।

आइये, आज इस शुभ अवसर पर हम सब यह संकल्प लें कि हिन्दी के प्रयोग केवल लक्ष्य प्राप्ति तक ही सीमित नहीं रखेंगे अपितु हिन्दी के प्रयोग से हम अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को गौरव प्रदान करेंगे और भाषा जगत में अपनी नई पहचान प्राप्त करेंगे।

अब हम हिन्दी दिवस के इस पावन अवसर पर राजभाषा प्रतिज्ञा लेंगे। मैं राजभाषा प्रतिज्ञा पढ़ूंगा और आप सभी मेरे पीछे इसे दोहराएंगे।

**भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे। अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगें।**

**हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।**

**जय राजभाषा! जय हिंद!**

# हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह के अवसर पर हिन्दी प्रगति रिपोर्ट के मुख्य अंश

परम आदरणीय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय, उप–नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय एवं अन्य सभी वरिष्ठ अधिकारी तथा कर्मचारीगण!

मैं आज हिन्दी पखवाड़े के शुभारंभ के अवसर पर राजभाषा हिन्दी के विकास एवं हमारे कार्यालय द्वारा उसके लिए किए गए प्रयासों से आप सभी को अवगत कराना चाहूँगा।

राजभाषा विभाग द्वारा जारी हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में मुख्यालय द्वारा उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे है। हम हिन्दी पत्राचार, हिन्दी टिप्पणी एवं हिन्दी में किए जाने वाले अन्य कार्यों में राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। वर्ष 2020–2021 की समयावधि के दौरान कार्यालय का पत्राचार 'क' से 'क' क्षेत्र को 93%, 'क' से 'ख' क्षेत्र को 91% और 'क' से 'ग' क्षेत्र को 90% रहा तथा हिन्दी टिप्पण की प्रतिशतता 80% आंकी गई है।

इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप मुख्यालय के 25% अनुभागों व 25% क्षेत्रीय कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण ऑनलाईन माध्यम से पूरा किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन भी ऑनलाइन माध्यम से नियमित रूप से किया जा रहा है। मुख्यालय की हिन्दी पत्रिका ''लेखापरीक्षा प्रकाश''का प्रकाशन ई–संस्करण के रूप में भी किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, हिंदी को कार्यालयीन परंपरा में बढ़ावा देने के लिए राजभाषा अनुभाग का संपूर्ण कार्य ई–ऑफिस के माध्यम से किया जा रहा है।

मुझे इस मंच से यह जानकारी साझा करते हुए अत्यंत खुशी हो रही है कि राजभाषा नीति के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप राजभाषा के प्रयोग में बेहतर प्रगति दर्ज करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय को वर्ष 2020–21 के लिए 300 व 300 से अधिक कार्मिक वाले मंत्रालय/विभाग श्रेणी में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रदान किए जाने वाले सर्वोच्च पुरस्कार ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। जिसे आज माननीय गृह मंत्री के करकमलों से कार्यालय के प्रतिनिधियों द्वारा ग्रहण किया गया है।

यहाँ यह जानकारी भी दी जानी समीचीन प्रतीत होती है कि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय के अंतर्गत आने वाले सभी क्षेत्रीय कार्यालयों तथा मुख्यालय के अनुभागों से प्राप्त होने वाली हिन्दी प्रगति रिपोर्ट के समेकन हेतु एकीकृत प्रणाली "राजभाषा ऑनलाइन रिपोर्ट प्रबंधन प्रणाली" का विकास कार्य राजभाषा अनुभाग द्वारा किया जा रहा है जो कि अब अपने अंतिम चरण में है।

अब मैं हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण आपके सामने रखता हूँ। इन कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच पहले ही हिन्दी अनुभाग द्वारा परिचालित किया जा चुका है। पखवाड़े के दौरान हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, श्रुतलेख प्रतियोगिता, वर्ग पहेली प्रतियोगिता, भारत सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, नियम एवं हिन्दी ज्ञान संबंधित प्रतियोगिता एवं सुलेख प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। विभिन्नं प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार का वितरण एवं हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 28.9.2021 को होगा।

मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप सभी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों/अधिकारियों को इन कार्यक्रमों में बढ–चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें तथा हिन्दी पखवाड़े को सफल बनाएं। मुझे अपना बहुमूल्य समय देने और इतने धैर्य से सुनने के लिए, मैं आप सबका आभार प्रकट करता हूँ।

**(जे.पी.एन. सिंह)**
महानिदेशक (राजभाषा)

# आपके पत्र

## आपके कार्यालय द्वारा भी राजभाषा हिंदी की प्रगति हेतु सदा से ही प्रभावशाली कार्य किये जा रहे हैं।

त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 134वें एवं 135वें अंक प्राप्त हुए। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी तथा माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी के नेतृत्व में देश लगातार आगे बढ़ रहा है। आप दोनों गर्व से हिंदी का प्रयोग करते हैं तथा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु सदा प्रयासरत हैं। उनसे हमें लगातार आगे बढ़ कर राजभाषा हिंदी का उपयोग राजकार्य के साथ–साथ सामाजिक व्यवहार में भी करने की प्रेरणा मिलती है। यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय द्वारा भी राजभाषा हिंदी की प्रगति हेतु सदा से ही प्रभावशाली कार्य किये जा रहे हैं। इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। मैं आपकी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

डॉ. मनोज राजोरिया
सांसद (लोक सभा)
करौली–धौलपुर (राजस्थान)

## पत्रिका को ऑनलाइन पुस्तक की भाँति पढ़ने के लिए बहुत अच्छी तकनीक का उपयोग किया गया है।

ई–मेल द्वारा 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक का ई–संस्करण प्राप्त हुआ है, एतदर्थ धन्यवाद। इस पत्रिका को ऑनलाइन पुस्तक की भाँति पढ़ने के लिए बहुत अच्छी तकनीक का उपयोग किया गया है। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर इंडिया गेट की तस्वीर हमें गणतंत्र दिवस की याद दिलाती है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर सुश्री राजकुमारी शर्मा द्वारा रचित लेख 'मानव जीवन के विकास में प्रेरक विचारों का योगदान' एवं श्री आलोक कुमार 'अलक' द्वारा रचित लेख 'हरी सब्जी' हमारे विचार से प्रशंसनीय हैं। इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर

## पत्रिका का बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक का ई–संस्करण सधन्यवाद प्राप्त हुआ। अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज–सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। सुश्री मीना भारद्वाज का लेख 'भारत में महिला सशक्तिकरण', सुश्री रश्मि अग्रवाल

की कविता 'धुआ' एवं सुश्री लीना दरियाल 'सत्यम' की रचना 'दो कविताएं' काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

वरि. लेखाधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
बिहार, पटना

## रचनाएं न केवल श्रेष्ठ हैं अपितु उच्चकोटि की हैं।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक का ई–संस्करण लिंक के माध्यम से ई–मेल द्वारा प्राप्त हुई है, तदर्थ धन्यवाद। पूर्व अंकों की तरह इस अंक में भी प्रकाशित सभी रचनाएं न केवल श्रेष्ठ हैं अपितु उच्चकोटि की हैं। विशेषरूप से सुश्री प्रिया मिश्रा जी द्वारा लिखा गया लेख 'कोविड–19 की यादें' एवं श्री राम सिंगार चौहान जी द्वारा लिखा गया 'ग़ज़ल' अत्यंत ही पठनीय एवं प्रेरणादायक है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)– I,
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

## पत्रिका का यह अंक भी मुद्रण, संपादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से बेहद उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक का ई–संस्करण की प्रति प्राप्त हुई, इस हेतु आभार स्वीकार करें। पत्रिका का यह अंक भी मुद्रण, संपादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से बेहद उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं। रचनाओं के मध्य भावों एवं अभिव्यक्तियों को दर्शाते हुए छायाचित्र, अत्यंत ही सार्थक, बेहद आकर्षक एवं विषयानुकूल हैं। पत्रिका के इस अंक में संकलित सभी रचनाएं अद्वितीय हैं। प्रकाशित रचनाओं में सुश्री मीना भारद्वाज का लेख 'भारत में महिला सशक्तिकरण' एवं श्री उदय शंकर दुबे की कहानी 'राजा का तर्कसंगत निर्णय', सुश्री सुमेधा अमर की कविता 'नया विहान' एवं श्री दया सागर की कविता 'नारी की महिमा' बेहद प्रशंसनीय है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कल्याण अधिकारी (राजभाषा कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक.)
राजस्थान, जयपुर

## पत्रिका का आवरण एवं साज–सज्जा अत्यंत आकर्षक है तथा समस्त रचनाएं प्रेरणास्पद, मनोरंजक एवं विविधतापूर्ण हैं।

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक के ई–संस्करण की प्रति इस कार्यालय में ई–मेल द्वारा प्राप्त की गई। पत्रिका का आवरण एवं साज–सज्जा अत्यंत आकर्षक है तथा समस्त रचनाएं प्रेरणास्पद, मनोरंजक एवं विविधतापूर्ण हैं। पत्रिका में 'राष्ट्रीय एकता में हिंदी की भूमिका' लेख द्वारा इस संदेश को बखूबी उजागर किया गया है कि विश्व की चौथी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में हिंदी ने सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरो रखा है। 'मानव जीवन के विकास में प्रेरक विचारों का योगदान' एवं 'कबीर वाणी' जैसे लेख जीवन को सार्थकता प्रदान करने के संदेश के परिचायक हैं, जीवन के कटु सत्यों को उजागर कर आपसी सौहार्द एवं मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि आधार मानने की विचारधारा अत्यंत महत्वपूर्ण

है। 'भारत में महिला सशक्तिकरण लेख वर्तमान परिदृश्य में सामाजिक वास्तविकता को उजागर कर यह मार्ग परिलक्षित करता है कि राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है जब समाज में अवसरों की समानता हों। पत्रिका में शामिल कहानी 'हरी सब्जी' द्वारा लेखक ने एक गरीब व असहाय परिवार की जिजीविषा एवं वेदना को मूर्त रूप प्रदान किया है, जीवन के अभावों से जूझती यह कहानी हृदय में शूल सी चुभन पैदा करती है। कहानी 'माँ तुझे सलाम' में मिसेस सत्यवती पूरे अभिभावकों की तरफ से उनके जीवन की विडंबना को एक आवाज देती प्रतीत होती है, जीवन भर कष्ट सहने के बाद बदले में मिली एकांकी रूपी निराशा हमें यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि हम कितनी सहजता से माता–पिता के बलिदानों को नजरअंदाज कर देते हैं। पत्रिका में शामिल कविताएं 'नारी की महिमा', 'कोई जरूरी तो नहीं', 'मेरी बूढ़ी नानी', 'कन्या भ्रूण हत्या' अत्यंत प्रभावशाली हैं तथा इनके अलावा 'दुआएं रंग लाएंगी' कविता एक नवजीवन सृजनात्मक शक्ति से परिपूर्ण है, 'धुआं' कविता प्रकृति के असंतुलन जनित विषम परिस्थितियों का चित्रण प्रस्तुत करती है साथ ही 'आज' कविता द्वारा जीवन की चिरकाल सौंधी विरासत सौंप कर जाने का संदेश बखूबी दिया गया है। पत्रिका विभाग के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी से जोड़ने तथा राजभाषा को बढ़ावा देने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है एवं ई–संस्करण की अवधारणा पर्यावरण संरक्षण के प्रति अनूठे एवं कलात्मक नवाचार के रूप में सफलतम सिद्ध हुई है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय,
हैदराबाद

## पेपरलैस की तरफ यह एक प्रशंसनीय प्रयास है।

ई–मेल द्वारा 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक का ई–संस्करण प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। रचनाओं के चयन की दृष्टि से यह अंक बहुत ही प्रशंसनीय है। ई–पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, रोचक एवं सुपाठ्य हैं। जहाँ 'राष्ट्रीय एकता में हिंदी की भूमिका', 'कोविड–19 के पश्चात भारत के पुनर्निर्माण पर सुझाव', युवाओं की महत्ता' एवं 'भारत में महिला सशक्तिकरण' आदि लेख समसामयिक एवं प्रासंगिक है, वहीं 'मानव के विकास में प्रेरक विचारों का योगदान', 'राजा का तर्कसंगत निर्णय' आदि रचनाएं प्रेरणास्पद हैं। 'दर्द का रिश्ता', 'नया विहान', 'नारी की महिमा' एवं 'श्रीनगर' आदि कविताएं हृदयस्पर्शी तथा भावनात्मक हैं। उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पेपरलैस की तरफ यह एक प्रशंसनीय प्रयास है। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

## कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कर्मियों ने अपनी सृजनशीलता से पत्रिका को सुसज्जित किया है वो अन्य कार्यालयों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है।

ई–पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवां अंक साभार प्राप्त हुआ। पत्रिका में संकलित रचनाएं लेखकों के रचना–संसार के विविध पहलुओं

पर प्रकाश डालने वाली है। यह विविधता न केवल विभिन्न कार्यक्रमों के छायाचित्र आकर्षक हैं तथा पत्रिका में संकलित रचनाओं की सादगी भी प्रशंसनीय है। कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कर्मियों ने जिस प्रकार अपनी सृजनशीलता से पत्रिका को सुसज्जित किया है वो अन्य कार्यालयों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है। हम मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा करते हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पुनः हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून

## पत्रिका की साज–सज्जा एवं प्रस्तुतीकरण आकर्षक है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की साज–सज्जा एवं प्रस्तुतीकरण आकर्षक है। श्री अनिल कुमार पिलानी की कविता 'मैं माँ को मानता हूँ' एवं श्री दया सागर की कविता 'नारी की महिमा' प्रशंसनीय हैं। सुश्री लिपिका दास की कहानी 'माँ तुझे सलाम' व श्री रामौतार प्रसाद की कहानी 'पुत्र की वेदना' हृदयस्पर्शी हैं। श्री आलोक कुमार 'अलक' का लेख 'हरी सब्जी' भी रोचक है। पत्रिका में समाहित अन्य सभी लेख व कविताएं भी सराहनीय हैं। आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

उप महालेखाकार (प्रशा.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
कर्नाटक, बेंगलूर

## पत्रिका विविध विषयों को समेटे हुए गागर में सागर के समान है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक की ई–संस्करण प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण हेतु सादर आभार। पत्रिका विविध विषयों को समेटे हुए गागर में सागर के समान है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं स्तरीय एवं सराहनीय हैं। सुश्री राजकुमारी शर्मा का लेख 'मानव जीवन के विकास में प्रेरक विचारों का योगदान', सुश्री मीना भारद्वाज का लेख 'भारत में महिला सशक्तिकरण', श्री प्रीतम चौधरी का लेख 'अभिव्यक्ति की आजादी', श्री उदय शंकर की कहानी 'राजा का तर्कसंगत निर्णय', सुश्री सुमेधा अमर की कविता 'नया विहान', सुश्री आस्था गुप्ता की कविता 'कन्या भ्रूण हत्या' एवं श्री केदार नाथ प्रसाद की कविता 'स्मृति–वितान' विशेष उल्लेखनीय है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.)–।।,
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

## राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

ई–मेल के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपको हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रूचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख

लिखे गए हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

## सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है।

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक की प्रतियां अग्रेषित करने हेतु हार्दिक धन्यवाद। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है। सभी रचनाएं पठनीय तथा ज्ञानप्रद है। विशेषकर सुश्री मीना भारद्वाज की 'महिला सशक्तिकरण', श्री गौरव हारिथ की 'रूप–विज्ञान', सुश्री रूप राशि की 'आज कल के लिए' तथा श्री कुमार शर्मा 'अनिल' की 'दर्द का रिश्ता' अति प्रभावी है। इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी को बधाईयां एवं शुभकामनाएं।

उप निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय,
लेखापरीक्षा भवन, चेन्नै

## पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं बौद्धिकता के स्तर पर अति उत्तम है।

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक के ई–संस्करण की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। समग्र पत्रिका साज–सज्जा के दृष्टिकोण से प्रशंसा के पात्र हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं बौद्धिकता के स्तर पर अति उत्तम हैं। श्री अनिल कुमार पिलानी द्वारा रचित कविता में 'मैं माँ को मानता हूँ', अत्यंत हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक है और इस कविता में वर्णित शब्दों द्वारा उकेरी गई भावनाओं से हर पाठकवर्ग स्वयं को जुड़ा महसूस करता है। श्री अभय राम सिंह द्वारा रचित 'कबीर वाणी : समरसता और दर्शन का प्रतीक' जाति, धर्म एवं विकृतियों की दीवारों को तोड़कर मानवीय मूल्यों के अप्रतिम प्रतीकों को उजागर करता है। आशा करता हूँ कि आपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' अपने नए विचारों से हमें अवगत कराती रहेगी एवं भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान देती रहेगी। 'लेखापरीक्षा प्रकाश' परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए गोमती पत्रिका परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (एएमजी–। एवं प्रशा.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
त्रिपुरा, अगरतला

## सभी रचनाएं रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं।

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ पैतीसवां अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। श्री यशवंत कुमार चौरसिया का 'कोविड–19 के पश्चात भारत के पुनर्निर्माण पर सुझाव', सुश्री सं.ग. श्रीमती का 'राष्ट्रीय एकता में हिंदी की भूमिका', सुश्री राजकुमारी शर्मा का 'मानव जीवन के विकास में प्रेरक विचारों का योगदान' तथा श्री अभय राम सिंह का 'कबीर वाणी' अति सहज भाषित, विचारशील, राष्ट्रहित एवं मानव जीवन की दिशा एवं दशा परिवर्तित करने वाले लेख हैं। इसके अतिरिक्त कुमार शर्मा 'अनिल' द्वारा 'दर्द का रिश्ता' कहानी अति मार्मिक तथा रूचिकर है। श्रीमती

शुभा कुमार की 'दुआएं रंग लाएंगी', सुश्री सुमेधा अमर की 'नया विहान' अति सराहनीय होने के साथ श्रृंगार रस से परिपूर्ण हैं तथा श्री दया सागर की 'नारी की महिमा', सुश्री आस्था गुप्ता की 'कन्या भ्रूण हत्या' नारी जगत की अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती हैं। सुश्री मंजीत शर्मा द्वारा रचित ग़ज़ल जिन्दगी को विभिन्न पहलुओं में परिभाषित करते हुए अलग ही छठा बिखेरती है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

## पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं अत्यंत प्रेरणाप्रद, सुपाठ्य, संग्रहणीय, उच्चकोटि की तथा ज्ञानप्रद हैं।

ई–मेल के माध्यम से 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ पैतीसवें अंक के प्रकाशित होने की सूचना प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं अत्यंत प्रेरणाप्रद, सुपाठ्य, संग्रहणीय, उच्चकोटि की तथा ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में से श्री यशवंत कुमार चौरसिया का लेख 'कोविड–19 के पश्चात भारत के पुनर्निर्माण पर सुझाव', सुश्री इला सिंह द्वारा रचित 'श्रीनगर', श्री गौरव हारिथ का आलेख 'रूप–विज्ञान', श्री करूणाकर साहू द्वारा रचित 'मृत्यु के करीब', सुश्री सुमेधा अमर की कविता 'नया विहान', श्री प्रीतम चौहान का लेख 'अभिव्यक्ति की आजादी', श्री अनिल कुमार पिलानी द्वारा रचित 'मैं माँ को मानता हूँ', सुश्री नीतू सिंह द्वारा रचित 'मेरी बूढ़ी नानी', सुश्री रूप राशि की कविता 'आज कल के लिए' आदि विशिष्ट रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

उप निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय,
कोलकाता

## राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को उचित मंच प्रदान करने के अभियान को 'लेखापरीक्षा प्रकाश' ने निरन्तर आगे बढ़ाया है।

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ पैतीसवें अंक का ई–संस्करण प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद एवं बधाई। पत्रिका का यह अंक हिंदी कार्यान्वयन और राजभाषा के प्रचार की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। इस अंक में विविध विषयों पर केन्द्रित ज्ञानवर्धक आलेखों के साथ स्तरीय कविता, कहानी को संकलित किया गया है। इस अंक में सम्मिलित 'राष्ट्रीय एकता में हिंदी की भूमिका', 'युवाओं का महत्व', कबीर वाणी : समरसता और दर्शन का प्रतीक', 'बहुआयामी पर्व : मकर संक्राति', 'रूप–विज्ञान' शीर्षक रचनाएं भाव और शिल्प की दृष्टि से अत्यंत सशक्त और पठनीय हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को उचित मंच प्रदान करने के अभियान को 'लेखापरीक्षा प्रकाश' ने निरन्तर आगे बढ़ाया है। इसका भविष्य और उज्ज्वल हो इसी कामना के साथ समस्त संपादकीय मंडल और पत्रिका परिवार को पुनः बधाई और शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

# देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका

**सुश्री अनामिका अंतिल**
**सहायक प्रशासन अधिकारी**
**भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक**
**का कार्यालय, नई दिल्ली**

भारत दुनिया में सबसे विविध संस्कृतियों वाला देश है। धर्म, परंपराओं और भाषा में इसकी विविधता के साथ, लोग एकता में विश्वास रखते हैं। हिंदी भारत की सबसे प्रमुख भाषा है। दुनिया में हिंदी भाषा चौथी सबसे अधिक बोली जाने भाषा है। भारत में विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं, लेकिन सबसे ज्यादा हिंदी भाषा बोली, लिखी व पढ़ी जाती है।

भाषा का हमारे जीवन में जो स्थान है, उससे हर कोई परिचित है. मानव जाति के लिए भाषा युग का सबसे बड़ा वरदान है. अपने अंतर्मन में उत्पन्न हुए विचारों को सबके समक्ष रखने हेतु भाषा एक उन्नत माध्यम प्रदान करती है। आदि काल से ही समय–समय पर नई–नई भाषाओं की शुरूआत हुई और देखते ही देखते यह भाषाएं मानवीय समाज का एक अभिन्न अंग बन गईं। इसमें भारतीय समाज के उत्थान की परिचायक हिंदी भाषा के योगदान को स्मरण करने का दिवस है। हिंदी ने कालांतर से ही न केवल अपने रूप को उन्नत किया, अपितु इस भाषा ने एक सभ्य, संबल और सार्थक भारतीय समाज के निर्माण में अपनी शत प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित की है।

वर्ष 1949 में हिंदी को हमारे देश में सर्वोच्च दर्जा प्राप्त हुआ और तब से हिंदी को हमारी राष्ट्रभाषा माना जाता है। हिन्दी भाषा को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में प्रयोग करने का फैसला भारत के संविधान में 26 जनवरी, 1950 से प्रभाव में आया है। भारतीय संविधान के अनुसार, देवनागिरी लिपि में लिखित हिन्दी भाषा को पहले भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में अनुच्छेद 343 के तहत अपनाया गया था, जिसके बाद हिन्दी भाषा जनसंवाद का माध्यम बनती चली गई और इसकी उपयोगिता लगातार बढ़ती चली गई। किसी भी भाषा को राजभाषा बनने के लिए उसमें सहजता और सुगमता का होना बेहद जरूरी है जब तक भाषा आसान नहीं होगी और सुनने–बोलने में अच्छी नहीं लगेगी तब तक लोग इसका प्रयोग करने से कतराएंगे हालांकि हिंदी भाषा बेहद आसान है और हर किसी को अपनी तरफ आकर्षित करती है। यही कारण है कि इसे भारत में राजभाषा का दर्जा दिया गया।

हिंदी राजभाषा ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक एकता का भी प्रतीक है। हिन्दी साहित्य के बड़े–बड़े

लेखक, कवि हुए जिन्होंने कई ऐसी रचनाएं की जो मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी है। इसके अलावा वे युवाओं में नए विचारों को जन्म देती हैं; उन्होंने हिन्दी भाषा को मुख्य धारा से जोड़ने की भी कोशिश की है।

जिस प्रकार से एक भवन की नींव नीचे से खड़ी की जाती है एवं नीचे की नींव को मजबूत किया जाता है और उस नींव पर पूरा भवन खड़ा रहता है उसी तरह से मनुष्य का जीवन साहित्य से मजबूत होता है। साहित्य के द्वारा मनुष्य के अनेक विकारों को दूर किया जा सकता है। लोगों के कल्याण के लिए साहित्य का निर्माण किया गया था। साहित्य को पढ़कर ही हम साहित्यकार की भावनाओं को जान सकते है। साहित्यकार हमेशा लोगों की भलाई के लिए साहित्य लिखते हैं।

हमारे जीवन में साहित्य का काफी महत्व है क्योंकि साहित्य ही मनुष्य की बुराई और अच्छाई का बोध कराता है। मानव जीवन के सभी अनुभव स्वयं नहीं लिये जा सकते। काफी कुछ दूसरों के बताये गये अनुभव से सीखना पड़ता है। ऐसा साहित्य के माध्यम से ही किया जाना संभव है। साहित्यिक रचनाएं लेख, कविताएं, कहानी, आत्मकथा आदि हमें दूसरो के अनुभवों से सीखने का अवसर देते हैं।

हर भारतीय अपनी भावनाओं को हिंदी के माध्यम से अच्छी तरह से उजागर कर सकते हैं। साथ ही हम हिंदी में संवाद करते हैं या अपनी बात दूसरे तक आसानी से पहुंचा देते हैं। इसके साथ ही, लोगों में आपस में जुड़ाव भी पैदा होता है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। यदि हिंदी साहित्य की बात की जाए तो इसने समाज को ज्ञान से सराबोर किया है। हर युग में साहित्यकारों के द्वारा हिंदी साहित्य लिखा जाता रहा है। हिंदी साहित्य की अनेक विधाएं होती हैं जैसे की खंडकाव्य, कहानी, महाकाव्य, नाटक आदि। इस साहित्य के माध्यम से ही हमें राजनीति साहित्य, विज्ञान साहित्य, इतिहास साहित्य, पत्र साहित्य आदि पढ़ने को मिलता रहा है। कहीं ना कहीं साहित्य ने मनुष्य जीवन को सरल बनाया है।

हिंदी हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। धार्मिक दृष्टिकोण से इस भाषा ने सदैव हमारी मूलभूत संस्कृति तथा मान्यताओं को संरक्षित रखने का प्रयास किया। हिंदी साहित्य जगत में गोस्वामी तुलसीदास जी, रहीमदास, आदि कुछ ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व रहें जिन्होंने भारत के प्राचीनतम इतिहास एवं धर्म से संबंधित मान्यताओं को लोगों तक बिना किसी संकोच के पहुंचाने का प्रयास किया। गोस्वामी जी रामाधारा काव्यों का सृजन कर, भक्ति परंपरा में क्रांति की नई लहर उत्पन्न की। धर्म तथा संस्कृति के संवाहक के रूप में यहां भी हिंदी ने एक उत्कृष्ट भूमिका निभाई है।

अनेक साहित्यकारों का मानना है कि साहित्य के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। मुंशी प्रेमचन्द्र जी का भी यही मानना था कि जीवन में साहित्य का बहुत बड़ा स्थान है। साहित्य से ही मनुष्य का जीवन खुशियों से भरता है। साहित्य से ही मनुष्य के जीवन में आनंद आता है। मुंशी प्रेमचन्द्र जी कहते थे कि साहित्य से ही मनुष्य अच्छा बोलता, सुनना सीखता है, अच्छी बातचीत करने के गुण साहित्य को पढ़कर ही मनुष्य के अंदर आते हैं। हिन्दी भाषा सदैव भारत की संस्कृति को भावी पीढ़ियों तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम रही है और भविष्य में भी यह एक सरल सहज स्वरूप में बनी रहेगी।

# स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका

**सुश्री पूनम रानी**
**कनिष्ठ हिंदी अनुवादक**
**भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक**
**का कार्यालय, नई दिल्ली**

हिंदी को एक प्रादेशिक भाषा की हैसियत से लेकर राष्ट्रभाषा के रूप में लोकप्रिय और सर्वमान्य बनने में और फिर भारत की राजभाषा बनने में कई शताब्दियां लगी हैं। राजभाषा के रूप में हिंदी को जो मान्यता दी गई उसमें स्वतंत्रता–संग्राम के हमारे राजनेताओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि हिंदी के विकास के लिए उन चिंतकों, मनीषियों और नेताओं ने अभूतपूर्व कार्य किया है जो अधिकतर हिंदीतर प्रदेश के थे। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार सर्वप्रथम बंगाल में ही उदित हुआ और प्रारम्भ से अन्त तक इसे वहां के मूर्धन्य नेताओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। पूरे देश के लिए एक राष्ट्रभाषा हिंदी की कल्पना करने वालों में सबसे अग्रणी हैं बंगाल के श्री केशवचंद्र सेन, जिन्होंने 1873 में अपने पत्र 'सुलभ समाचार' (बंगला) में लिखा "यदि भाषा एक न होने पर भारतवर्ष में एकता न हो तो उसका उपाय क्या है? समस्त भारतवर्ष में एक भाषा का प्रयोग करना इसका उपाय है। इस समय भारत में जितनी भी भाषाएं प्रचलित हैं, उनमें हिंदी भाषा प्रायः सर्वत्र प्रचलित है। इस हिंदी भाषा को यदि भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बनाया जाए तो अनायास ही (यह एकता) शीघ्र ही सम्पन्न हो सकती है।" इनके अलावा अन्य अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने प्रान्तीयता की भावना से ऊपर उठकर मुक्त कंठ से हिंदी का समर्थन किया, जिनकी हिंदी सेवा अविस्मरणीय रहेगी।

"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है जिसे मैं प्राप्त करके रहूंगा" का नारा देने वाले नेता बाल गंगाधर तिलक का स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में विशिष्ट स्थान है। भाषा के बारे में तिलक का विचार था कि हिंदी ही एकमात्र भाषा है जो राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिंदी का समर्थन करते हुए 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में उन्होंने लिखा था "यह आंदोलन उत्तर भारत में केवल एक सर्वमान्य लिपि के प्रचार के लिए नहीं है, यह तो उस आंदोलन का एक अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आंदोलन कहूंगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारत वर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है, क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है, अतएव यदि आप किसी राष्ट्र के लोगों को एक–दूसरे के निकट लाना चाहें तो सबके लिए समान भाषा से बढ़कर सशक्त अन्य कोई बल नहीं है।"

तिलक जहां हिंदी को राष्ट्रभाषा मानते थे वहां देवनागरी को हिंदी की लिपि मानते थे। तिलक ने राष्ट्रीय चेतना को प्रबल करने के लिए सन् 1903 में 'हिंदी केसरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ

किया और इस बात का परिचय दिया कि जन साधारण तक अपने विचारों को पहुंचाने के लिए केवल हिंदी ही एक सरल और सशक्त माध्यम है। साथ ही तिलक ने अंग्रेजी की बजाय हिंदी में भाषण देने की परम्परा आरंभ कर अन्य नेताओं के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

महात्मा गांधी भाषा के प्रश्न को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रश्नों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने प्रारंभ से हिंदी को स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। उनका अनुभव था कि "पराधीनता चाहे राजनीतिक क्षेत्र की हो अथवा भाषाई क्षेत्र की, दोनों ही एक दूसरे की पूरक और पीढ़ी–दर–पीढ़ी सदा परमुखापेक्षी बनाये रखने वाली है।" सन् 1917 में उन्होंने एक परिपत्र निकाल कर हिंदी सीखने के कार्य का सूत्रपात किया। गांधीजी की प्रेरणा से 1925 में कांग्रेस ने यह प्रस्ताव पास किया कि कांग्रेस का, कांग्रेस की महासमिति का और कार्यकारिणी समिति का कामकाज आमतौर पर हिन्दुस्तानी में चलाया जायेगा। इसी का परिणाम था कि सन् 1925 में अखिल भारतीय हिंदी सम्मेलन का अधिवेशन भरतपुर में हुआ जिसकी अध्यक्षता गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की और उन्होंने हिंदी में बोलकर हिंदी का प्रबल समर्थन किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विभिन्न राज्यों में हिंदी–प्रचार करने के लिए नेताओं को जहां प्रेरित किया वहीं लोगों के अलग–अलग जत्थे को राज्यों में भेजा। उन्होंने खुद अपने बेटे श्री देवदास गांधी को हिंदी–प्रचार के लिए भारत के दक्षिण में भेजा था। आज़ादी के इस मुहिम में इसे पुनीत कर्तव्य मानकर विभिन्न राज्यों में विभिन्न हिंदी–प्रचारक गए और वहां उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। राष्ट्रीय आंदोलन में शिरकत करते हुए राष्ट्रीय चेतना से युक्त हमारे ये हिंदी–प्रचारक आज़ादी में और आज़ादी के बाद भी लोगों को जागृत करते हुए उनके बीच हिंदी का प्रचार–प्रसार करते रहे।

गांधीजी के प्रयत्नों से तमिलनाडु में हिंदी के प्रति ऐसा उत्साह प्रवाहित हुआ कि प्रांत के सभी प्रभावशाली नेता हिंदी का समर्थन करने लगे। यह वह समय था जब चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसे नेता हिंदी के प्रचार को अपना भरपूर सहयोग दे रहे थे।

'पंजाब केसरी' के नाम से प्रसिद्ध लाला लाजपतराय एक महान देशभक्त शिक्षाशास्त्री ही नहीं, एक प्रभावकारी पत्रकार भी थे। पंजाब में हिंदी के प्रचार का पूरा श्रेय लालाजी को जाता है। जब उर्दू हिंदी का विवाद जोरों से चल रहा था, तब लालाजी ने हिंदी का बड़ा समर्थन किया और उन्हीं के प्रयत्न से पंजाब के शिक्षा क्षेत्र में हिंदी को स्थान मिला। उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जिनमें हिंदी का अध्ययन अनिवार्य बनाया गया। लालाजी की प्रेरणा से ही पंजाब विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में हिंदी को स्थान मिला।

भारत के स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी का बड़ा महत्व रहा। महात्मा गांधी गुजराती थे, सी. राजगोपालाचारी मद्रासी थे, राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर व देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय जैसे महान दार्शनिक व क्रांतिकारी बंगाली थे, ऐसे ही देश के अलग–अलग प्रांतों के क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता आंदोलन में खुद को खपा दिया। उन्होंने स्वाधीनता का संदेश देशभर में जन–जन तक पहुंचाने के लिए हिंदी को चुना।

भारत के स्वतंत्रता के आंदोलन में हिंदी कवियों की ओजस्वी उद्‌गारों तथा उनसे मिली प्रेरणा ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसे कतई विस्मृत नहीं किया जा सकता। आधुनिक खड़ी बोली हिंदी कविता के प्रवर्तक बाबू हरिश्चंद्र ने भारत दुर्दशा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है –

*अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।*
*पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।*
*सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई।*
*हा! हा! भारत दुर्दशा देखी ना जाई।।*

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अपनी राष्ट्रीय रचनाओं के कारण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय अत्यंत लोकप्रिय रहे। उनकी भारत–भारती सम्पूर्ण भारतवर्ष में गूंज उठी थी। उससे अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने विशेष प्रेरणा प्राप्त की।

पं. माखन लाल चतुर्वेदी की कविताओं ने भी स्वतंत्रता सेनानियों के हृदय में राष्ट्र प्रेम की भावना जाग्रत की। 'एक फूल की चाह' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियां –

*चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं*
*चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं*
*चाह नहीं सम्राटों के सर पर हे हरि! डाला जाऊं*
*चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं*
*मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर देना तुम फ़ेंक*
*मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ पर जावें वीर अनेक।*

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की झांसी की रानी, रचना का भी स्वाधीनता आंदोलन में विशिष्ट योगदान रहा है। इन कवियों के अतिरिक्त अनेक कवियों ने भी अपनी कविता के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका का निर्वाह किया है। इसमें बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रताप नारायण मिश्र आदि अनेक नाम है जिन लोगों ने अपनी कविताओं के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की अलख जगाने में अपना योगदान देते रहे।

कविवर रामधारी सिंह दिनकर भी कहां खामोश रहने वाले थे। मातृभूमि के लिए हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने वाले बहादुर वीरों व रणबांकुरों की शान में उन्होंने कहा –

*कमल आज उनकी जय बोल जला अस्थियां बारी–बारी*
*छिटकाई जिसने चिंगारी जो चढ़ गए पुण्य–वेदी पर*
*लिए बिना गर्दन का मोल*
*कलम आज उनकी जय बोल ...*

बिना अपनी भाषा या भाषाओं के कोई भी देश गूंगा है। फर्ज कीजिए भारत के हिंदी भाषी प्रदेशों में सब जगह अंग्रेजी फैल जाए, सब अंग्रेजी बोलते मिलें, गांव, कस्बे, शहर सब जगह केवल अंग्रेजी हो; तो यह देखकर क्या किसी भारत का आभास होगा। क्या इससे भारतीय संस्कृति का अहसास होगा। नहीं। इससे धीरे–धीरे भारतीयता और भारतीय संस्कृति के विलोपन का अहसास होगा। इसलिए, वर्तमान में, हिंदी के स्वाधीनता संग्राम में योगदान को याद करते हुए हमें इसे एक स्वतंत्रता सेनानी की तरह सम्मान देना चाहिए।

# मातृभाषा की जीवंतता : मूक और बधिर के संदर्भ में

**अभय राम सिंह**
**ग्राम मोहम्मदपुर,**
**पोस्ट मरहट (खुटहन)**
**जिला जौनपुर (उत्तर प्रदेश)**

हिंदी भूषण शिव पूजन सहाय ने लिखा है – "राष्ट्र की जनता ही राष्ट्र की आत्मा है और राष्ट्र की भाषा ही राष्ट्र की वाणी है और राष्ट्र की भाषा ही राष्ट्र की संस्कृति की रीढ़ है।" उन्होंने राष्ट्रीय चेतना के उद्‌बोधन के लिए संस्कृत, हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं को एक साथ लेकर चलने की वकालत की थी। मातृभाषा एक मधु रस है। छांदोग्य उपनिषद् में उल्लिखित है, "सभी प्राणियों का रस पृथ्वी है। पृथ्वी का रस जल है। जल का रस वनस्पतियां हैं। इनका रस मनुष्य है। मनुष्य का रस वाणी है। वाणी का रस ऋग्वेद के मंत्र हैं। इनका रस साम गान है।" चिरकाल से ही भाषा विचारों और भावों के अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। यह समाज की आत्मा और मानवीय अस्तित्व को एक सूत्र में पिरोने वाला धागा है। इसीलिए महाकवि कालीदास ने अपनी कालजयी काव्य कृति 'रघुवंशम' का आरंभ ही भगवान शिव और माता पार्वती से उन्हें शब्द और उनके अर्थ समझने की शक्ति प्रदान करने के निवेदन से जुड़ी स्तुति के साथ किया है –

*वागर्थविवा संप्रक्तौ, वागर्थ प्रतिपत्तए,*
*जगतः पितरौ वन्दे, पार्वती परमेश्वरौ।*

यहाँ कवि ने वाक और अर्थ का संदर्भ एक अटूट रिश्ते के रूप में दर्शाया है। भारतीय संस्कृति में वाक परम्परा वाग्देवी सरस्वती के प्रतीक के रूप में सदियों से विद्यमान है। भाषा हमारे आस–पास के जीवन की वास्तविकताओं और सांस्कृतिक परिवेश का प्रतिनिधित्व करती हैं। वस्तुतः भाषा किसी व्यक्ति की सामूहिक चेतना और संस्कृति की द्योतक है। हाल ही में ब्रिटेन स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग के शोधकर्ता प्रो. माइकल डालर ने ब्रिटेन में रहने वाले 7 से 11 वर्ष के 100 तुर्की मूल के बच्चों पर अध्ययन करने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला है कि जो बच्चे घर में अपनी मातृभाषा में बात करते हैं वे अधिक मेधावी होते हैं।

वीर अभिमन्यु की कथा हम सभी जानते हैं। जब वे माता सुभद्रा के गर्भ में थे तब अर्जुन सुभद्रा से चक्रव्यूह में प्रवेश की तकनीक के बारे में बता रहे थे। इसके उपरान्त माता सुभद्रा को नींद आ गई जिस कारण चक्रव्यूह से बाहर निकलने की तकनीक पर वार्ता नहीं हो पाई। फलस्वरूप अभिमन्यु चक्रव्यूह में प्रवेश तो कर गए लेकिन उसमें से निकल नहीं पाए। अन्ततः उन्हें वीरगति को प्राप्त होना पड़ा। यह कथा इस बात की द्योतक है कि मातृभाषा की जड़ें बहुत मजबूत होती हैं

जिसके माध्यम से हमारे व्यक्तित्व में निखार आता है। इसी तथ्य को इंगित करते हुए प्रसून जोशी ने अपनी एक कविता में निम्नवत् परिलक्षित किया है –

*उखड़े उखड़े क्यों हो वृक्ष, सूख जाओगे।*
*जितनी गहरी जड़ें तुम्हारी, उतने ही तुम हरिआओगे।*

एक अध्ययन के अनुसार भारत में लगभग 780 भाषाओं का अस्तित्व है जो 839 भाषाओं वाले पापुग्या न्यूगिनी के बाद विश्व का सबसे अधिक भाषाओं वाला देश बन गया है। विभिन्न अध्ययनों से यह बात स्पष्ट है कि यदि बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाये तो अति उत्तम परिणाम पाए जाते हैं। जापान, स्वीडन, चीन और फ्रांस जैसे अधिकतर देशों में प्राथमिक और उच्च शिक्षा उनकी मातृभाषाओं में ही प्रदान की जाती है। वस्तुतः अध्ययन, आत्मसम्मान और स्वाभिमान का स्तर सुधारने में मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना अति आवश्यक है जो विकास के सर्वप्रमुख पहलुओं में चिन्हित हैं। वरिष्ठ साहित्यकार जवरीमल्ल पारख के अनुसार बोल–चाल की भाषा स्वाभाविकता लाती है।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 सूचीबद्ध भाषाएँ हैं जो इस प्रकार हैं – असमी, बांग्ला, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकड़ी, मैथिली, मलयालम, मैतेई (मणिपुरी), मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगू और उर्दू। इसके अतिरिक्त देश में 100 गैर सूचीबद्ध भाषाएँ भी हैं जिन्हें लोग बड़े पैमाने पर बोलते और लिखते पढ़ते हैं। इन्हें कम से कम एक लाख या उससे अधिक लोग बोलते हैं। इनके अतिरिक्त देश में 31 अन्य भाषाएँ भी हैं जिन्हें विभिन्न राज्य सरकारों और केन्द्र प्रशासित राज्यों ने आधिकारिक भाषा की मान्यता दी हुई है। जनगणना के आँकड़ों के अतिरिक्त देश में 1635 भाषाएँ तार्किक रूप से मातृभाषाएँ हैं। इसके अतिरिक्त 234 अन्य मातृभाषाओं की भी पहचान की गई है। अंडमान–निकोबार की 11 मातृभाषाओं को 10 हजार से कम लोग ही बोलते हैं। उत्तराखण्ड की बंगानी, झारखण्ड की बिरछोर, महाराष्ट्र की निहाली, मेघालय की रूगा और पश्चिम बंगाल की टोटो मातृभाषाएँ विलुप्त होने की कगार पर हैं। अंडमान–निकोबार की 11 भाषाओं को दस हजार से भी कम लोग बोलते हैं। विश्व की बोली जाने वाली सात भाषाओं – अका, जेडेक, आइसलैंडिक, मार्शलीज, विंटू, टोफा और एल्फादालिया के विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। वस्तुतः इन विलुप्त होती मातृभाषाओं के संवर्द्धन और संरक्षण की महती आवश्यकता है।

महाकवि सूरदास जन्मान्ध थे जिन्होंने अपने भावुक पद में उकेरा है –

*अविगत गति कछु कहत न आवै।*
*ज्यों गूँगे मीठे फल को रस अन्तर्गत् ही भावै।*

यहाँ ईष्ट देव के भावनात्मक आभास की तुलना गूँगे व्यक्ति के मीठे फल के रस के अव्यक्त भाव से की गई है। सूरदास जन्मान्ध होते हुए भी भाषा के समुचित ज्ञान से परिचित थे जिस कारण उन्होंने ईष्ट देव की आराधना में अनगिनत पद प्रस्तुत किए। भाषा का ज्ञान न होने के कारण एक गूँगा और बहरा व्यक्ति समाज में अपमान से ही गुजरता है। उसकी यही नियति सदा ही बनी रहती है। हाथ या पैर के दिव्यांगों द्वारा वैज्ञानिक शोध की झलक तो दिखती है परन्तु मूक और बधिर भाषा का ज्ञान न हो पाने के कारण समाज में सदा उपेक्षित रहता है। मुम्बई के वरिष्ठ मनोचिकित्सक डॉ. भरत बटवानी जिन्हें वर्ष 2018 के रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, ने अपने एक साक्षात्कार में कहा है – "हर व्यक्ति प्रेम का भूखा है।

उससे सुनने वाला कोई नहीं मिलता, सब अपनी सुना रहे हैं। जब संयुक्त परिवार की व्यवस्था थी तब लोग खुशी या गम आपस में बाँट लेते थे, लेकिन अब व्यक्ति का जीवन खुद में सिकुड़ गया है।" संत कबीर ने ठीक ही कहा है – 'प्रेम न वाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।' संयुक्त परिवार की महत्ता को स्वीकारते हुए ठीक ही उकेरा है –

*देखना साथ ही छूटे न बुजुर्गों का कभी*
*पत्ते पेड़ों पर ही लगे हों तो हरे रहते हैं।*

निश्चय ही संयुक्त परिवार के विघटन से मूक एवं बधिर दिव्यांगों की दशा और भी दयनीय हो गई है। ऐसे दिव्यांग शब्द और उसके अर्थ को नहीं समझ पाते हैं तथा वाणी विहीन होने के कारण वे विवेक शून्य हो जाते हैं। फलस्वरूप ऐसे दिव्यांगों को ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती है। ऋग्वेद का सूक्त है "तरणिरित सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा" अर्थात् ज्ञान युक्त पुरुषार्थी ही अभीष्ट को पा सकता है। भारतीय समाज से यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि वह इस श्रेणी के दिव्यांग जनों के जीवन में समरसता लाने के लिए एक अलग प्रकार की व्यवस्था सुनिश्चित करे। आज तेलुगू कवि गुरजादा अप्पा राव की निम्न पंक्तियों के अनुरूप एक दृढ़ निश्चय एवं संकल्प की आवश्यकता है –

*मेरे मित्र बहुत बातें हो चुकी हैं,*
*कुछ ठोस काम किया जाये।*

अतः समाज से उनके प्रति भावनात्मक सहानुभूति और संवेदना की सदा अपेक्षा की जाती है क्योंकि कोई भी दिव्यांगता प्रकृति–प्रदत्त होती है। हरिवंश राय बच्चन की निम्न पंक्तियों के अनुरूप हमें उजड़े हुए पर दीप प्रज्वलित करने की प्रबल भावनात्मक इच्छा शक्ति दर्शानी ही होगी –

*जो बसे हैं वे उजड़ते हैं, प्रकृति के जड़ नियम से*
*पर किसी उजड़े हुए को, फिर बसाना कब मना है*
*है अँधेरी रात पर दीया जलाना कब मना है।*

# लेखापरीक्षा का बढ़ता महत्व

**उदय प्रताप सिंह**
**सहायक निदेशक (राजभाषा)**
**कृषि एवं किसान कल्याण विभाग,**
**कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय,**
**भारत सरकार, नई दिल्ली–110012**

## लेखापरीक्षा

हम जानते हैं कि लेखापरीक्षा का महत्व दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। आज सभी क्षेत्रों में लेखापरीक्षा की आवश्यकता महसूस की जा रही है। सरकारी कार्यालय, संस्थाएं, बैंक, कंपनियाँ, वित्तपोषित संस्थान आदि में तो लेखापरीक्षा का अपना महत्व है ही, इन सबके अतिरिक्त नये–नये क्षेत्रों में जैसे बड़े–बड़े मंदिरों, न्यासों (ट्रस्टों) व अन्य धार्मिक संस्थानों की भी लेखापरीक्षा होने लगी है और जिनकी अभी तक नहीं हो रही है उनकी भी कराए जाने की मांग प्रबल होती जा रही है। धीरे–धीरे लगभग सभी क्षेत्रों में लेखापरीक्षा अनिवार्य होती जा रही है। इसके बावजूद भी सामान्य लोगों को लेखापरीक्षा के बारे में अधिक जानकारी नहीं होती है। लेखापरीक्षा के महत्व को समझने से पहले हमें यह समझना होगा कि आखिर लेखापरीक्षा है क्या? और इसकी आवश्यकता क्यों है, लेखापरीक्षा के पीछे क्या कारण है, जब हम यह समझ जाएंगे तभी हमें लेखापरीक्षा का महत्व सही से समझ में आएगा। यदि हम थोड़ा सा चिंतन करें कि पहली बार लेखापरीक्षा का विचार जिस किसी के भी मन में आया होगा तो उसके पीछे क्या कारण रहे होंगे तो फिर हमें लेखापरीक्षा को समझने में बहुत आसानी हो जाएगी और साथ ही लेखापरीक्षा में हमारी रूचि भी बढ़ेगी तथा लेखापरीक्षा करने में हमें गर्वानुभूति भी होगी।

## लेखापरीक्षा का अर्थ

लेखापरीक्षा अपने आप में एक स्वपरिभाषित एवं परिपूर्ण शब्द है जो दो शब्दों लेखा और परीक्षा के संयोग से बना है, जिसका अर्थ है लेखा का परीक्षण, यदि सरल शब्दों में कहा जाए तो लेखापरीक्षा का अर्थ होता है लिखे हुए का परीक्षण करना या जाँच करना। लेखापरीक्षा में पहले लेखा क्या है? यह पूरी तरह से स्पष्ट हो जाना चाहिए तभी लेखापरीक्षा शब्द का सही व संपूर्ण अर्थ समझ में आएगा। लेखा से तात्पर्य उस लिखा पढ़ी से होता है जो फाइलों व रजिस्टरों में की जाती है, इसे थोड़ा और स्पष्ट समझना आवश्यक है हम इसे इस प्रकार आसानी से समझ सकते हैं कि – "सरकारी या सरकार द्वारा वित्तपोषित संस्थाओं के कर्मचारियों द्वारा सरकार की नीतियों को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक सार्वजनिक धन को व्यय करते समय फाइलों व रजिस्टरों में जो लेखांकन या लिखा–पढ़ी की जाती है वह लेखा कहलाती है।" सरकार की नीतियों के क्रियान्वयन में सरकारी कार्यालय, संस्थाएं, बैंक, कंपनियाँ, वित्तपोषित संस्थान के अतिरिक्त बड़े–बड़े मंदिरों, न्यासों (ट्रस्टों) व अन्य धार्मिक संस्थानों आदि में उनके विधिवत संचालन

के लिए जो भी लिखित काम–काज या गतिविधियाँ होती हैं तथा अभिलेख संरक्षण हेतु जो भी लिखा पढ़ी होती है, वे सभी लेखा की परिधि में आती हैं। इसी लेखा की जाँच या परीक्षण करना लेखापरीक्षण अर्थात् लेखापरीक्षा कहलाता है।

## लेखापरीक्षा के कारण

अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर उस लेखा के परीक्षण या जाँच का क्या कारण है, हो सकता है जिसका लेखांकन सरकार के ही कर्मचारियों द्वारा किया जाता है? जैसा कि हम सब जानते हैं कि हमें जाँच करने की जरूरत वहाँ महसूस होती है जहाँ हमें किसी प्रकार का कोई संदेह होता है। संदेह का अर्थ हमें यहाँ नकारात्मक नहीं लेना चाहिए। नकारात्मकता विषय को बोझिल बना देती है। सरकार द्वारा निर्धारित की गई नीतियों में उल्लिखित नियमों व विनियमों का विधिवत अनुपालन न करते हुए जब लोग लोभ, लालच में या अन्य किन्हीं कारणों के प्रभाव में आकर अपनी मनमानी करने लगते हैं तो संदेह उत्पन्न होता है, यही संदेह जाँच या परीक्षण को जन्म देता है। जहाँ संदेह होता है वहाँ जाँच की आवश्यकता पड़ती ही है। संदेह दूर किया जाना जरूरी होता है। हालांकि केवल संदेह मात्र लेखापरीक्षा का कारण नहीं है। लेखापरीक्षा के कई कारण हैं जिसमें प्रमुख कारण है नियमों का विधिवत अनुपालन कराना। हालांकि इस जाँच या परीक्षण से न तो भविष्य में संदेह उत्पन्न होना बंद होते हैं और न ही जाँच या परीक्षण होना बंद हो जाते हैं। दोनों साथ–साथ चलते रहते हैं। जाँच या परीक्षण संदेह दूर करने का एक तात्कालिक उपाय मात्र हैं।

## लेखापरीक्षा की आवश्यकता

लेखापरीक्षा की आवश्यकता क्यों होती है? इस प्रश्न का उत्तर इतना भी सरल नहीं है कि यह कह कर पल्ला झाड़ लिया जाए कि संदेह

दूर करने के लिए या पारदर्शिता लाने के लिए लेखापरीक्षा की आवश्यकता होती है, क्योंकि पारदर्शिता एक दुरूह शब्द है, दूसरा यह कि हम सब यह भी जानते हैं जिस कार्य से संबंधित लेखा की जाँच या लेखापरीक्षा की जाती है वह काम पहले ही पूरा हो चुका होता है, अतः उस काम में पारदर्शिता अब आने से रही और लाना भी संभव नहीं है, क्योंकि वह काम तो पहले ही पूरा हो चुका है। इसलिए यह जवाब अधूरा है, पर्याप्त भी नहीं है, संतोषप्रद तो बिल्कुल भी नहीं है। किसी सरकारी तंत्र में लेखापरीक्षा की आवश्यकता उस तंत्र को विधिवत चलाने की आधारशिला के रूप में मानी जाती है। लेखापरीक्षा की आवश्यकता इसलिए पड़ती है ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों का कार्यान्वयन करने या कराने में आवश्यक सार्वजनिक धन को व्यय करने के दौरान निर्धारित नियमों का विधिवत अनुपालन किया गया है या नहीं। मुख्य रूप से नियमों का अनुपालन हुआ या नहीं, नहीं हुआ तो क्यों नहीं हुआ बस यही पता लगाने के लिए लेखापरीक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

## लेखापरीक्षा के उद्देश्य

यदि यह कहा जाए कि आम जनमानस में लेखापरीक्षा के उद्देश्य के बारे में जो स्पष्टता होनी चाहिए उसका अभाव है तो यह गलत नहीं होगा। लेखापरीक्षा का उद्देश्य जाँच करना मात्र नहीं है इसका उद्देश्य सुचिता लाना है, सुचिता वह पवित्रता है जो जीवन में परमावश्यक है। यह किसी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है एवं इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। लेखापरीक्षा के उद्देश्य नकारात्मक नहीं हो सकते हैं। लेखापरीक्षण जाँच करना और कमियाँ निकालना या त्रुटियाँ चिन्हित करना मात्र नहीं है। लेखापरीक्षा का मुख्य उद्देश्य निर्धारित नियमों का विधिवत अनुपालन सुनिश्चित करना और कराना है। यदि निर्धारित नियमों का विधिवत अनुपालन नहीं किया गया है तो उसके क्या कारण है? कहीं नियमों का विधिवत अनुपालन करने में किसी स्तर पर चूक तो नहीं हुई है, कहीं कोई वित्तीय अनियमितता तो नहीं हुई है, और यदि हुई है, तो उसके क्या कारण है? उन कारणों का पता लगाना, पता लगा कर अपने वरिष्ठ अधिकारियों को प्रमाण सहित निर्धारित प्रारूप में प्रस्तुत करना, ताकि इस संबंध में संबंधित विभाग को उचित माध्यम से सूचित किया जा सके। उपचारात्मक उचित कार्रवाई हेतु आवश्यक कदम उठाए जा सकें और साथ ही भविष्य में ऐसी त्रुटियाँ पुनः न दोहराई जाएं, उसके लिए उचित अनुदेश जारी किए जा सके।

गुणवत्तापूर्ण लेखापरीक्षा के लिए लेखापरीक्षक में सूक्ष्म, बारीक एवं पारखी नज़र का होना आवश्यक है। यह गुण सामान्यता प्रशिक्षण से प्राप्त करना कठिन है। लेखापरीक्षा का एक दूसरा स्याह पहलू भी है नियमों की जानकारी होते हुए भी कभी–कभी अपनी मनमानी करने के लिए या अपने लोभ व लालच के वशीभूत होकर जब लोग नियमों का खुलेआम उल्लंघन करते हैं तो उस रूप में निर्धारित उचित कठोर कार्रवाई करना आवश्यक हो जाता है, और की भी जाती है ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

## लेखापरीक्षा का महत्व

यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि किसी तंत्र या व्यवस्था में जब निर्धारित नियमों का अनुपालन नहीं किया जाता है तो मजबूत से मजबूत तंत्र या व्यवस्थाओं के बिखरने में समय नहीं लगता है।

समय के साथ लेखापरीक्षा का महत्व और भी बढ़ा है और हर एक क्षेत्र में बढ़ा है। इसके कई कारण है जिसके लिए हमें समाज के कई संवेदनशील पहलुओं को टटोलना होगा, साथ ही मनुष्य के नैसर्गिक गुणों व अवगुणों का गहराई में जाकर चिंतन भी करना पड़ेगा। लेखापरीक्षा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सूक्ष्म स्तर पर जीवनपर्यंत निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है और किसी न किसी रूप में चलती ही रहती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पारदर्शिता एवं मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। इससे हमारा जीवन प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में प्रभावित होता है। जो लोग चिंतन व आत्मावलोकन करते हैं वे जीवन के इस पहलू से विधिवत परिचित होते हैं।

यह एक चिंतन का विषय है कि क्या कहीं ऐसा तो नहीं है कि नियमों का उल्लंघन बढ़ रहा है, और निरंतर बढ़ रहा है जिसके कारण लेखापरीक्षा की मांग बढ़ी है और साथ में उसका महत्व भी बढ़ा है, तेजी से बढ़ा है, या फिर पानी सर के ऊपर हो चुका है और अब समय आ गया है कि सभी क्षेत्रों में पारदर्शिता बढ़ाए जाने की आवश्यकता महसूस होने लगी है।

खैर यह पाठकों पर ही छोड़ देना उचित होगा। न सिर्फ सरकारी तंत्र में बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुचिता बढ़े, ईमानदारी बढ़े, जवाबदेही बढ़े, एवं पारदर्शिता बढ़े और इसलिए आज प्रत्येक क्षेत्र में लेखापरीक्षा के महत्व को महसूस किया जा रहा है और यह अत्यंत आवश्यक भी है, समय की मांग है क्योंकि सुचिता, ईमानदारी, जवाबदेही, पारदर्शिता, कर्मठता एवं कर्तव्यपरायणता को बढ़ाए बिना हम एक सशक्त एवं खुशहाल समाज व उज्ज्वल भविष्य की कल्पना नहीं कर सकते हैं।

# राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान

**सुश्री मीना भारद्वाज**
**सहायक लेखा अधिकारी**
**कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)**
**हरियाणा, चण्डीगढ़**

भारत एक प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्र है। देश के उज्ज्वल भविष्य का एकमात्र आशा–केन्द्र आज के युवाओं पर निर्भर है। इतने बड़े उत्तरदायित्व को संभालने वाले युवाओं का सशक्त, सबल और शिक्षित होना नितांत आवश्यक है। किसी भी देश के युवा वर्ग में शक्ति का अथाह सागर होता है। वे उत्साह का अदम्य स्रोत होते हैं। नवभारत के निर्माता वे युवा हैं जो आज स्कूलों और कॉलेजों में अपने भावी जीवन की नींव रख रहे हैं। देश के विकास के लिए उनकी शक्ति का सर्जनात्मक रूप में उपयोग किया जाना आवश्यक है।

देश के भावी कर्णधार युवाओं के योगदान की चर्चा निम्नलिखित बिन्दुओं के अंतर्गत की जा सकती है –

**सही शिक्षा प्राप्त करना एवं उसका सही दिशा में उपयोग करना :** हर युवा का सबसे पहला कर्तव्य होता है, वो अपनी उचित शिक्षा पूर्ण रूप से पूरी करे। शिक्षा ही व्यक्ति को योग्य बनाती है और एक नए जीवन को आकार देती है। शिक्षा मनुष्य को हर एक कर्तव्य का ज्ञान दिलाती है। जो मनुष्य उचित शिक्षा प्राप्त करेगा वो अपने परिवार, समाज और देश की सेवा करेगा। इसलिए राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा यह सबसे प्रथम कर्तव्य है। शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत उसका सही दिशा में उपयोग करना भी नितांत आवश्यक है। अनुसंधान के क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त युवा अनुसंधान के द्वार खोल सकते हैं। इसी प्रकार चिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षित युवा औषधी तथा सर्जरी एवं इंजीनियरिंग में शिक्षा प्राप्त युवा कल–कारखानों और पुर्जों आदि के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं।

**चरित्र निर्माण :** किसी भी युवा के महत्वपूर्ण कर्तव्यों में विद्या प्राप्ति, शारीरिक मानसिक तथा बौद्धिक शक्तियों का विकास और चरित्र निर्माण शामिल होता है। अच्छे चरित्र निर्माण के लिए सुयोग्य मार्गदर्शकों की आवश्यकता होती है। इसमें शिक्षकों तथा अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। युवाओं के अच्छे चरित्र के निर्माण के पश्चात ही समाज, देश तथा राष्ट्र का कल्याण संभव है। युवा जोश का उपयोग सही दिशा में समाज तथा देश की उन्नति के लिए किया जाना चाहिए।

**कर्तव्य पालन :** राष्ट्र निर्माण के लिए युवाओं में कर्तव्य परायणता

की भावना का विकसित होना आवश्यक है। उनको अपना कर्तव्य सशक्तता व सबलता से निभाना चाहिए और स्वयं सचेत रहते हुए सजगता का वातावरण उत्पन्न करना चाहिए ताकि वे औरों के लिए प्रेरणास्रोत बन सकें। अपने सम–सामयिक परिवेश के प्रति सजग और सचेत रहकर ही युवा राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।

यह देखा गया है कि आज के युवा वर्ग में असंतोष की भावना विकसित हो रही है। यह एक विचारणीय प्रश्न है। युवाओं में असंतोष के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं –

**आधुनिक शिक्षा प्रणाली का दोषयुक्त होना** : आज की शिक्षा–प्रणाली से युवाओं का बौद्धिक विकास नहीं होता तथा यह उनको व्यावहारिक ज्ञान नहीं कराती; जो देश में शिक्षित युवा बेरोजगारों की संख्या के बढ़ने का एक कारण है। जब युवा को यह पता ही है कि अन्नतः उसे बेरोजगार ही भटकना है तो वह अपने अध्ययन के प्रति लापरवाही प्रदर्शित करने लगता है।

**असामाजिक तथा स्वार्थी तत्वों का प्रभाव** : कुछ स्वार्थी तथा अवसरवादी तत्व अपने स्वार्थों के लिए युवाओं का प्रयोग करते हैं। इस असामाजिक तत्वों के प्रभाव के कारण भी उनमें असंतोष पनपता है। कुछ युवा निरुद्यमी तथा आलसी हो जाते हैं। उन्हें न तो अपने भविष्य की चिंता होती है और न ही समाज, देश के प्रति वे सजग रहते हैं। इस प्रकार स्वार्थी तत्वों के गलत हाथों में पड़कर युवा अपनी शक्ति का प्रयोग गलत कार्यों के प्रति करते हैं जैसे देश की संपत्ति को नुकसान पहुंचाना, अन्य समाज विरोधी कार्य करना जिससे न केवल युवा अपना नुकसान करते हैं अपितु वे समाज तथा राष्ट्र के लिए भी बहुत बड़ी चुनौती बन जाते हैं। इस प्रकार की चुनौतियों अथवा समस्याओं से निपटना आसान नहीं होता तथा ये भविष्य के लिए बहुत बड़े खतरे और संकट के सूचक होते हैं।

**अन्य सामाजिक कुरीतियाँ** : कई बार युवा कुसंगति का शिकार हो जाते हैं। यदि समय पर उन्हें सही मार्गदर्शन प्रदान न किया जाए तो वे कई बुरी लतों में पड़ जाते हैं। इन बुरी आदतों में जुआ खेलना, शराब का सेवन करना, चोरी–लूटपाट करना, नशीले–मादक पदार्थों जैसे अफीम, गाँजा, चरस आदि का सेवन शामिल है। इन दुर्व्यसनों में पड़कर उन्हें इस बात का जरा भी ख्याल नहीं रहता कि उनके द्वारा चुना गया रास्ता उन्हें अवनति की ओर ले जा रहा है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि युवाओं की शक्ति का उपयोग सृजनात्मक कार्यों में किया जाना चाहिए जिससे समाज तथा देश की कायापलट हो सकती है। उनका सही समय पर सही दिशा की ओर अग्रसर होना अत्यंत आवश्यक है। बाल्यकाल में अच्छे संस्कारों की नींव वाले युवा जीवनपर्यंत सकारात्मक सोच के साथ अच्छी दिशा में कार्यरत रहते हैं जो न केवल अपनी, अपने समाज की, अपने देश की उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं बल्कि भावी युवाओं के भी पथप्रदर्शक बनते हैं। किसी भी राष्ट्र के निर्माण के लिए उसके युवाओं की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक शक्तियों के विकास के साथ–साथ उनके अच्छे चरित्र का निर्माण भी अत्यंत आवश्यक है।

# अभिव्यक्ति एवं संवाद का सशक्त माध्यम–भाषा

**विनोद कुमार शर्मा**
**वरिष्ठ लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)**
**13, स्वास्तिक प्लाजा**
**पी.ओ. बंजारावाला,**
**देहरादून–248001**

यह निर्विवाद रूप में सत्य है कि किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा एवं संस्कृति से होती है। किसी भी देश का अपनी भाषा को छोड़कर अन्य देश की भाषा पर निर्भर होना संबंधित राष्ट्र की सांस्कृतिक दासता का परिचायक है। ऐसे राष्ट्र जिनकी अपनी कोई भाषा नहीं होती, वे विकास की दौड़ में भी पिछड़ जाते हैं। राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक सद्भाव के लिए भी अपनी भाषा का होना नितान्त आवश्यक है। भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति एवं समाज अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है तथा एक दूसरे के समीप आता है। भाषा जितना विस्तार करेगी एवं समृद्ध होगी, समाज भी उतना ही सशक्त एवं संगठित होगा। अर्थात किसी भी समाज को एक सूत्र में बांधने का माध्यम भाषा ही होती है। सशक्त भाषा के अभाव में हम किसी समाज की एकता की कल्पना भी नहीं कर सकते। अगर हम किसी संदेश को जन–जन तक तथा जमीनी स्तर पर पहुंचाना चाहते हैं, तो उसका माध्यम भाषा ही है। भाषा जितनी प्रभावी होगी, हमारा संदेश भी उतना ही बेहतर तरीके से क्रियान्वित हो पाएगा।

भारत में अनेकों भाषाएं बोली एवं लिखी जाती हैं, लेकिन इससे कोई इंकार नहीं कर सकता कि हमारे देश के बहुसंख्यकों की भाषा हिंदी है। इसके साथ ही विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा भी हिंदी ही है। हिंदी सरल है, सुबोध है तथा हमारे देश की समस्त क्षेत्रीय भाषाओं को साथ लेकर चलती है तथा किसी भी स्थानीय भाषा से उसका कोई विरोध नहीं है। अन्य भाषाओं के शब्दों से भी वह कोई भेदभाव न करके, उन्हें खुले दिल से स्वीकार करती है। हिंदी भारत की सभी भाषाओं की सखी है तथा सह–अस्तित्व के सिद्धांत पर आगे बढ़ती है। हिंदी में अंग्रेजी के साथ ही साथ उर्दू, अरबी, फारसी एवं अन्य भाषाओं के शब्द व्यवहार में हैं तथा परिस्थितियों के अनुसार आवश्यकतानुसार उपयोग में लाये जाते हैं।

अपनी भाषा में वार्तालाप एवं अपनी भावनाओं की अभिवयक्ति हम प्रभावी तरीके से कर सकते हैं। यह आवश्यक है कि हम बोलचाल की

भाषा का प्रयोग करें। ऐसा सोचना गलत है कि यदि ज्ञान को अंग्रेजी में अभिव्यक्त किया जाए तो वह ज्यादा प्रभावी एवं महत्वपूर्ण होगा। सच यह है कि अपनी भावनाओं का श्रेष्ठ प्रदर्शन अपनी मातृभाषा में ही हो सकता है। इसके लिए हमें अपनी मातृभाषा पर भरोसा होना आवश्यक है। हम जिस भाषा में सोचते हैं, अगर उसी में ही अपनी भावनाओं को भी अभिव्यक्त करें तो निश्चित रूप से अधिक प्रभावी होगा। जो प्रस्तुतिकरण, प्रदर्शन एवं उद्घोषणा हम अपनी भाषा में प्रभावी रूप से कर सकते हैं, वह अन्य किसी भाषा में नहीं। अपनी भाषा में बोलने या लिखने में हमें हिचकने या स्वयं का मूल्यांकन कमतर करने की आवश्यकता नहीं है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम झिझक, यदि कोई हो तो, को दूर करके अपना कामकाज जनसाधारण द्वारा सबसे अधिक बोली एवं समझे जाने वाली भाषा हिंदी में ही करें।

**भारत विभिन्न भाषाओं का देश है और हर भाषा का अपना महत्व है परन्तु पूरे देश की एक संपर्क भाषा होनी चाहिए जो सारे देश को एक सूत्र में पिरो सके। आज देश को एकता की डोर में बाँधने का काम अगर कोई एक भाषा कर सकती है तो वो सर्वाधिक बोली जाने वाली हिंदी भाषा ही है।**

# ध्वनि विज्ञान

**गौरव हारिथ**
**वरिष्ठ अनुवादक (राजभाषा)**
**भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक**
**का कार्यालय, नई दिल्ली**

## ध्वनि विज्ञान की तीन शाखाएँ

ध्वनि विज्ञान भाषा ध्वनि के अध्ययन का विज्ञान है। किसी भी भाषा की ध्वनि को समझने, परखने, जानने के तीन आयाम या कोण हो सकते हैं। इनमें पहला आयाम भाषा ध्वनि के उच्चारण अर्थात् ध्वनि के उत्पन्न होने का है। दूसरा आयाम ध्वनि तरंग के रूप में ध्वनि के प्रसरण का है। तीसरा आयाम ध्वनि के श्रवण का है। इस तरह उच्चारण, प्रसरण और श्रवण ये तीन प्रत्येक भाषा ध्वनि के ऐसे पक्ष हैं जिनके द्वारा भाषा ध्वनि का अध्ययन हो सकता है। इसी आधार पर ध्वनि विज्ञान की तीन शाखाएँ बनती हैं –

(1) औचारणिक ध्वनि विज्ञान,
(2) प्रसरणिक ध्वनि विज्ञान, तथा
(3) श्रवणिक ध्वनि विज्ञान।

## (1) औचारणिक ध्वनि विज्ञान

इसमें ध्वनि के उच्चारण में संलग्न वाक् पथ के अवयव और उच्चारण की प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि हिंदी 'प' ध्वनि का अध्ययन हम औचारणिक ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से करें तो एक बात तो यह बतानी पड़ेगी कि 'प' के उच्चारण में दोनों ओष्ठ संलग्न होते हैं, क्षणभर उसी जुड़ी अवस्था में दोनों ओष्ठ रहते हैं फिर निचला ओष्ठ झटके से ऊपरी ओष्ठ से अलग हो जाता है। दोनों ओष्ठों के क्षणभर जुड़े रहने से मुख विवर की श्वास वायु ओष्ठों के पीछे सम्पीड़ित रहती है और झटके से निचले ओष्ठ के अलग हो जाने के कारण सम्पीड़ित वायु अचानक निकल पड़ती है इससे एक विस्फोट सुनाई पड़ता है जो 'प' का विस्फोट है। उच्चारण अवयव संख्या में 22 है। इन उच्चारण अवयवों को दो वर्गों में रखा जा सकता है – चल और अचल।

(i) **चल** – ध्वनियों का उच्चारण करते समय जिन्हें ऊपर उठाया अथवा नीचे गिराया जा सकता है वे चल अवयव हैं इन्हीं को करण भी कहते हैं। नीचे का ओष्ठ, जीभ और उसके विभिन्न भाग तथा स्वर तंत्रियाँ इसमें आती हैं।

(ii) **अचल** – ध्वनियों के उच्चारण में ऊपर नीचे न किए जा सकने वाले अवयव अचल कहलाते हैं। ऊपर के दाँत, ऊपर के ओष्ठ, तालु के विभिन्न इसके अंतर्गत आते हैं।

भाषा ध्वनि के उच्चारण में संलग्न होने वाले अवयवों में, गले में स्थित स्वरतंत्रिय, मुख में स्थित अनेक अवयव तथा नासिका मार्ग का योगदान रहता है। इन सभी को साथ मिलाकर 'वाक–पथ' कहा जाता है।

गले में स्थित जो अवयव श्वास का वाहक है उसे श्वास की नली कहते हैं इस श्वास नली का सबसे ऊपर सिरा जो एक पूर्ण छतले के रूप में है – स्वरयंत्र कहलाता है। स्वरयंत्र के अंतर्गत दो अत्यंत लचकदार तंत्र है जो सामने से पीछे की ओर फैले हुए हैं। इन तंतुओं को स्वर

तंत्रियां कहते हैं और इनका मुख्य कार्य श्वास को लेने और बाहर निकालने के समय एक दूसरे से अलग हटकर श्वास वायु को रास्ता देता है जब ये एक दूसरे से अलग हट जाते हैं तो इनके बीच मार्ग को स्वरयंत्र मुख कहते हैं। स्वर तंत्रियां ढीली अवस्था में एक दूसरे को छूती हुई होती है और श्वास वायु उन्हें धक्का देकर बाहर निकालती है इससे स्वर तंत्रियों में कंपन होता है और एक प्रकार का घोष सुनाई देता है। और इस स्थिति से उत्पन्न भाषा ध्वनियों को घोष ध्वनियाँ कहते हैं। हिंदी के स्वरों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों की यही अवस्था रहती है। कुछ व्यंजन स्वरतंत्रियों की इस अवस्था से उच्चारित होते हैं और घोष व्यंजन कहलाते हैं।

स्वर तंत्रियों की दूसरी अवस्था में उच्चारित व्यंजनों को अघोष व्यंजन कहते हैं। इस अवस्था में स्वरतंत्रियाँ ध्वनि उच्चारण के समय श्वास वायु को निकालते हुए एक–दूसरे से अपेक्षाकृत दूर रहती है जिससे कोई कंपन उत्पन्न नहीं होता। (क, ख), (च, छ), (ट, ठ), (त, थ), (प, फ) आदि ध्वनियाँ अघोष हैं।

स्वर तंत्रियों की तीसरी अवस्था में वे एक–दूसरे के सन्निकट होकर स्वरयंत्र मुख को संकरा कर देती है जिसका परिणाम यह होता है कि ध्वनि उच्चारण के समय एक तरह का घर्षण सुनाई देता है इस स्थिति से उत्पन्न ध्वनि को स्वरयंत्र मुखी संघर्षी कहते हैं।

स्वर तंत्रियों की चौथी अवस्था से उत्पन्न ध्वनि स्वरयंत्र मुखी स्पर्श है, जिसमें उच्चारण के समय स्वर तंत्रियाँ एक–दूसरे से जुड़ती है, पल भर एक–दूसरे से जुड़ी रहकर फिर एक झटके से अलग हो जाती है, एक–दूसरे से जुड़ने के कारण स्वरयंत्र मुख बंद हो जाता है और बाहर निकलने वाली श्वास वायु को रूक जाना पड़ता है और इस प्रकार वायु का सम्पीड़न आरंभ हो जाता है। फिर स्वर तंत्रियाँ एक–दूसरे से झटके से अलग होकर स्वरयंत्र मुख खोल देती है और सम्पीड़ित वायु को एकाएक रास्ता मिल जाता है, इससे एक हल्का स्फोट सुनाई देता है। इस प्रक्रिया से उत्पन्न ध्वनि को स्वरयंत्र मुखी स्पर्श कहते हैं। हिंदी में ऐसी कोई स्पर्श ध्वनि नहीं है।

स्वर तंत्रियों की एक अन्य अवस्था से उत्पन्न ध्वनियों को मर्मर ध्वनि कहते हैं। यह वह अवस्था है जिसमें स्वर तंत्रियाँ एक–दूसरे को छूती नहीं हैं और न एक–दूसरे से इतनी दूर होती है कि उनमें कोई जागृति उत्पन्न न हो। यह घोषत्व और अघोषत्व के मध्य की स्थिति है जहाँ श्वास वायु के धक्के से उनमें बहुत मामूली सी झनकार उत्पन्न होती है जो ध्वनि को घोषत्व प्रदान करने में समर्थ है, इसे अघोष भी नहीं कहेंगे क्योंकि स्वर तंत्रियाँ एक–दूसरे के अपेक्षाकृत समीप रहती है इसलिए इन्हें मर्मर नाम दिया जाता है।

एक और स्थिति स्वर तंत्रियों की है जिसे फुसफुसाहट की अवस्था कहते हैं। इस अवस्था में स्वर तंत्रियाँ एक–दूसरे को छूती हुई तो रहती हैं किंतु उनमें तनाव रहता है जिसमें श्वास वायु के धक्के के बावजूद स्वर तंत्रियों में कंपन नहीं होता और न ही झंकार उत्पन्न होती है। झंकृति न होने के कारण घोषत्व उत्पन्न नहीं होता।

इस प्रकार स्वर तंत्रियाँ विभिन्न अवस्था द्वारा भाषा ध्वनि के उच्चारण में सहयोग देती हैं।

मुख विवर में स्थित अवयव भी भाषा ध्वनि के उच्चारण में संलग्न रहते हैं। इनमें सर्वप्रथम तालु है। तालु का पिछला हिस्सा कोमल तालु कहलाता है। जिसके अंत में छोटा सा मांस पिण्ड लटका रहता है जिसे अलजिव्हा कहते हैं। अलजिव्हा की तीन स्थितियाँ हो सकती हैं। प्रथम जब वह मुख विवर और नासिका विवर के मार्गों को अलग करने का काम करता है उसके नीचे झुक जाने के कारण नासिका विवर का मार्ग सामान्य से अधिक खुल जाता है। यह अवस्था तब होती है जब हम नासिका के

व्यंजनों का उच्चारण कर रहे हों। इस अवस्था में श्वास वायु का अधिकांश नासिका विवर से होकर निकलता है (ङ, न, म, ण) आदि ऐसी ही ध्वनियाँ होती हैं।

द्वितीय स्थिति में यह ऊपर की ओर उठकर नासिका विवर के मार्ग को लगभग बंद कर देती है व श्वास वायु अधिकांश मुख विवर से होकर ही निकलती है। ऐसी ध्वनियों को मौखिक कहते हैं (क, ख, ग, घ), (च, छ, ज, झ), (ट, ठ, ड, ढ), (द, ध) ऐसी ही मौखिक ध्वनियां हैं।

तीसरी स्थिति वह है जब वह न तो मुख विवर में नीचे की ओर झुका रहता है और न ही ऊपर की ओर उठकर नासिका विवर के मार्ग को बंद करता है अर्थात् मध्य में रहता है। इससे श्वास वायु नासिका विवर होने वाले मार्गों से अनअवरोधिक निकलती है (अ, आ, ई, ऊ) आदि स्वरों को अनुनासिक स्वर कहते हैं। अलजिव्हा की इन परिस्थितियों के अतिरिक्त कुछ ध्वनियों के उच्चारण में कोमल तालु का सक्रिय योगदान रहता है जैसे (क, ख, ग, घ, ङ) व्यंजनों में यह उच्चारण के बिंदु का कार्य करता है। (उ, ऊ, ओ, औ, आ) स्वरों के उच्चारण में जिह्वा पश्च इसी कोमल तालु की ओर अग्रसर होता है। कोमल तालु के स्थान से उच्चरित व्यंजनों को कोमल तालव्य व्यंजन भी कहते हैं।

तालु का बीच का हड्डी वाला सख्त भाग कठोर तालु कहलाता है। यह स्थिर भाग है। जीभ के अनेक भाग इसे छूकर या इस अत्यंत निकट आकर विभिन्न ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। (श, य, ई) आदि ऐसी ही ध्वनियाँ हैं, यह ध्वनियाँ तालव्य कहलाती हैं। स्वरों के संदर्भ में इन्हें अग्रस्वर कहते हैं।

तालु का तीसरा भाग वर्त्स है जो पीछे की ओर कठोर तालु से जुड़ा है और आगे की ओर सम्मुख के ऊपरी दाँतों की जड़ों से। यह भी एक स्थित अवयव है जिह्वा नोक व जिह्वा कलक उसे छूकर या इसके सन्निकट होकर विभिन्न व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण को सम्भव बनाते हैं। यहाँ ये उच्चरित व्यंजनों को वर्त्स कहते हैं।

सामने व ऊपरी दाँत भी भाषा ध्वनि के उच्चारण के अवयव के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जिह्वा नोक और निचला ओष्ठ इसके सम्पर्क में आकर अनेक ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। (त, थ, द, ध, फ, व) ऐसी ही ध्वनियाँ हैं।

दोनों ओष्ठ भी भाषा ध्वनि उच्चारण के प्रमुख माध्यम है। निचला ओष्ठ ऊपरी ओष्ठ को छूकर (प, फ, ब, भ, म) ध्वनियों को उच्चारित करता है। स्वरों के उच्चारण में भी इनकी भूमिका रहती है।

स्वर तंत्रियाँ, जिह्वा पश्च, जिह्वाग्र, जिह्वा फलक, जिह्वा नोक और निचला ओष्ठ ये चल अवयव हैं। ध्वनि के उच्चारण में अपेक्षाकृत अधिक योगदान रहता है। स्वरयंत्र मुख, जिह्वा मूल, कोमल तालु, कठोर तालु, वर्त्स, सामने के ऊपरी दाँत, ऊपरी ओष्ठ, अचल अवयव हैं, इन्हें उच्चारण बिंदु कहा जाता है।

## (2) प्रसारणिक ध्वनि विज्ञान

इनके अंतर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि उच्चारण का व्यापार और उच्चारित होने के पश्चात् ध्वनि किस प्रकार लहरों द्वारा वक्ता के मुख से श्रोता के कान तक पहुँचती है। वास्तव में फेफड़े से चली हवा ध्वनि यंत्रों की सक्रियता के कारण आंदोलित होकर निकलती और बाहर की वायु में अपने आंदोलन के अनुसार एक विशिष्ट प्रकार के कम्पन से लहरें पैदा कर देती है। ये लहरें ही सुनने वाले के कान तक पहुँचती हैं और वहाँ श्रवणेन्द्रियों में कंपन पैदा कर देती है। ज्यों–ज्यों ये लहरें आगे बढ़ती जाती हैं इनकी तीव्रता घटती जाती है इसी कारण दूर के व्यक्ति को ध्वनि धीमी सुनाई देती है। अनेक यंत्रों के सहारे भौतिक शास्त्र में इन लहरों का बहुत गंभीर अध्ययन किया गया है कि भाषा विज्ञान में उसकी बहुत उपयोगिता नहीं है।

### (3) श्रावणिक ध्वनि विज्ञान

इसमें ध्वनि के सुने जाने तथा एतद् विषयक प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है। श्रवण का संबंध कर्ण इन्द्रिय से है। कर्ण तीन भागों में विभक्त होते हैं – (i) बाहर (बाहरी), (ii) मध्यवर्ती तथा (iii) भीतरी।

(i) **बाह्य कर्ण** के दो भाग हैं – टेढ़ा मेढ़ा ऊपरी भाग तथा भीतर तक गया एक इंच लंबा छिद्र, जिस पर पड़ी झिल्ली उसे मध्यवर्ती कान से जोड़ती है। श्रवण क्रिया की दृष्टि से बाह्य कर्ण का एक छिद्र ही उपयोगी है।

(ii) **मध्यवर्ती कर्ण** तीन छोटी अस्थियों से बनी एक कोठरी है। इन अस्थियों का एक सिरा बाह्य कर्ण की एक झिल्ली से और दूसरा सिरा भीतरी कर्ण के बाहरी छिद्र से जुड़ा रहता है।

(iii) **भीतरी कर्ण** शंख के आकार का अस्थि समूह है जिसके खोखले भाग में उसी आकार की झिल्लियाँ हैं और दोनों के मध्य एक प्रकार का द्रव्य पदार्थ भरा रहता है। इस भाग के भीतरी सिरे की झिल्ली से श्रावणी शिरा के तंतु आरंभ होते हैं जो मस्तिष्क से जुड़े रहते हैं। ध्वनि लहरें कान में पहुँचने पर बाहरी कान की भीतरी झिल्ली पर कंपन उत्पन्न करती हैं जिसका प्रभाव मध्यवर्ती कर्ण की अस्थियों पर होता हुआ भीतरी कर्ण के द्रव्य पदार्थ पर पड़ता है और लहरें उठती हैं उसकी सूचना श्रवणी शिरा के तंतुओं द्वारा मस्तिष्क को दी जाती है और व्यक्ति सुन लेता है।

### ध्वनियों का वर्गीकरण

ध्वनियों का नामकरण और वर्गीकरण उनके तीन आधारों – उच्चारण, प्रसरण और श्रवण पर किया जा सकता है।

**श्रवण** के आधार पर वर्गीकरण में कठिनाई यह है कि यह वर्गीकरण वस्तुनिष्ठ न होकर व्यक्तिनिष्ठ होगा।

**प्रसरण** के आधार पर भी ध्वनियों का वर्गीकरण संभव नहीं है क्योंकि ध्वनि तरंगों का सम्यक् रूप से अध्ययन विश्लेषण भौतिक शास्त्री के लिए ही संभव है।

**उच्चारण** भी ध्वनियों के वर्गीकरण का एक अच्छा आधार नहीं है अन्य किसी आधार के अभाव के कारण आज इसी आधार का आश्रय लिया जा रहा है। इस आधार पर ध्वनियों का सर्वाधिक वर्गीकृत एवं प्राचीन वर्णन स्वर और व्यंजन के रूप में मिलता है। स्वतंत्र रूप से उच्चरित ध्वनि को स्वर तथा स्वर की सहायता से उच्चरित ध्वनियों को व्यंजन कहते हैं।

### स्वर व व्यंजन में निम्न अंतर है–

(i) सभी स्वरों का स्वतंत्र रूप से उच्चारण किया जा सकता है, किंतु सभी व्यंजनों का स्वतंत्र रूप से उच्चारण संभव नहीं है (स, ष, ज) आदि संघर्षी व्यंजनों से पहले या बाद में स्वर होने पर ही उच्चारण संभव है।

(ii) स्वरों का उच्चारण देर तक किया जा सकता है परंतु संघर्षी व्यंजनों को छोड़कर अन्य व्यंजनों का उच्चारण देर तक नहीं किया जा सकता है।

(iii) एक दो अपवादों को छोड़कर (ई, ऊ) अधिकांश स्वरों के उच्चारण में मुख विवर में हवा गूँजती हुई बिना विशेष अवरोध के निकल जाती है। अधिकांश व्यंजन इसके विरोधी है और उनमें पूर्ण या अपूर्ण अवरोध हवा के मार्ग में व्यवधान उपस्थित होता है।

(iv) सभी स्वर आक्षरिक होते हैं (ऐ, औ) अपवाद है, परंतु प्रायः सभी व्यंजन सामान्यतः अनाक्षरिक होते हैं अपवाद स्वरूप 'न' आदि कुछ व्यंजन आक्षरिक रूप में दृष्टिगत होते हैं।

(v) कतिपय अपवादों को छोड़कर स्वर अपेक्षाकृत मुखर होते हैं और व्यंजन कम।

(vi) व्यंजनों का उच्चारण स्थान विशेष से होता है जबकि स्वरों का उच्चारण किसी निश्चित स्थान से नहीं होता वह तो पूरे मुख विवर में होने वाली एक प्रकार की गूंज है।

*(स्रोत : अज्ञात)*

# रानी अब्बक्का चौटा – भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी

**सुश्री सं.ग. श्रीमती**
**सं. 135, न्यू वी.ई.एल. रोड,**
**एजीज लेआऊट, बेंगलूर**

रानी अब्बक्का चौटा अथवा अब्बक्का महादेवी तुलुनाडु (तटीय कर्नाटक) की रानी थी। उन्होंने सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पुर्तगालियों के साथ युद्ध किया। वह चौटा राजवंश की थीं जो मंदिरों का शहर मूड़बिद्री में शासन करते थे। बंदरगाह शहर उल्लाल उनकी सहायक राजधानी थी।

अब्बक्का का जन्म कर्नाटक में स्थित उल्लाल नगर के चौटा राजघराने में हुआ। चौटा वंश मात्रुवंशीय परंपरा का पालन करता था। मात्रुवंशीय परंपरा एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था थी जिसमें परिवार की स्त्रियों का ओहदा प्रमुख होता था और संपत्ति व शासन का हक बेटों के बजाय बेटियों को दिया जाता था। इसी परंपरा के अनुसार अब्बक्का के मामा तिरुमला राय ने उन्हें उल्लाल नगर की रानी घोषित किया। रानी अब्बक्का को युद्ध लड़ने और शासन व्यवस्था संभालने का अच्छा प्रशिक्षण दिया गया था।

उनके शासन में जैन, हिन्दू तथा मुस्लिम धर्म के लोग समान रूप से रहते थे। उनकी सेना में भी सभी धर्मों, जातियों और समुदायों के लोग थे। अब्बक्का न्यायप्रिय रानी थी और इसी कारण उनकी प्रजा उन्हें बहुत पसंद करती थी। उनकी अच्छाई और वीरता के कारण ही उन्हें अभया रानी भी कहा जाता था। अर्थात् वह ऐसी बहादुर रानी थी जो किसी से नहीं डरती थी।

रानी अब्बक्का के मामा तिरुमलराय ने उनकी शादी मंगलूर की बंमा रियासत के राजा लक्षमप्पा अरसा के साथ करवाई। लेकिन शादी के कुछ ही समय पश्चात् रानी अब्बक्का अपने पति से अलग होकर वापस उल्लाल आ गई। उन्हें शायद अंदाज़ा भी न था कि आने वाले समय में अपने पति लड़ाई में शत्रुओं का साथ देंगे।

साल 1525 में पुर्तगालियों ने दक्षिण कन्नड़ के तट पर हमला किया और मंगलूर के बंदरगाह को तबाह कर दिया। लेकिन वे उल्लाल पर कब्जा नहीं कर पा रहे थे। रानी अब्बक्का ने पुर्तगालियों से समझौता करने से इंकार किया। साल 1555 में पुर्तगालियों ने लड़ाई लड़ने की कोशिश की। लेकिन रानी अब्बक्का उन्हें हराने में सफल हुई।

सन् 1557 में पुर्तगालियों ने मंगलूर को लूटकर बर्बाद कर दिया। साल 1568 में, पुर्तगाली सेना उल्लाल पर कब्जा करने में सफल रही और राज दरबार में घुस गई। रानी अब्बक्का वहाँ से बचकर निकलीं

और उन्होंने एक मस्ज़िद में शरण ली। उसी रात करीब 200 सैनिकों को इकट्ठा करके रानी अब्बक्का ने पुर्तगालियों पर आक्रमण किया। इस लड़ाई में पुर्तगाली सेना का जनरल मारा गया और कई पुर्तगाली सैनिक बंदी बना लिए गए। लेकिन साल 1569 में पुर्तगालियों ने न सिर्फ मंगलूर का किला दोबारा हासिल किया बल्कि कुन्दापुरा (कर्नाटक का एक नगर) पर भी कब्जा कर लिया। पर इन सबके बावजूद रानी अब्बक्का पुर्तगालियों के लिए एक बड़ा खतरा बनी हुई थी।

इस दौरान रानी अब्बक्का के पति लक्ष्मप्पा ने पुर्तगालियों की मदद की और शत्रु सेना फिर हमला करने लगी। अब्बक्का ने 1570 में, अहमदनगर के सुल्तान और कालीकट के राजा के साथ गठबंधन करके, लड़ाई लड़ी। लेकिन पति लक्ष्मप्पा के धोखे से रानी लड़ाई में हार गई और उन्हें कैदी बना लिया गया। कैद में भी रानी अब्बक्का विद्रोह करती रही और आखिरी साँस ली।

रानी अब्बक्का का स्थान न सिर्फ इतिहास में महत्वपूर्ण है बल्कि आज के समय में एक सशक्त महिला और शासक के रूप में प्रख्यात उदाहरण है। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण, लोककथाओं और लोकगीतों के द्वारा उनकी कहानी सुनाई जाती रही है। 'यक्षगान' कर्नाटक की एक पारंपरिक नाट्य शैली है। इसके द्वारा रानी अब्बक्का की बहादुरी के किस्सों को बताया जाता है। आज भी रानी अब्बक्का की याद में उनके नगर उल्लाल में उत्सव मनाया जाता है और इस "वीर रानी अब्बक्का उत्सव" में प्रतिष्ठित महिलाओं को "वीर रानी अब्बक्का प्रशस्ति" पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

15 जनवरी 2003 को डाक विभाग ने रानी अब्बक्का के चित्र का एक विशेष कवर जारी किया। उल्लाल में रानी की कांस्य मूर्ति स्थापित की गई है। कर्नाटक इतिहास अकादमी ने राज्य की राजधानी के "क्वींस रोड" को "रानी अब्बक्का देवी रोड़" नाम देने की मांग की है।

रानी अब्बक्का अत्यन्त लोकप्रिय रानी थी। वह आज भी लोक साहित्य का एक हिस्सा है और रानी की कहानी, लोकसंगीत तथा यक्षगान द्वारा बार–बार दोहराई जाती है। 'भूट कोला' एक स्थानीय नृत्य प्रकार है, जिसमें अब्बक्का महादेवी के महान कारनामे दिखाए जाते हैं। रानी सांवले रंग की दिखने में बड़ी सुंदर थी। रानी ने अपने राज्य की राजधानी उल्लाल में भगवान शिव के सुंदर मंदिर का निर्माण करवाया। उस मंदिर में 'रूद्र शिवा' नामक एक अद्वितीय शिला है।

# प्रदूषण की समस्या एवं उसका निदान

**सुश्री राजकुमारी शर्मा**
**सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी**
**एम–143, साउथ सिटी–1, गुरूग्राम**

प्रदूषण वातावरण में फैले उन तत्वों को कहा जाता है जो वातावरण को दूषित कर देते हैं। प्रदूषण शब्द असल में दो शब्दों के जोड़ से बना है जिसमें 'प्र' का अर्थ प्रकृति है और दूषण का अर्थ ऐसे तत्व जो प्रकृति को असंतुलित कर रहे हैं।

प्रदूषण का शब्दिक अर्थ दूषित पदार्थ है। यह दूषित पदार्थ या तत्व कभी–कभी आंखों से दिखते हैं तो कभी–कभी मात्र इसके खराब परिणाम से ही मालूम हो पाता है कि हमारे आस–पास वातावरण दूषित हो चुका है।

### प्रदूषण के प्रकार

प्रदूषण के कई प्रकार धरती पर वातावरण में अदृश्य रूप में मौजूद है। यह प्रदूषण लोगों एवं वातावरण में मौजूद हर जीव के जीवन पर प्रभाव डालने में सक्षम है। इसके कुछ अंश निम्न प्रकार हैं:–

**वायु प्रदूषण** : जीवन जीने के लिए हमारा सांस लेना आवश्यक है जिसके लिए साफ हवा की आवश्यकता होती है। व्यक्ति ऑक्सीजन अपने भीतर लेता है और कार्बनडाइऑक्साइड छोड़ता है जबकि पेड़ कार्बनडाइऑक्साइड लेते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण पेड़ों की अत्यधिक कटाई की जा रही है जिसके कारण हवा में कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। इसके अलावा बढ़ते हुए ट्रैफिक तथा फैक्टरियों से उत्पन्न धुआं भी वायु प्रदूषण को बढ़ा रहा है। पराली जलाने से भी प्रतिवर्ष दिल्ली जैसे महानगर में वायु प्रदूषण बढ़ जाता है जिससे सांस लेने में कठिनाई, खांसी तथा फेफड़ों की कई बीमारियां उत्पन्न होती हैं।

**जल प्रदूषण** : जल है जो जीवन है अथवा जल है तो कल है कहावत सही चरितार्थ होती हैं। पानी में कूड़ा–कर्कट डालने से जल प्रदूषण बढ़ता है। गंगा जैसी नदियों में अस्थियां तथा अन्य सामग्री विसर्जित/प्रवाहित की जाती है। इससे पानी में रहने वाले जीवों को हानि पहुंचती है। हवा में मौजूद प्रदूषण के कण बारिश के साथ घुलकर धरती पर आ जाते हैं जो नदियों का जल प्रदूषित करते हैं। जहरीले अपशिष्ट, औद्योगिक अपशिष्ट समुद्री जीव–जंतुओं को रोगग्रस्त करते हैं। इनका उपयोग करने पर मानवों में रोग अंतरित हो जाते हैं।

**ध्वनि प्रदूषण** : आम बोलचाल की भाषा में इसे शोर कहते हैं। हर व्यक्ति की श्रवण क्षमता की एक सीमा होती है लेकिन ध्वनि अगर सहन शक्ति से अधिक शक्ति की हो तो वह प्रदूषित श्रेणी में आ जाती है। इस ध्वनि प्रदूषण में देर रात होने वाली पार्टियों, समारोहों

तथा अन्य कार्यक्रम में बजाए जाने वाले म्यूजिक सिस्टम, लाउड–स्पीकरों तथा अन्य घोषणाओं के कारण ऊंची ध्वनि का शोर शामिल है। इस ध्वनि प्रदूषण में पुराने वक्त के जनरेटरों द्वारा उत्पन्न शोर का योगदान भी शामिल है क्योंकि इनकी आवाज बेहद अधिक रहती है।

**भूमि प्रदूषण** : आज मानव द्वारा अनेक प्रकार से भूमि का प्रदूषण किया जा रहा है। रासायनिक उर्वरकों, फैक्ट्रियों के कचरे, कीटनाशक दवाओं इत्यादि के कारण भूमि प्रदूषित होती जा रही हैं। भूमि की उपजाऊ शक्ति पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फसलों की अधिक तथा समय से पहले पैदावार के लिए किसान अनेकों उपाय करता है जिनसे भूमि की उपजाऊ शक्ति प्रभावित होती है। भूमि प्रदूषण में पराली जलाने तथा जगह–जगह फैले कूड़े के ढेरों का भी योगदान है।

## प्रदूषण से होने वाली हानियाँ

पर्यावरण के साथ खिलवाड करने के परिणामस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण फैलता है। इसके कारण हमें भयंकर परिणाम भुगतने पड़ते हैं। पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली हानियों में से कुछेक निम्नवत हैं :

1. मानवों तथा जीव–जंतुओं में कई प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

2. प्लास्टिक, कचरा, नाभिकीय अपशिष्ट आदि को नष्ट न करने के कारण कई प्रकार की समस्याएँ जैसे शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य संबंधी, पर्यावरण आदि संबंधित समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

3. वृक्षों की कटाई, पशुवध, पशुपालन में कमी आदि के कारण परिस्थितकीय तंत्र में असंतुलन पैदा होता है। इसी असंतुलन का ही परिणाम है कि आज जीव–जंतुओं की कई प्रजातियाँ या तो

विलुप्त हो चुकी हैं या फिर विलुप्त होने के कगार पर हैं।

4. फैंका गया औद्योगिक अपशिष्ट, जहरीले अपशिष्ट, कचरा आदि महासागरों को प्रदूषित कर रहा है जिससे समुद्री जीव–जन्तु तथा वनस्पतियाँ रोग ग्रस्त हो रही हैं। उनका उपयोग करने वाले मानव भी रोग ग्रस्त हो रहे हैं।

5. वायुमंडल में पाई जाने वाली ओज़ोन परत क्षतिग्रस्त हो रही है जिससे कई प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक विकार, पेड़–पौधों और जीव–जंतुओं में व्याधियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

## प्रदूषण से बचाव के उपाय

प्रदूषण दुनियाँ की बेहद बड़ी एवं खतरनाक समस्या बन चुका है लेकिन हर समस्या की तरह इसका भी हल मौजूद है। इस समस्या से निजात पाने के लिए हर इंसान को अपनी अहम भूमिका निभानी होगी और इससे बचाव के तरीके अपनाकर हम प्रदूषण से स्वयं को और पूरे मानव समाज को बचा सकते हैं। इनमें से अपनाए जाने वाले कुछेक उपाय निम्न प्रकार हैं :

1. अधिकाधिक वृक्षारोपण किया जाए।

2. प्राकृतिक संसाधनों और वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए प्रयास किए जाएं।

3. वाहनों का प्रदूषण मुक्त उपयोग किया जाए। इसमें सीएनजी चालित वाहन, ऑड–ईवन फार्मूला, कार पूलिंग आदि उपाय अपनाए जा सकते हैं।

4. पशुपालन को प्रोत्साहित किया जाए।

5. भूमि की उर्वरकता को बनाए रखने के लिए कृषि हेतु जैविक खाद का उपयोग किया जाए।

6. अपशिष्ट पदार्थों के पुर्न–चक्रण तथा पुनः उपयोग पर ज़ोर देते हुए इनके लिए उचित व्यवस्था की जाए।

7. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम और संरक्षण संबंधी अन्य अधिनियमों का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाए।

8. पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छ भारत अभियान और भारत को खुले में शौच मुक्त बनाना जैसे कार्यक्रम भी काफी उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

अंत में यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण प्रकृति का दिया हुआ सबसे सुंदर उपहार है। इस उपहार का गलत उपयोग करके मनुष्य इसे हानि पहुंचा रहा है। हानि के परिणामस्वरूप कभी रोग हमला करते हैं और कभी कोई अन्य प्राकृतिक आपदा आती है। प्रदूषण के फैलने में कई बार छोटी–छोटी गलतियों का योगदान रहता है। यह समस्या कुदरती नहीं हैं बल्कि यह मानव निर्मित है। यदि छोटी–छोटी सावधानियाँ बरती जाएं तो पर्यावरण की समस्या से निपटने में काफी सहायता मिल सकती है।

# कोरोना एवं पर्यावरण

**सुश्री कुसुमलता**
**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)**
**हरियाणा, चण्डीगढ़**

पिछले एक वर्ष से भी अधिक समय से हमारी दुनिया एकदम बदल गई है। लाखों लोगों की जानें चली गई उससे कहीं ज्यादा बीमार हैं। कोरोना वायरस का कहर इस प्रकार टूटा है कि समस्त संसार इस त्रासदी से ग्रसित है। जो लोग इस बीमारी से बचे हुए हैं उनका रहन–सहन बिल्कुल बदल गया है। इटली में यह वायरस इतनी बुरी तरीके से फैला कि वहां दूसरे विश्व युद्ध के बाद पहली बार लोगों की आवाजाही पर इतनी बड़ी पाबंदी लगाई गई। यही स्थिति बाद में दुनिया के सभी देशों में आ गई। कोरोना की दूसरी लहर ने भारत देश को जिस तरह प्रभावित किया, लोगों की जानें गई व बीमार हुए वह सर्वविदित है। कोरोना को फैलने से रोकने का एकमात्र विकल्प लॉकडाउन ही बचा था। जिससे इस बीमारी पर कुछ हद तक काबू पाया जा सका। इन सब पाबंदियों का नतीजा यह भी निकला जो संपूर्ण मानव जाति के लिए एक सकारात्मक प्रभाव डालने वाला है और वह है प्रदूषण में भारी कमी। प्रदूषण में भारी कमी के ऐसे नतीजों की किसी को भी उम्मीद नहीं थी। जहां अक्सर नींद अलार्म के शोर से खुलती थी, विशेषकर शहरी दिनचर्या की शुरूआत ऐसे ही होती है, वहां भी अब परिंदों के शोर से सुबह–सुबह वातावरण सुखमय हो गया है। शहरों में इस प्रकार का मंजर देखना किसी आश्चर्य से कम नहीं है।

एक साफ सुथरा आसमान, फसल पर पड़ते सफेद रूई जैसे बादल बेहद ही सुंदर व मनमोहक लगते हैं। जो नजारा पहाड़ी क्षेत्रों में देखने को मिलता था वह उस समय शहरों में भी देखने को मिला। सड़कें विरान हुई तो वातावरण भी साफ हो गया। सड़कों के किनारे लगे पेड़–पौधे एकदम साफ हो गए मानों उनमें किसी ने जान डाल दी हो। जो काम सरकारें करोड़ों रूपये खर्च कर भी नहीं कर सकी वो लॉकडाउन की इस अवधि में स्वयं हो गया। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि कोरोना वायरस ने भयंकर तबाही मचाई है परंतु उतना ही यह प्रकृति के लिए वरदान साबित हुआ है।

इस महामारी को पर्यावरण में बदलाव के तौर पर नहीं देखा जा सकता। यह बदलाव स्थिर रहने

वाला नहीं है। अभी कुछ समय बाद इस महामारी से यदि दुनिया को निजात मिल जाती है तो उसके पश्चात फिर से वही सब रोजमर्रा के काम शुरू हो जाएंगे। जनजीवन में फिर से वही पुराने चले आ रहे तौर–तरीके शुरू हो जाएंगें। कारखाने, फैक्ट्रियां, गाड़ियां चलने फिर शुरू हो जाएंगे और वातावरण अपनी पहली जैसी स्थिति में पहुंच जाएगा।

जैसे मौजूदा समय में लोगों की जान बचाना प्राथमिकता बनी हुई है वैसे ही लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक कराया जाना भी जरूरी है। पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग की तरह इसे एक मिशन के तौर पर लिया जाए। इस मुश्किल समय में भी वे डिजिटल प्लेटफार्म से अपना मिशन आगे बढ़ा रहे हैं। पर्यावरण पर मीटिंग बीते वर्ष के नवंबर में स्कॉटलैंड के ग्लासगो में हुई थी जिसमें दुनियाभर के 30 हजार प्रतिनिधियों द्वारा हिस्सा लिया गया। इस मीटिंग में पर्यावरण को साफ स्वच्छ बनाने से संबंधित विशेष कार्यप्रणाली पर चर्चा हुई।

एस.आर.पी.एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के शोध प्रकल्प के संयुक्त तत्वाधान में 'कोरोना का मानव और पर्यावरण पर प्रभाव' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और भूगोल के प्रख्यात शिक्षक प्रो. रासबिहारी प्रसाद सिंह ने कहा कि कोरोना ने मनुष्य के चिंतन और पर्यावरण दोनों पर प्रभाव डाल है। इसलिए कोरोना के बाद की परिस्थिति बिल्कुल भिन्न होने वाली है विकास की संकल्पना अब प्रकृति को केंद्र में रखते हुए ही तैयार करनी पड़ेगी।

विशिष्ट वक्ता जे.एन.यू. के प्रो. मलखान सिंह ने कहा कि कोरोनाकाल में पूरे विश्व के पर्यावरण पर काफी सकारात्मक

*एक ही शहर के लॉकडाउन से पहले और लॉकडाउन के बाद की तस्वीरे – फर्क साफ ज़ाहिर है।*

प्रभाव देखने को मिला। जो काम करोड़ों के बजट से भी नहीं हो पा रहा था वह सिर्फ मनुष्यों की गतिविधियों को बंद करके संभव हो गया। इसलिए पर्यावरण और मानव जीवन पर कोरोना के प्रभावों पर शोध व अनुसंधान की पर्याप्त संभावनाएं हैं। पर्यावरणविद संजय स्वामी ने कहा कि कोरोना की आपदा ने हमें सीख दी है कि प्रकृति के दोहन और दुरूपयोग का क्या भयावह परिणाम हो सकता है।

पर्यावरण को बचाने के लिए लोगों को अपनी आदतों को बदलना होगा अगर वो खुद नहीं बदलते तो उन्हें जबरन बदलवाना पड़ेगा जैसे जापान के क्योटो शहर में हुआ था। साल 2001 में जहां मोटर गाड़ियों वाले रास्ते बंद कर दिए गए और लोगों को सार्वजनिक परिवहन इस्तेमाल करने को मजबूर किया गया। यह धीरे–धीरे लोगों की आदतों में शामिल हो गया। इसके बाद जैसे ही रास्ते खुले, लोगों द्वारा सार्वजनिक वाहन ही इस्तेमाल किए जा रहे थे लेकिन इसके लिए देश में सरकार द्वारा सार्वजनिक वाहनों की स्थिति में काफी सुधार करना होगा।

कोरोना वायरस की महामारी ने न जाने कितनों को उनके अपनों से हमेशा के लिए दूर कर दिया हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर इसका बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। न जाने कितने लोगों का रोजगार खत्म हुआ है। अर्थव्यवस्था कब पटरी पर वापस लौटेगी यह कहना मुश्किल है लेकिन इस महामारी से एक अच्छी बात हुई कि इस मुश्किल घड़ी में सारी दुनिया एक हो गई, सभी देश एक दूसरे का साथ देने को तैयार हैं। अपने देश में ही गैर–सरकारी संस्थाएं कोरोना से प्रभावित लोगों की सहायता के लिए आगे आई। किसी ने अपनी ऑटो या टैक्सी द्वारा रोगियों को लाने–ले जाने के लिए निःशुल्क सेवा प्रदान की। किसी ने ऑक्सीजन सिलेंडर प्रदान करने में योगदान दिया तो कुछ ने उनके खाने–पीने का प्रबंध किया और कुछ लोगों ने रोगियों के इलाज के लिए आर्थिक सहायता भी की। सोनू सूद ने पिछले साल प्रवासी मजदूरों को घर पहुंचाने का प्रबंध किया तो इस बार कई लोगों की वैक्सीनेशन की जिम्मेदारी उठाई। अर्थात् विपरीत परिस्थितियों ने मानवता को जागृत किया और जिससे जो भी संभव हो सका, उसने मदद का हाथ बढ़ाया।

"किसी भी पीढ़ी का इस पृथ्वी पर एकाधिकार नहीं है, हम सभी यहां जीवन व्यय के लिए है।" मारग्रेट थेचर का यह कथन प्रकृति के साथ हमारे अस्थाई संबंध को दर्शाता है वैसे तो सरकार द्वारा प्रकृति और वन्यजीव सुरक्षा के लिए कई सारे कानून और योजनाएं स्थापित की गई हैं लेकिन फिर भी व्यक्तिगत रूप से यह हमारा कर्तव्य है कि प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे और अपनी आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करे क्योंकि वर्तमान में हमारे द्वारा ही इसका सबसे ज्यादा उपयोग किया जा रहा है। लेल्टर ब्राउन के शब्दों में बहुत ही आसानी से इसे समझा जा सकता है। हमने इस पृथ्वी को अपने पूर्वजों से प्राप्त नहीं किया है बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ियों से छीन लिया है। पर्यावरण बचाने के लिए हमें दृढ़ निश्चय एवं इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। हमें उम्मीद है इस समय का अंधकार हम स्वच्छ और हरे–भरे वातावरण से मिटा देंगे।

# हिंदी उपन्यास

**सुश्री मीनाक्षी**
**सहायक प्रशासन अधिकारी**
**भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक**
**का कार्यालय, नई दिल्ली**

हिंदी उपन्यास का आरंभ श्रीनिवास दास के 'परीक्षा गुरू' (1843 ई.) से माना जाता है। हिंदी के आरंभिक उपन्यास अधिकतर ऐयारी और तिलस्मी किस्म के थे। अनूदित उपन्यासों में पहला सामाजिक उपन्यास भारतेंदु हरिश्चंद्र का "पूर्णप्रकाश" और "चंद्रप्रभा" नामक मराठी उपन्यास का अनुवाद था। आरम्भ में हिंदी में कई उपन्यास बंगला, मराठी आदि से अनुवादित किए गए।

हिंदी में सामाजिक उपन्यासों का आधुनिक अर्थ में सूत्रपात प्रेमचंद (1880–1936) से हुआ। प्रेमचंद पहले उर्दू में लिखते थे। बाद में, उन्होंने हिंदी में लिखना प्रारंभ किया। 'सेवा सदन', 'रंग भूमि', 'काया कल्प', 'गबन', 'निर्मला', 'गोदान', आदि प्रेमचंद जी के प्रसिद्ध उपन्यास हैं। जिनमें ग्रामीण वातावरण का उत्तम चित्रण है। उनके उपन्यास हिंदी में आधुनिक सामाजिक सुधार–वादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रेमचंद जी के अनुकरण से ही विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, सुदर्शन, प्रताप नारायण श्रीवास्तव, भगवती प्रसाद वाजपेयी आदि अनेक लेखकों ने सामाजिक उपन्यास लिखे, जिनमें यथार्थवाद अधिक था। पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', ऋषभचरण जैन, चतुरसेन शास्त्री आदि ने भी यथार्थवाद और प्रकृतवाद अपनाया और समाज की बुराइयों का वर्णन किया। इस शैली के उपन्यासकारों में सबसे सफल रहे 'चित्रलेखा' के लेखक भगवतीचरण वर्मा, जिनके 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' और 'भूले बिसरे चित्र' बहुत प्रसिद्ध हैं। उपेन्द्रनाथ अश्क की 'गिरती दीवारें' का भी इस समाज की बुराइयों का चित्रण करने वाली रचनाओं में महत्वपूर्ण स्थान है। अमृतलाल नागर की 'बूँद और समुद्र' इसी यथार्थवादी शैली में आगे बढ़कर आंचलिकता मिलाने वाला एक श्रेष्ठ उपन्यास है। जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में भिन्न प्रकार के समाजों का चित्रण है, परंतु उनकी शैली अधिक काव्यात्मक है। 'कंकाल' और 'तितली' जयशंकर प्रसाद जी के प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास जैनेंद्रकुमार से शुरू हुए। 'परख', 'सुनीता', 'कल्याणी' आदि उपन्यासों से भी अधिक उनके 'त्यागपत्र' उपन्यास ने हिंदी में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान दिया। मनोविश्लेषण में स. ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने अपने 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', 'अपने अपने अजनबी' में अधिक गहराई और सूक्ष्म उपन्यासकला दिखाई। इस शैली में लिखने वाले बहुत कम मिलते हैं। सामाजिक विकृतियों पर इलाचंद्र जोशी के 'संन्यासी', 'प्रेत और छाया', 'जहाज का पंछी' आदि

उपन्यासों में अच्छा प्रकाश डाला गया है। इस शैली के उपन्यासकारों में धर्मवीर भारती का 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' और नरेश मेहता का 'वह पथबंधु था' उत्तम उपलब्धियाँ हैं।

ऐतिहासिक उपन्यासों में हजारी प्रसाद द्विवेदी का 'बाणभट्ट की आत्मकथा' एक बहुत मनोरंजक उपन्यास है जिसमें प्राचीन काल के भारत को मूर्त रूप दिया गया है। वृंदावनलाल वर्मा के 'महारानी लक्ष्मी बाई', 'मृगनयनी' आदि में ऐतिहासिकता तथा रोचकता तो बहुत है परंतु काव्यमयता द्विवेदी जी जैसी नहीं है। राहुल सांकृत्यायन (1895–1963), रांगेय राघव (1922–1963) आदि ने भी कुछ संस्मरणीय ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं।

यथार्थवादी शैली ने सामाजिक यथार्थवादी की ओर उन्मुख हुई तथा 'दिव्या' और 'झूठा सच' के लेखक भूतपूर्व क्रांतिकारी यशपाल और 'बलचनमा' के लेखक नागार्जुन इस धारा के उत्तम प्रतिनिधि हैं। कहीं–कहीं इनकी रचनाओं में प्रचार का आग्रह बढ़ गया है। हिंदी की नवीनतम विधा आंचलिक उपन्यासों की है, जिसकी शुरूआत फणीश्वरनाथ 'रेणु' के 'मैला आँचल' से हुई।

अंत में कहा जा सकता है कि हिंदी उपन्यास का इतिहास काफी समृद्ध है जिसमें तत्कालीन समाज में व्याप्त समस्याओं तथा परिस्थिति का सजीव अंकन किया गया है। हिंदी उपन्यास की इन्हीं विशेषताओं की वजह से सामान्य जन को अपनेपन का अहसास होता है तथा वह स्वयं को इनसे जुड़ा हुआ महसूस करता है।

# हार्ट अटैक

**बी.एस. चौहान**
**1809, महागुन मेपल, प्लाट एफ–26, सेक्टर–50, नोएडा (उत्तर प्रदेश)**

हर दिन शाम ढलने के बाद मोहित को कोई भी काम नहीं सूझता और उसे अकेलापन और रिक्तता का अनुभव होने लगता था। खाने–पीने से फ्री होने के बाद उसे बाईं तरफ सीने में अजीब–सा दर्द महसूस होता था। मोहित को लगता शायद ये दिल का कोई रोग है और एक दिन सोते–सोते उसका अंत हो जाएगा। यह एहसास मोहित को कोसों दूर भगा ले जाता था। वह घंटों एक करवट से दूसरी करवट बदलकर चारपाई में लेटा रहता। उसके पास कोई काम नहीं था, जो उसे रात्रि में व्यस्त रखे। अतः बिस्तर में लेटना उसकी मजबूरी थी। रात्रि में करे भी क्या? तभी उसे ख्याल आया कि वह कोई कहानी लिखे। लेकिन वह तो लेखक नहीं है और न ही उसके पास कोई ऐसी अनुभूति है जिसे वह शब्दों में ढाल सके।

कभी–कभी मोहित को लगता कि सीने का दर्द उसको चेतावनी दे रहा है कि वह हार्ट का चैक–अप करा ले। उसने सोचा कि वह बहुत भाग्यशाली है कि 70 वर्ष की आयु में भी उसे कोई स्वास्थ्य विकार नहीं है। शरीर के सभी अंग तो भले और एक्टिव हैं। फिर भी उसे लगने लगा कि उसका अंत हृदय गति के रूकने से ही होगा। उसने सोचा कि उसे अपनी वसीयत लिख देनी चाहिए।

वह गंभीरता से अपनी विरासत में छोड़ी जाने योग्य सामानों की लिस्ट के बारे में सोचने लगा। मोहित को इस बात का एहसास होने में देर नहीं लगी कि उसके पल्ले तो कुछ भी नहीं है। उसने अपने जीवन की सम्पूर्ण कमाई तो अपने बच्चों की परवरिश व उनके भविष्य को उज्ज्वल एवं सुरक्षित करने में लगा दी थी। उसे 'बागवान' फिल्म की तरह इसका भी कोई गिला नहीं था। उसके तीनों बच्चे धन–धान्य व शान्ति से विदेश में ख्याति प्राप्त इंजीनियर और डॉक्टर थे और उसे बहुत चाहते थे। एक लंदन में डॉक्टर था और दूसरा कनाडा में इंजीनियर और बेटा न्यूयार्क में अध्यापक। सब उसका बहुत आदर–सत्कार एवं प्यार करते थे। वे अपने पिताजी को अपने पास ही रखना चाहते थे। पर वह भला मानुष भारत की मिट्टी को छोड़ना नहीं चाहता था। वैसे सेवाकाल में सैकड़ों विदेश यात्राएं कर मोहित पूरा विश्व घूम चुका था।

मोहित ने कहानी और वसीयत लिखने का विचार त्याग दिया और हो गया हृदय गति रूकने से मौत के लिए तैयार। उसको ख्याल आया कि वह उसका कर्तव्य है कि ऐसा हादसा होने से पहले वह

अपने पुत्रों को सूचित तो कर दे ताकि उन्हें अपना अर्जेंट कार्य छोड़ कर उसको अग्नि देने के लिए अचानक भारत ना भागना पड़े। जैसे ही उसने पुत्रों को फोन करने के लिए रिसीवर उठाया, दूसरे क्षण उसके दिमाग में आये ख्याल से रिसीवर रख भी दिया। अगर हार्ट अटैक नहीं आया तो? मोहित इन्हीं ख्यालों में खो गया और विचरने लगा अपने दूर अतीत में। इस बेचैनी में वह क्या करे। उसकी ज़िंदगी का कैसेट रिवाइंड मोड़ पर चलना शुरू हो गया।

मोहित को ख्याल आया किस तरह बाल्यकाल में मानव केवल अपने लिए ही जीने को जीवन समझता है या फिर यूँ कहिए कि जीवन क्या है और मृत्यु क्या, वह समझता ही नहीं। उसे दूध चाहिए, उसे पानी चाहिए, उसे खिलौना चाहिए, उसे माँ चाहिए, उसे बहिन चाहिए। कभी–कभी उसे सड़क पर जाता हुआ हाथी, घोड़ा या ऊंट चाहिए। संक्षेप में कहें, तो बच्चे को सारा संसार चाहिए। उसे यह सब मिलना ही चाहिए, जैसे कि वह इस दुनिया का चक्रवर्ती सम्राट हो। उसे किसी भी चीज के लिए मना करो तो बच्चा उसकी जिद करता है। उसे फिर भी वह सब नहीं मिलता है तो उसे गुस्सा आता है, या वह दुखी होकर रोने लगता है। यह सब इसलिए होता है क्योंकि उसे कोई वस्तु न मिलने का कारण समझ में नहीं आता।

बच्चे की जिद कभी–कभी आपको बड़ी परेशानी में डाल देती है, लज्जित कर देती है। तीस साल पहले दिल्ली में डीटीसी की सेवा बड़ी निराशाजनक थी। एक घंटे तक आपको इंतजार करना पड़ता था। बस कभी आएगी तो स्टैंड पर रूकेगी नहीं, रूकेगी तो पहले से ही गेट में भी 10–15 सवारी लटकी होंगी।

एक बार मोहित दिल्ली के इंडिया गेट पर लगी बाल प्रदर्शनी जाते समय बस पकड़ने के लिए अपने तीनों बच्चों के साथ स्टैंड पर आकर खड़े हुए। बस स्टैंड पर पहले से खड़ी भीड़ देखकर उसका दिल बैठा जा रहा था। अगर बस आ भी गयी तो उन्हें चढ़ने कौन देगा। मियां बीवी और तीन बच्चे। इनमें सबसे बड़ा बच्चा था मोहित की 5 वर्षीय पुत्री। जेब में मात्र 200 रूपए थे। छोटा एक वर्ष का लड़का उसकी पत्नी राधा की गोद में और बड़ा लड़का रोहित की उंगली पकड़ साथ में खड़ा था। पुत्री माया भी साथ में खड़ी थी। माया ने दूर से टैक्सी आती हुई देखी और रोकने के लिए हाथ दे दिया। ड्राइवर ने टैक्सी रोक दी और झट से पूछा – कहां जाना है?

'इंडिया गेट' माया ने उसी तत्परता से उत्तर दिया।

'बैठो।'

मोहित ने माया को समझाया कि वे टैक्सी में नहीं बैठ सकते। लेकिन माया के पास समझाने के लिए तर्क भी था।

'पापा देखो! इसमें काफी जगह है। पप्पू तो मम्मी की गोदी में रहेगा। राजू आप दोनों के बीच में बैठ जाएगा और मैं आगे। इस तरह हम टैक्सी में बैठ सकते हैं।' इस ड्रामे का स्टैंड पर अन्य यात्री खड़े–खड़े आनन्द ले रहे थे। तब तक माया आगे की सीट पर बैठ चुकी थी और मोहित के पास अब इससे बचने का कोई उपाय नहीं था। माया जिस खुशी और कौन्फीडेंस से टैक्सी में बैठ इतरा रही थी, वह देखते ही बनता था।

जैसे–जैसे मानव आयु की अगली सीढ़ी पार करता है उसका ध्यान अपने से हटकर बाहरी दुनिया में झांकने लगता है। मोहित ने भी अपने अतीत में झांका जब वह कॉलेज में पढ़ता था। उसके सामने सबसे अलग एक ही चेहरा उभर

कर आया, आशा का। उसके पड़ोस में रहने वाली आशा का। वो उसकी हम उम्र थी। जिसे मोहित प्यार करता था। अजीब और पागल–सा प्यार। रोहित और आशा कभी मिल नहीं पाते थे। बस प्रेम पत्रों के आदान–प्रदान से ही अपने प्यार का इज़हार करते थे।

एक प्रेम पत्र की याद करके मोहित की हंसी छूट गई। उसने 64 पृष्ठ की कापी खरीदी थी। आशा को पत्र लिखने बैठा तो कापी के पूरे 64 पेज ही भर दिये। अवसर देखकर जब आशा अपने घर की बालकनी में अकेली बैठी तो एक छोटे बच्चे के हाथ उस कापी को आशा के पास भिजवा दिया। आशा की मुसीबत आ गई। न तो वह इस पत्र को जला सकती थी, न ही फाड़कर कूड़े में डाल सकती थी। अगर छिपाती तो कहां छुपाती? उसे पकड़े जाने का डर जो था। अगले 10 दिन के लिए क्रिसमस पर कॉलेज बंद था। आशा ने अन्ततः पत्र जलाया तो पूरा कमरा धुआं से भर गया था और बाहर शोर मच गया था।

तभी मोहित को याद आया मौत से जीवन का पहला सामना। कॉलेज से पूरी भरी बस शिमला ट्रिप पर गयी थी। पहाड़ी से नीचे लटक कर बस गिरने वाली थी। सब रोने लगे थे। मगर मोहित नहीं डरा था। उसको केवल फिक्र हो रही थी सिर्फ आशा की। आशा उसके बिना कैसे रहेगी। वह तो उसकी मौत की खबर सुनकर रोती ही रहेगी। 'काश! ये जात–पात का चक्कर नहीं होता तो मेरी और उसकी शादी हो गई होती। आज तक भी तो हम एक दूसरे को नहीं भूल पाए हैं।'

जवानी की दहलीज़ पर प्रवेश करते ही मनुष्य आसमान से तारे तोड़ने की तमन्ना करने लगता है। तभी मोहित को अपनी जवानी का वो लम्हा याद आया जिससे उसका रोम–रोम सिहर उठा। मौत और जीवन के बीच बस 5–10 सेकेन्ड का फैसला बाकी था। मोहित अपनी जवानी के शिखर पर था। उम्र लगभग 35 साल की थी।

भारतीय वायु सेना के एक विमान में केवल सात यात्री थे। मोहित और मोहन सबसे पिछली सीट पर बैठे थे। स्क्वाड्रन लीडर गणपति सुब्रामणियम भारतीय वायु सेना के सर्वोत्तम पायलटों में से एक था। उसका चेहरे पर कॉन्फीडेंस का दमदमाता तेज चारों तरफ फैलता था। बम्बई से टेक ऑफ होते ही विमान आकाश को छूने लगा।

पलक झपकते ही विमान 8,900 मीटर से ऊपर पहुंच गया। आकाश में सफेद और घने काले अलग–अलग आकृति के बादल जैसे मदहोश होकर विचरण कर रहे थे। लगता था जैसे पूरा आसमान केवल उनकी अपनी धरोहर हो और खुले आसमान पर केवल उन्हीं का साम्राज्य हो। पूर्व दिशा से आती सूरज की किरणें बादलों को बेध कर विमान के शीशों का चुम्बन ले रही हो। पिछली सीट पर बैठे मोहित और मोहन इस आलौकिक नजारे का आनन्द ले रहे थे।

तभी मोहित के मुंह से निकला – 'गणपति के लिए विमान विमान नहीं है, बल्कि एक मात्र खिलौना है। तीन साल पहले ही तो उन्हें अति विशिष्ट सेवा मेडल से सुसज्जित किया गया था... ।'

अभी मोहित की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि उसने आगे बढ़ते हुए कहा – 'आसमान पर बादलों और पक्षियों का नहीं अपितु गणपति का साम्राज्य है।'

'अरे! नीचे देखो खंडाला का दृश्य कितना मनोहर लग रहा है। टाइगर प्वाइंट यहां से साफ नजर आ रहा है। गणपति में एक कला–कौशल है, वह चाहे तो दो

पर्वतमालाओं के बीच में से विमान को उड़ते चील की तरह निकाल सकता है।' मगर यह क्या? अचानक सभी सवारों की धड़कन रूक गई और उनके होश उड़ गए। विमान कुछ ही क्षणों में जमीन पर गिर कर चूर–चूर होने वाला था या आग पकड़ कर पेपर की तरह भस्म होने वाला था।

अचानक विमान का दायां दरवाजा टूट कर, एक प्लेट की तरह हवा में तैरने लगा। विमान की हालत ठीक ऐसे हो गई जैसे आसमान में उड़ते हुए बाज की बन्दूक की गोली लगने से होती है। विमान अब पूना की तरफ नहीं जमीन की तरफ जा रहा था।

गणपति ने कॉकपिट से आवाज दी – 'सीट को जोर से पकड़ कर रखें। सब सीट बेल्ट टाइट से बांधें और टूटे हुए द्वार से अपने आपको बाहर खिंचने से बचाएं।'

सभी को ऐसा लग रहा था जैसे कि दरवाजे से बाहर अब गिरे...अब गिरे... और घायल चील की तरह हवा में लुढ़कते हुए मर जाएंगे। विमान की हालत ठीक उस नाव की तरह हो गई थी जैसे समुद्र में तूफान आने से हो जाती है। सभी यात्रियों को ऐसा लग रहा था कि अब मरे... अब मरे...।

58 वर्षीय चीफ को अजीब विचार आ रहा था। वे प्रार्थना करने लगे थे – 'हे भगवान! मेरी डैड बॉडी को मेरे बच्चों को जरूर नसीब करा देना, ताकि मेरा दाह–संस्कार उचित विधि से किया जा सके।'

मोहन को अपनी एकमात्र बेटी का ध्यान आया, जो पूना में एम.ए. अर्थशास्त्र की अन्तिम वर्ष की परीक्षा देने वाली थी। 'वह तो अब अनाथ हो गई। अपना जीवन अब कैसे बिताएगी? उसको तो पता नहीं, मेरी मौत की खबर कब लगेगी? वह तो टी.वी. भी नहीं देखती और अखबार भी नहीं पढ़ती। उसे तो अपनी पढ़ाई और पिता के प्यार के अलावा कुछ सूझता ही नहीं। हे ईश्वर! अब तुम्हें ही इस बच्ची को संभालना पड़ेगा। मैंने आज से अपनी बेटी को तुम्हारे हवाले कर दिया है।'

पायलट गणपति और को–पायलट रामपाल को जीवन और मृत्यु के बारे में सोचने की फुर्सत ही कहां थी। वे तो विमान को संभालने और उसे सुरक्षित पूना पहुंचाने की इस कठिन जंग को जीतने के प्रयास में जुटे हुए थे।

तीसरी सीट पर बैठा स्क्वाड्रन लीडर राहुल, श्रीमती और श्री बर्मन को, जो पहले से ही बेहोश हो चुके थे, जोर से अपने बांहों में जकड़े हुए था। अन्यथा कभी के टूटे दरवाजे से वे बाहर जा चुके होते। उसने अपनी सारी ताकत और सोच तो उन्हें बचाने में लगाई हुई थी। मोहित सामने हो रहे मौत के तांडव से भयभीत था और सोच रहा था – 'मैं कितना लापरवाह हूँ। तीन साल से खाली योजनाएं ही बनाता रहा। अभी तक प्लॉट पर मकान भी नहीं बनाया। अब तो प्रभा को मेरा सरकारी मकान खाली करना पड़ेगा। बेचारी तीन बच्चों को लेकर कहां जाएगी? मेरी ससुराल से भी तो उसको कोई मदद की आशा नहीं है।'

तभी उसे ख्याल आया कि उसने अपने जीवन बीमे की तीन महीने से किस्त नहीं भरी है। 'मेरी बीमा पॉलिसी का एक धेला भी बच्चों को नहीं मिलेगा। हे ईश्वर! अब की बार किसी तरह मुझे बचा लो। आगे से सबका भविष्य सैट करके रखूंगा।' मोहित मौत से डरा हुआ था।

तभी अचानक चमत्कार हुआ। विमान जब जमीन से सिर्फ 500 मीटर की ऊंचाई पर था और अगले कुछ पलों में जमीन से टकराने

वाला था, अचानक ऊपर उठा। गणपति ने इस समय तक उसे संभाल लिया था। उसने 20 मिनट के बाद विमान को पूना हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतार दिया। सबकी आँखों में आंसू थे। सभी गणपति को भगवान समझकर उसका धन्यवाद दे रहे थे। उसकी प्रशंसा कर रहे थे... उसके साहस और कौशल के लिए।

जो रोहित 35 वर्ष पूर्व मृत्यु के करीब से देखकर इतना डर रहा था, वही आज हार्ट अटैक से अपने जीवन का अन्त होते देख रहा था। आज उसे मौत का कोई खौफ नहीं सता रहा था। वह मानसिक और शारीरिक दोनों दृष्टि से मृत्यु के लिए तैयार था। फिर भी उसे एक अजीब बेचैनी हो रही थी। उसकी सांस जैसे घुटी जा रही थी। वो करे तो क्या करे?

यही सवाल उसने लगभग 45 वर्ष पूर्व अपनी प्रेमिका आशा से पूछा था। आशा का भाई और पिता दोनों ही उसे घर में बंद करके रखते थे। कभी–कभी मारते भी थे। तब उसने आशा से पत्र लिखकर पूछा था कि जब तुम कभी रात में दुखी और बेचैन होती हो तो क्या करती हो?

आशा ने जवाब में लिखकर भेजा था – 'मैं ऐसे में उस दिशा में मुँह कर गहरी लम्बी सांसे लेने लगती हूँ, जिस दिशा से तुम्हारी छोड़ी हुई सांसे मेरे होठों तक पहुंचती हैं। ऐसा करते–करते लेटी हुई उस तरफ करवट करके लेट जाती हूँ, जिस दिशा में तुम रहते हो। ऐसा करने से तुम्हारे और मेरे बीच की दूरी कुछ और कम हो जाती है और मुझे तुम्हारे कुछ और करीब आने का एहसास होने लगता है।'

साढ़े चार दशकों के बाद मोहित को इस बात का अर्थ आज पहली बार समझ में आया था। उसने पहली बार इस क्रिया को अपनाया। आशा अब अपने परिवार के साथ चेन्नई में रहती थी। मोहित का ड्राइंग रूम मकान के दक्षिण में था। वह उठ कर ड्राइंग रूम में गया। सोफे को सरका कर ड्राइंग रूम के दक्षिण दिशा वाली खिड़की के पास ले आया। मोहित ने खिड़की खोल दी। खिड़की की तरफ मुंह करके सोफे पर लेट गया। लम्बी और गहरी सांस भरने लगा। मोहित को एहसास हो रहा था जैसे आशा द्वारा छोड़ी हुई सांसें वातावरण में मिल रही हैं और उसका एक अंश सांस लेते समय उसके मुंह में प्रवेश करके उसके दिल और दिमाग को चैन और शीतलता प्रदान कर रहे हैं। वह गहरी सांसें लेता रहा और इस सुखद चैन का अनुभव करता रहा।

उसको कब नींद आ गई, इसका मोहित को पता ही नहीं चला।

# आत्मविश्वास

**पवन कुमार**
**वरिष्ठ लेखापरीक्षक (दावा अनुभाग)**
**कार्यालय महालेखाकार (ले.प.)-II,**
**तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई–600018**

एक बार एक व्यवसायी पूरी तरह से कर्ज में डूब गया था और उसका व्यवसाय बंद होने की कगार पर था। वह बहुत चिंतित व निराश होकर एक बगीचे में बैठा था और सोच रहा था कि काश कोई उसकी कंपनी को बंद होने से बचा लें।

तभी एक बूढ़ा वहां पर आया और बोला – आप बहुत चिंतित लग रहे हैं, कृपया अपनी समस्या मुझे बताइये शायद मैं आपकी मदद कर सकूँ। व्यवसायी ने अपनी समस्या उस बूढ़े व्यक्ति को बताई। व्यवसायी की समस्या सुनकर बूढ़े व्यक्ति ने अपनी जेब से चेक बुक निकाली और एक चेक लिखकर व्यवसायी को दे दिया और कहा – तुम यह चेक रखो और ठीक एक वर्ष बाद हम यहाँ फिर मिलेंगे तो तुम मुझे यह पैसे वापस लौटा देना।

व्यवसायी ने चेक देखा तो उसकी आँखें फटी रह गई। उसके हाथों में 50 लाख का चेक था जिसपर उस शहर के सबसे अमीर व्यक्ति बिल गेट्स के हस्ताक्षर थे। उस व्यवसायी को यह विश्वास नहीं हो पा रहा था कि वह बूढ़ा व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि उस शहर का सबसे अमीर व्यक्ति बिल गेट्स था। उसने उस बूढ़े व्यक्ति को आस–पास देखा लेकिन वह व्यक्ति वहां से जा चुका था। व्यवसायी बहुत खुश था कि इन पैसों से अपने व्यवसाय को फिर से खड़ा कर देगा।

लेकिन उसने निर्णय किया कि वह उस चेक को तभी इस्तेमाल करेगा जब उसे इसकी बहुत अधिक आवश्यकता होगी और उसके पास कोई दूसरा उपाय नहीं होगा। उस व्यवसायी की निराशा और चिंताएं दूर हो चुकी थी। अब वह निडर होकर अपने व्यवसाय को नए आत्मविश्वास के साथ चलाने लगा और उसने उस चेक का इस्तेमाल किए बिना ही अपना सारा कर्ज चुका दिया।

ठीक एक वर्ष बाद व्यवसायी वही चेक लेकर उस बगीचे में पहुंचा जहां पर एक वर्ष पहले वह बूढ़ा आदमी उससे मिला था। वहां पर उसे वह बूढ़ा आदमी मिला, व्यवसायी ने चेक वापस करते हुए कहा – धन्यवाद, जो आपने बुरे वक्त में मेरी मदद की। आपके इस चेक ने मुझे इतनी हिम्मत दी कि मेरा व्यवसाय फिर से खड़ा हो गया और मुझे इस चेक का उपयोग

करने की कभी जरूरत ही नहीं पड़ी।

वह अपनी बात पूरी करता तभी वहां पर पास के ही पागलखाने के कुछ कर्मचारी आ पहुंचे और उस बूढ़े आदमी को पकड़कर पागलखाने ले जाने लगे। यह देख व्यवसायी ने कहा – यह आप क्या कर रहे हैं? आप जानते हैं यह कौन है? यह इस शहर के सबसे अमीर व्यक्ति बिल गेट्स हैं।

पागलखाने के कर्मचारी ने कहा – यह तो एक पागल है जो खुद को बिल गेट्स समझता है। यह हमेशा भागकर इस बगीचे में आ जाता है और लोगों को कहता है कि वह इस शहर का मशहूर व्यक्ति बिल गेट्स है। हमें लगता है कि इसने आपको भी बेवकूफ बना दिया।

वह व्यवसायी पागलखाने के कर्मचारी की बातें सुनकर सुन्न हो गया। उसे यकीन नहीं हो पा रहा था कि वह व्यक्ति बिल गेट्स नहीं था और एक वर्ष से जिस चेक के दम पर वह आराम से अपने व्यवसाय में जोखिम उठा रहा था वह नकली था।

वह काफी देर सोचता रहा फिर उसे समझ में आया कि यह पैसे नहीं था, जिसके दम पर उसने अपना व्यवसाय वापस खड़ा किया है बल्कि यह तो उसकी निडरता और आत्मविश्वास था जो उसके भीतर ही था।

"हमारे भीतर समस्त ब्रह्माण्ड की शक्ति निहित है जिसके बल पर हम कुछ भी कर सकते हैं लेकिन समस्या यह है कि हम कभी नकारात्मकता, निराशा और डर के अंधकार में इतना डूब जाते हैं कि हम भूल जाते हैं कि हमारे भीतर भी वो क्षमता है, जिससे हम कुछ भी कर सकते हैं।"

# वेदी की विधवा

**मेहरबान सिंह नेगी**
**वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)**
**भूखण्ड 191 (एफ–2), सैक्टर–4, वैशाली**
**गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश–201010**

द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व की बात है। हमारे गांव कल्सी, पट्टी डबरालस्यूं, पौड़ी गढ़वाल में एक नारायणसिंह नेगी नाम के भाई थे। वे अपने गांव के रिश्ते में काका बख्तावर सिंह नेगी जी, जिनका किशोरावस्था में विवाह हो चुका था, के आयुवर्ग में थे। वे दोनों युवक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के क्रांतिकारी विचारों से अत्यंत प्रभावित थे। उन दिनों आज़ाद हिन्द फौज में भर्ती खुली थी। वे दोनों अपने पड़ोसी गांवों के मित्रों के साथ भर्ती होने के लिए गए और नियत चयन प्रक्रिया के उपरांत चयनित भी हो गए।

भर्ती अधिकारी ने आदेश दिया, 'सभी चयनित युवा एक सप्ताह के अंदर कलकत्ता कार्यालय में हाजिर हो जाएं। वे जो चयनित न हो सके उनको सलाह है कि वे पूरी तैयारी करके पुनः प्रयास करें। शुभकामना, जयहिन्द।'

सभी अभ्यर्थियों ने एक साथ पुरजोर उत्तर दिया, 'जयहिन्द'। प्रतिध्वनित स्वरों की गूंज समीप–वर्ती वातावरण के अतिरिक्त अंग्रेज अधिकारियों के कानों तक पहुंच चुकी थी। आसपास के गांवों के सभी मित्र एक साथ वापस आए। चेलूसैण नामक स्थल से आगे उनका रास्ता अलग–अलग दिशाओं को जाता था। अतः उन्होंने अपने गांवों की राह पकड़ने से पूर्व एक मंत्रणा की।

थोगदार (स्थानीय सूबेदार) अवतार सिंह रावत जी के बेटे श्री संग्राम सिंह रावत जी ने सर्वसम्मत निर्णय सुनाया, 'मित्रों, घर पहुंचते ही आज सायंकाल तक जाने की तैयारी कर लेंगे। कल सवेरे सूरज की पहली किरण प्रस्फुटन से पूर्व इसी जगह एकत्र होंगे और कलकत्ता के लिए प्रस्थान कर जाएंगे।' तदुपरांत वे अलग–अलग दिशाओं में स्थित अपने गांवों के लिए प्रस्थान कर गए।

नारायण दा ने नदिया के पार गांव के सामने वाली पहाड़ी से उतरते हुए जोर से आवाज दी, 'मां, बहुत भूख लगी है।'

वे नदिया तट पहुंचे और नहाने लगे। जब तक वे नदिया से कुछ ऊंचाई पर बसे अपने गांव पहुंचे तब तक दिन के तीन बज चुके थे। दोनों पड़ोसी गरमागरम भोजन करने के बाद अपना सामान झोले में रखने लगे। नारायण दा ने पाथेय के लिए जौ का सत्तू, अरसा और चूड़ा भी पोटलियों में रख लिए थे। वे जिद्द करते हुए अपनी मां

से टिकट के लिए पैसे मांगने लगे ताकि चार बचे सुबह, जब मुर्गा बांग दे, वे उठें और प्रस्थान कर जाएं।

उनकी मां ने पास बिठाकर उन्हें समझाया, 'बेटा, कल–परसों तुम्हारी शादी है। गांव की बहू–बेटियों ने साठी ओखली में कूट कर चावल साफ किए, गेहूं धर्म घाट में पिसवाया, दाल दली, अरसा की मिठाई घी में तली और पत्तल–डोने भी बना दिए हैं। कुछ ग्रामवासी युवा भोजन व्यवस्था और नवयुवक स्वागत द्वार एवं बैठक तैयार करने में व्यस्त हैं। बहू–बेटियां नदी से गागरों में पानी भर कर ला रही हैं। अतिथि सत्कार के लिए केवल एक घण्टा बाकी है। कल सुबह मंगल स्नान के बाद बारात प्रस्थान करेगी और परसों लौटेगी। दो–तीन दिन रूक जाओ, फिर चले जाना। वरना, सारा परिश्रम और खर्चा व्यर्थ जाएगा।'

उनके पिताश्री के कानों में भणक पड़ी तो उन्होंने भी हर प्रकार से समस्या को सुलझाने का प्रयास किया। लेकिन, नारायण दा के कानों में तो सिर्फ नेताजी के शब्द गूंज रहे थे – 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।'

नारायण दा ने एक तीक्ष्ण शब्द वाण छोड़ा, 'मैं न गया तो मेरे सभी साथी कहेंगे नारायण तो सिंह नहीं सियार का बच्चा निकला। तब कितना बुरा लगेगा? हमारे गांव के बख्तावर काका, कोठार गांव के संग्रामसिंह रावत, बमोली गांव के चतरसिंह रावत, दि खेत गांव के बिक्रमसिंह बिष्ट और अन्य समीपवर्ती गांवों के मेरे चयनित साथी आगामी विहानश्री में प्रस्थान कर जाएंगे।'

उनके पिताश्री ने अपने बड़े बेटे झाबर सिंह नेगी जी को कहा, 'बेटा जा, हमारे धनसिंह काकाश्री को बुला के ले आ। पिछली पीढ़ी के पुरूषों में सिर्फ वे ही जीवित हैं। वे पढ़े–लिखे बुजुर्ग और सुलझे व्यक्ति हैं। वे इसको ठीक से समझा देंगे।'

भाई झाबर सिंह, दादाश्री को गले फंसी उस समस्या से अवगत कराने के बाद बोले, 'दादा जी, आप तो जानते हैं कि मेरे पिताश्री काम में व्यस्त हैं। उन्होंने आपको आपातकाल तुल्य समस्या को सुलझाने के लिए शीघ्र बुलाया है।'

दादाश्री ने अपने मन में समस्या के समाधान के लिए एक योजना बनाई। वे तत्काल अपने भतीजे बख्तावर के पास जाकर बोले, 'बेटा शम्भू, तुम जानते हो कल–परसों नारायण की शादी है। दोनों पक्षों की ओर से सब तैयारियां हो चुकी हैं। वह कल सुबह तुम्हारे साथ जाने की जिद्द कर रहा है। आज़ादी के दीवानों को मैं कदापि न रोकूंगा। मेरी सिर्फ एक सलाह है कि दोनों परसों–नरसों चले जाना। अन्यथा, एक ओर दोनों पक्षों की आर्थिक हानि तो जो होगी सो होगी, परन्तु ऊपर से जग हंसाई भी होगी।'

अंततः बख्तावर सिंह नेगी जी, अपने काकाश्री की बात मानते हुए, एक दिन रूकने के लिए मान गए। इसके बाद वे तीनों लोग नारायण दा के पास गए, बातें हुई और नारायण दा ने एक शर्त रखी कि यज्ञ की वेदी में फेरे होने के एक घंटे बाद वे प्रस्थान कर जाएंगे। दादाश्री ने सोचा कि यदि समस्या का समाधान न हो रहा हो तो मध्य मार्ग निकालने के लिए 'लाटा के बाटा' भी चलना पड़ता है। इस बिन्दु पर बात तय हुई और पड़ोसी गांव में सूचना देने नारायण दा के चचेरे भाई खुशहालसिंह नेगी जी को भेज दिया। वे गोली की रफ्तार से उनके ससुराल के गांव गए, स्याह पट्टा (सलाह पत्र) थमाया

और सूचना देकर लौट आए।

तनिक परिवर्तित कार्यक्रम के अनुसार ही वैवाहिक कार्य सम्पन्न हुआ। रात्रिकाल में फेरों के बाद विहानश्री में गौ–कन्या दान हुआ। स्थानीय परम्परा से हटकर तारों की छांव में बारात की विदाई कर दी गई। विगत दिन के ठीक विपरीत क्रम में भरी बारात का प्रतीक आगे लाल झंडेवाला, फिर तुरही वाले, मसकिया, बाजा वाले, दुल्हन की डोली, चंवर डुलाने वाला, दूल्हा की पालकी, पण्डित जी, बारातियों की लम्बी कतार और सबसे पीछे विगत दिन के ठीक उल्टे क्रम में सफेद ध्वज वाला बालक था। उनके ससुराल से एक फलांग की दूरी पर प्रथम मोड़ आया। दूल्हा राजा पालकी से उतरे,, फटाफट कपड़े बदले और सेहरा, माला, शेरवाली, सूती धोती व खुखरी सब पालकी में रख दिए। वे दोनों अपने सपनों की नई मंजिल की तलाश में लेफ्ट–राइट डग भरते हुए चल पड़े।

दोनों कलकत्ता पहुंचे, साथियों से मिले और अगले दिन गहन सैनिक प्रशिक्षण के लिए उन्हें जापान भेज दिया। उन दिनों जापान और नेताजी के मध्य एक दूसरे की मदद करने की सहमति बनी थी। अतएव, आजाद हिन्द फौज द्वितीय विश्व युद्ध में जापान का साथ दे रही थी। प्रशिक्षण के बाद उनकी यूनिट को बर्मा में जारी विश्व युद्ध में भाग लेने के लिए रवाना कर दिया गया।

इधर नई नवेली दुल्हन बौजी (भौजाई) रोज पायल छनकाती, सुबह–सवेरे मंदिर जाती, घण्टी बजाती, धूप–दीप जलाती, जल चढ़ाती और आंखें मूंदे हाथ जोड़कर मन ही मन भगवान शिव से कुछ मांगती। यह तो वे जाने या अन्तर्यामी ही जाने कि वे क्या वर मांगती थीं लेकिन लोगों का यही अनुमान था कि अपने पति के विजयी होकर सकुशल लौट आने की कामना करती होगी।

द्वितीय विश्व युद्ध में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों ने बर्मा की रणभूमि में अत्यंत वीरता का परिचय दिया। वर्षों तक चले उस भीषण युद्ध में लगभग आधे वीरगति को प्राप्त हुए, कुछ घायल हुए और कुछ अन्य बन्दी बना लिए गए।

अपने माता–पिता के स्वर्ग सिधारने के बाद भाई झाबर सिंह ने उनका अंतिम संस्कार किया। युद्ध समाप्ति पर तीन महत्वपूर्ण वैश्विक घटनाएं घटी। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई, भारत का विभाजन हुआ और भारत सहित कई देश अंग्रेजी दासता से अगस्त 1947 के आसपास आजाद हुए। तद्नन्तर युद्ध बन्दी जेलों से रिहा होकर घर पहुंचने लगे। समस्त ग्रामवासी टकटकी लगाकर देखते रहते थे कि अपने छोटे से गांव के दो जवान भी आते ही होंगे। उन दोनों में से एक फौजी गांव के सामने वाली पहाड़ी पगडण्डी से पिट्ठू लिए उतरता हुआ दिखाई दिया। गांव के युवाओं में से कुछ कहते कि वह नारायण दा है तो कुछ कहते कि बख्तावर दा है। गाजे–बाजे के साथ दोनों के स्वागत की तैयारियां थी। लेकिन, जब उन्होंने देखा कि एक साथी लौटकर नहीं आया तो सेनानियों की स्वागत कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया।

हवलदार बख्तावरसिंह नेगी जी के घर पहुंचने पर भाई झाबर सिंह ने पूछा, 'काकाश्री, मेरा भाई नारायण कब आएगा?'

हवलदार जी बोले, 'भीषण युद्ध के दौरान नारायण हमारे साथ मोर्चे पर था। दोनों ओर के सैनिक

वीरगति को प्राप्त हुए। कुछ घायल भी हुए। बर्मा के जंगलों में हमारे पास न तो भोजन बचा था और न ही तामलेट में पानी शेष था। किसी तरह कंदमूल खाकर गुजारा कर रहे थे। सायंकाल जब गोलियां कुछ थमी, हम पानी की तलाश में निकले और घायलों के लिए अपनी तामलेट भर लाए। पानी लेकर अपने घायल साथियों की तलाश में जुट गए। जो कराह रहे थे वे मिल गए। उन्हें पानी पिलाया और प्राथमिक उपचार दिया। तलाश जारी थी लेकिन जो मूर्छित थे उनका घनी झाड़ियों में पता नहीं चला।'

अगले दो–तीन दिन भाई झाबरसिंह ने पड़ोसी गांवों के बर्मा के कारागारों से रिहा होकर लौटे युद्ध बंदियों से पता किया। उन्होंने जो जानकारी दी वह भी हवलदार जी की जानकारी से मेल खाती थी। लेकिन, वे तनिक आशान्वित थे कि शायद भाई लौट आएगा। एक दिन आजाद हिन्द फौज के कार्यालय से पत्र आया कि जितने युद्ध बंदी विदेशी कारागारों में कैद थे सब छूट कर आ चुके हैं और शेष लापता सैनिकों के जीवित होने की कोई संभावना नहीं है। चिंता की लकीरें बढ़ती जा रही थीं और उनके जीवित लौटने की आस अत्यंत धूमिल होती जा रही थी।

स्वाभाविक था कि मंथा देवी बौजी (भौजाई) के विवाहित जीवन के कुछ वर्ष आशा–प्रत्यशा में बीते और शेष लम्बी अवधि चिंता में बीती। लेकिन, यह भी सत्य है कि उनके जेठ जो कमाते उन्हीं के पास देते। उनकी जेठानी खेतों में काम करती, घास एवं लकड़ियां लाती और मंथा देवी बौजी घर पर उनके बच्चों को नहलाती–धुलाती, खिलाती–पिलाती, सुलाती और घर का सारा कामकाज संभालती। अतः बच्चों का अपने माता–पिता से अधिक चाची से लगाव था। उन्हें कुछ चाहिए तो चाची से मांगते। वे अपने माता–पिता को प्रणाम करने से पहले चाची के चरण छूते।

एक बार की बात है कि मंथा देवी बौजी बहुत बीमार पड़ गई और जब वे वैद्यराज हरिदत जी की दवाओं से स्वस्थ न हुई तो उन्होंने सोचा ईष्टदेव रूष्ट हो गए होंगे। वे उचाणा लेकर (चावल में पैसे डालकर) पुछेर से पूछने गई।

पुछेर (वाकी/भूत–भविष्य के बारे में वाक बोलने वाले) ने आसन लगाया, आदेश–आदेश कहते हुए अपने गुरू से आदेश मांगा, आदेश प्राप्ति पर चावलों से खेलते हुए बताया, 'एक दृश्य मेरी आंखों के सामने आ रहा है। आपके पति विदेशी रणभूमि में कई दिनों तक घायल पड़े रहे। उनके पिट्ठू में न तो अन्न–जल शेष था न ही वे ऐसी स्थिति में थे कि कहीं से प्राप्त कर सकें। ऐसी स्थिति में यद्यपि वे आशान्वित थे कि नेता जी और उनके सेनानियों का स्वतंत्रता का संकल्प सिद्धि तक पहुंचेगा लेकिन उनकी अपनी दृष्टि से वह दिन देखने की आशा धूमिल होती जा रही थी। अंतिम समय में उसका चंचल मन अपनी जन्म भूमि, परिवार और विशेषकर युवा जीवन संगिनी के बारे में सोचने लगा। वे कुछ दिन बाद वीरगति को प्राप्त हो गए।'

पुराने लोग बताते थे कि बौजी की आंखों से सिर्फ दो आंसू निकले क्योंकि उन्होंने सुना था कि वीरों के बलिदान पर अधिक आंसू बहाने से उनके बलिदान का महत्व कम हो जाता है। वे कल्पना करने लगी कि घायल अवस्था में उन्होंने जो कष्ट सहा वह असह्य रहा होगा। उनके उस कष्ट के सामने अपना कष्ट कुछ भी नहीं है। गौरव की बात है कि खून देकर आजादी लेने

का उनका लक्ष्य प्राप्त हो चुका है। काश, वे भी हमारी तरह आजादी की सांस ले पाते। लेकिन, विधि को यही मंजूर रहा होगा।

वाकी पुनः वाकने लगा, 'क्या आपके घर के समीप एक अनार वृक्ष है?'

बौजी बोली, 'सत्य वचन प्रभु, हां है। हमारे घर के सामने वाले खेत में है। जो ददिया ससुर जी जीवित हैं, उन्हीं का है।'

वाकी बोला , 'आपके पति की आत्मा पक्षी का रूप धारण कर कई बार अनार वृक्ष पर आती है और परिवार को देखकर लौट जाती है। अमर शहीद की आत्मा भटक रही है। आत्मा परिवार से मिलना चाहती है। आप रणभूत नचाओ तो ही आपके पति की आत्मा को स्वर्ग में स्थान प्राप्त होगा।'

सुश्री मंथा देवी बौजी ने सोचा कि आत्मा की शांति के लिए चैत्र मास में या भादों मास में ही रणभूत की पूजा की जा सकती है। दसमरी गांव के कल्वा नामक जागरी को बुलाया। उसने ढ़ोलक को लांकुड से बजाते हुए काव्यात्मक लय ताल के साथ पूजा कर मृत्युलोक में अमर सेनानी की भटकती आत्मा का आह्वान किया। कुछ देर बाद आत्मा अपनी घरवाली के शरीर में प्रवेश कर गई। रणभूमि का वह दृश्य पुनर्निर्मित होने लगा। रणभूत की आत्मा ऐसे तड़फने लगी जैसे रणभूमि में गोली लगी हो। वह आत्मा उस घटना की कहानी जुबानी बताने लगी। वह रणभूत आत्मा 'पानी–पानी' कहती भूमि में ऐसे तड़फ रही थी जैसे बर्मा के घने जंगल में वह भाई बिन अन्न–जल और उपचार के तड़फा होगा।

कुछ पल शहीद की आत्मा भूमि में तड़फती रही। एक लम्बी मूर्छा के बाद होश में आने पर मंद स्वर में बोली, 'पानी दो।' लोगों ने पानी की गागर से एक लोटा पानी दे दिया। रणभूत की आत्मा ने वह जल पिया और लोटा धरा पर रख दिया।

आत्मा ने भूमि पर लड़फने की अवस्था में पुनः आवाज दी, 'मैं कई दिनों से प्यासा हूं। मुझे, और पानी पिला दो।'

एक लोटा शुद्ध जल और पिला दिया। आत्मा 'पानी–पानी' कहती तड़फ रही थी। वह आत्मा 20 लीटर पानी पी गई। फिर शहीद की आत्मा अपने परिवार से गले मिलकर प्रसन्न मुद्रा में हाथ जोड़कर स्वर्गारोहण पर निकल पड़ी। इसके बाद वार्ता और ढोलक बजनी बन्द हो गई। बौजी ने संपर्क वार्ताकार (जागरी) को प्रणाम किया, और सामान्य हो गई।

उस दिन के बाद गांव वालों ने नारायण दा को शहीद मान लिया था। गांव के लोग उस मेरी मां की हम उम्र भाभी को आपस में बतियाते समय 'वेदी की विधवा' कहने लगे थे। उस 20 वर्षीय योवना बौजी को स्वतंत्रता सेनानी की पारिवारिक पेंशन की अल्प राशि मिलती थी। उन्हें बताया गया था कि यदि पुनर्विवाह करेंगी तो उनकी पारिवारिक पेंशन बन्द हो जाएगी। स्वाभाविक था कि उनका जीवन बहुत कठिनाइयों में बीता परन्तु उन्होंने, परिवार पेंशन की शर्त के कारण या अपनी सात जन्म के बंधन निभाने की सोच के कारण, जो भी रहा हो, कभी पुनर्विवाह करने की नहीं सोची। वे अंतर्मुखी थी अतः उनका मन कोई भी न पढ़ पाया।

वह भाभी जितनी धार्मिक स्वभाव की थी उतनी ही सामाजिक भी थी। गांव में कन्याओं की शादी में कन्यादान कर आती और सुख–दुःख में सबका साथ देती। एक

दिन मेरे दादाश्री धनसिंह नेगी जी का स्वर्गवास हो गया। वेदी की विधवा भाभी ने सोचा कि आज मृत दादाश्री के घर में चूल्हा तो नहीं जलेगा। बड़े तो भूख सहन कर लेंगे लेकिन छोटे बच्चों का क्या होगा। उन्होंने अपने घर में भोजन तैयार किया। मुझे और मेरे भाई पुष्कर को अपने घर के बच्चों के साथ भोजन करवाया। उनकी जेठानी का बड़ा बेटा बड़ा हुआ और फौज में भर्ती हो गया, दूसरा तकनीशियन है और तीसरा आसाम राइफल में कार्यरत है। बड़े भतीजे तीर्थ की शादी हुई परन्तु नव विवाहिता का आकस्मिक निधन हो गया। उसकी चाची ने बहुत सोच समझकर अपने शहीद पति के एक सेनानी साथी की बेटी से उसका पुनर्विवाह करवा दिया।

वेदी की विधवा भाभी का भतीजा तीर्थसिंह फौज से सेवानिवृत्त होकर लौट आया। वेदी की विधवा भाभी स्वर्ग सिधार गई। तीर्थसिंह नेगी ने अपनी चाची और चाचा की आत्मा की शांति के लिए देव भागवत का सप्ताह करवाया और पंडितों व ग्रामवासियों को एक सप्ताह तक भोजन करवाया। नारायण दा को तो हमने देखा भी नहीं था। उनके आजाद हिन्द फौज के साथी भी स्वर्ग सिधार चुके हैं। आजाद हिन्द फौज के सैनिक जो बर्मा से लौटे शारीरिक रूप से स्वस्थ थे, सच्चे सिपाही थे और हमारे माता–पिता से आयु में बड़े थे। लेकिन, उनके बच्चे हम से आयु में छोटे हैं।

कुछ युद्ध बन्दी जो रंगून (बर्मा) या दूसरे देशों से लौटे थे उनमें से एक पेंशनधारी ने अपनी विवाहिता के निधन पर पुनर्विवाह कर लिया। स्वतंत्रता सेनानी ने पेंशन ली, फिर दूसरी विवाहिता ने परिवार पेंशन एवं दूसरे लाभ लिए और उनके निधन के बाद छोटे बच्चों को परिवार पेंशन मिलती रही। एक अन्य स्वतंत्रता सेनानी इसी प्रकार सब सुविधाएं लेते रहे और उनके बच्चों, पोते–पोतियों और नाती–नातणियों ने ताम्रपत्र प्रस्तुत किया और स्वतंत्रता सेनानी के आश्रित होने के कारण आरक्षण का लाभ भी लिया। लेकिन, जिनको समझ कम थी या जिनके बच्चे न थे वे कई प्रकार के उपलब्ध लाभों से वंचित रह गए। जिन शहीदों की विधवाओं के बच्चे थे स्वाभाविक था कि उन्होंने शहीद के बच्चों को पालना ही अपनी जिम्मेदारी समझी और पुनर्विवाह की कभी नहीं सोची।

आप सोचते होंगे कि कहानी 'वेदी की विधवा' भाभी और अधिकांश स्वतंत्रता सेनानियों के इहलोक से परलोक की यात्रा पर निकलने के साथ ही समाप्त हो चुकी है तो आप शायद गलती पर हैं। आज मेरी संवेदनी लेखनी जो मेरे दिल के करीब हमेशा माथा ऊंचा कर रहती थी वह आज शहीदों, सेनानियों और उनके पारिवारिक जनों के प्रति, जिन्होंने जीवन भर अनेक मानसिक और शारीरिक वेदनाएं सही, नतमस्तक स्थिति में है और मेरी मनोस्थिति पढ़ते हुए श्वेतपत्र पर द्रवित अवस्था में कई प्रश्न चिह्न खड़ा कर रही है। इस लेखनी से उतरे कुछ मशि–प्रश्न, जो अनुतरित हैं, आप जैसे दक्ष और वयस्क पाठकों के प्रत्यक्ष समक्ष है।

प्रथम प्रश्न है कि वह भाभी जिसने वेदी के सात फेरे लेने के बाद अपने पति का न तो मुख और न ही सुख देखा, क्या उन्हें हम सुहागन या विधवा मान सकते हैं? वैसे तो कहते हैं कि मानो तो भगवान है ना मानो तो पत्थर है। आप में से अधिकांश का उत्तर हां में ही होगा। सरकार ने भी हां ही मान लिया था। इस श्रेणी की निस्संतान युवा महिलाओं को भी अन्य परिवार

पेंशनधारियों की सामान्य श्रेणी में रखा गया जबकि वे न तो सिंगल पैरेंट फेमिली, न तो न्यूक्लिर फेमिली और न ही संयुक्त परिवार की श्रेणी में आती थी। वे अकेली पड़ गई थी या हर प्रकार की आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर आश्रित जीवन निर्वाह कर रही थी।

एक योवना जिसने अपने चरम यौवन में अपने पति को देश सेवा में जाने के लिए न कभी टोका न रोका बल्कि प्रेरित किया, जिसके पति ने हंसते हुए देश के लिए महानतम बलिदान दिया हो और वह स्वयं इसी कुर्बानी के कारण संतानहीन रही हो क्या उसे पुनर्विवाह करने की स्वतंत्रता से निरुत्साहित/वंचित करना इस लिए उचित था कि उस अकेली महिला को अल्प राशि परिवार पेंशन मिलती थी? क्या उसकी मानवीय इच्छाशक्ति को दबाना या संतानोत्पति के अधिकार से वंचित रखना उचित था? उसकी भी इच्छा हुई होगी कि उसका भी पति हो ताकि सामाजिक सुरक्षा मिले, अपनी सासू मां की तरह वह भी वीरप्रसूता बने और उसकी संतान राष्ट्र सेवा करे एवं उसके बुढ़ापे का सहारा बने। परिवार पेंशनधारी युवा महिलाओं को यदि सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जाता या समाजशास्त्रियों ने ही उसके मानवीय अधिकारों की ओर ध्यान दिया होता तो उस युवती से विवाह करने को तो कई युवा या वे युवक जो योवन में विधुर हुए थे लालायित हो सकते थे। क्या उन्हें एक विकल्प दिया जा सकता था कि वह मुआवजा और सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत इकमुश्त राशि ले लें या परिवार पेंशन लेती रहें ताकि उसके मानवीय और मूल अधिकारों की रक्षा हो?

जरा सोचो ये कैसी सरकारें हैं जो सरकार की जिम्मेदारी बढ़ाने वाले माता–पिता और उसके बेटे–बहुओं को राशन, मुफ्त बिजली, पानी, गैस की सुविधाओं से लैस घर देने का वादा कर रही हैं? सबको 5 लाख का चिकित्सा कार्ड दे रही हैं, किसान सम्मान निधि दे रही है और ऋण माफ कर रही हैं? न्यायविदों को मानना है ऐसा कर राजनीतिज्ञ अपना हित साध रहे हैं और नागरिकों को अकर्मण्य बना रही हैं। ये कैसी विडम्बना है कि एक नागरिक धरना प्रदर्शन के दौरान एक पेड़ में चढ़ता है और आत्म हत्या कर देता है। सरकार, सरकारी खजाने से उसके परिवार को 1 करोड़ रूपये और एक सदस्य को सरकारी सेवा में नियुक्ति का वचन देती है। इसमें तो कहीं किंतु परन्तु नहीं है। एक करोड़ राशि पर तो साधारण ब्याज ही प्रतिमाह हजारों रूपये आ जाता है। क्या बलिदानी से तुलना में आत्महत्या करने वाले का परिवार अधिक प्यारा हो सकता है? यह कैसा न्याय है?

क्या इस श्रेणी की संतानहीन युवा युद्ध विधवाओं के लिए एक अलग व्यवस्था हो सकती है? मैं समझता हूं कि यदि ऐसी महिलाओं की संख्या अधिक होती तो वोट के सौदागर अवश्य प्रयास करते। विश्व में केवल हिन्दू शहीदों की कतिपय युवा निस्संतान परिवार पेंशनधारी विधवाएं ही क्यों पुनर्विवाह नहीं करती हैं इसका कारण तो समझना ही होगा? क्या हम उन परिवारों की महानतम कुर्बानियों के प्रति संवेदनी भाव से कुछ कर सकते हैं?

विमर्श के बाद निर्णय आपको करना है और आप में समाज–शास्त्रियों के अतिरिक्त राजधर्मी, मानव अधिकारों के चैम्पियन, संवेदी पाठक, प्रतिसंवेदी सरकारें, समानता के अधिकार के लिए प्रतिबद्ध दल, न्यायविद, सभी सम्मिलित हैं।

# अन्ततः

महेन्द्र 'मनुज'
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन)
8, 9 मंजिल, सी.ए.जी. बिल्डिंग
नई दिल्ली–110124

*मन का दीपक, किया न रोशन*
*मंदिर दीप जलाना क्या*
*अगर जुबाँ से फूल न बरसे*
*मस्जिद से चिल्लाना क्या...*

*पढ़ डालीं अनगिनत पोथियाँ*
*नमन अम्न को नहीं किया*
*ढायी आखर प्रेम–प्यार का*
*क्या समझा जो नहीं जिया*
*माँ को सब माँ ही कहते हैं*
*जाँ भी अलग नहीं होती*
*मुश्किल में सब ऊपर देखें*
*बनते हैं आँसू मोती*
*अंतिम जीत प्यार की होगी*
*आपस में टकराना क्या...*

*दुख का पल लम्बा होता क्यों*
*सुख की घड़ियाँ छोटी क्यों*
*खुद लिखते हो अपनी किस्मत*
*फिर कहते हो, खोटी क्यों?*
*जो बोलो सो तोलो पहले*
*सोच–समच कर अमल करो*
*सबसे पहले देश–धर्म हो*
*आओ ऐसी पहल करो*

*यदि भविष्य उज्ज्वल करना है*
*तो फिर समय गँवाना क्या...*

# निर्झर गान

सुभाष कुमार नेमा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
छत्तीसगढ़, रायपुर

*मैं नभ से उतरी, उतुंग शिखर पर,*
*श्रमवीरों के तप का परिणाम बनी।*
*मैं प्रवाहित अभिषेक में हर पलक्षण,*
*जीवन की गति का प्रतिमान बनी।*
*मेरे जल से अभिसिंचित जन–जीवन,*
*में कोटि–कोटि पल्लवित*
*फुल्ल कुसुमित दल हूँ।*
*वन उपवन की शोभा मुझसे,*
*मैं धान्य–धरा की प्राण सुधा,*
*प्रकृति का पोषण हूँ।*
*नन्हें जीवन की अठखेली,*
*मैं यौवन की तरुणाई हूँ।*
*अर्पण मुझमें, तर्पण मुझमें,*
*मैं मुक्ति का साधन हूँ।*
*कलुषित धाराओं को रोको,*
*नित्य नये–नये पौधों को रोपो।*
*मेरी पावनता का ध्यान धरो,*
*मेरी निर्मलता का अभियान करो।*
*हर जल कण की हृदय पुकार सुनो,*
*प्रतिदिन स्वच्छता का आह्वान करो।*
*अविरल पावनता का मान करो,*
*फिर निर्झरता का गान करो।*

# देख लेना

कुमार भास्कर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
का कार्यालय, बैंगलूरू–560001

*देख लेना,*
*हम फिर से मुस्कुरायेंगे,*
*अपने संकल्पों से हम जीत जायेंगे,*
*फिर से मंदिरों में होंगे मंगल–गान,*
*मस्जिदों से सुनी जाएंगी अज़ान,*
*गुरूद्वारों में फिर से लंगर होंगे,*
*गिरिजाघरों में होंगे इशु गुणगान।*

*देख लेना,*
*हम फिर से खिलखिलाएंगे,*
*फिर से गलियाँ गुलज़ार होंगी,*
*फिर से चौक–चौबारों में बहार होगी,*
*उद्यानों में होना प्रेम–वृन्द का मिलन,*
*कागज की कश्तियाँ खेलते नजर आयेंगे बचपन*
*बाग बगीयों में बच्चे खेलेंगे आँख–मिचौली,*
*सावन के झूलों पर होगी सखियों की टोली,*
*चाय की दुकान पे बूढ़ों की हमजोली।*

*देख लेना,*
*हम फिर भंवर से निकल जायेंगे,*
*शहरी आँखों में भी आशाओं की चमक होगी,*
*डिस्को में थिरकते पैरों की धमक होगी,*
*कॉफी शॉप पर प्रेमिकाओं की प्रेमियों पर तमक होगी,*
*होटल, रेस्तरां, मॉलों में भी रौनक होगी।*

*देख लेना,*
*हम ये जंग भी जीत जायेंगे,*
*अपने उम्मीदों पे खड़े उतर जायेंगे,*
*फिर से खिल उठेंगे बाग–बगीचे,*
*खेतों में फसल सुनहले लहलहाएंगे,*
*उद्योग–धंधे अपने करेंगे नत नए आविष्कार,*
*स्वदेशी अपनाएंगे, विदेशी का करेंगे बहिष्कार,*
*एक हो जायेंगे जो फौलादी इरादे,*
*पटरी पे अर्थव्यवस्था की गाड़ी दौड़ाएंगे।*

*देख लेना,*
*हम फिर से विजय गीत गुनगुनायेंगे,*
*संयम, सहयोग, सत्कर्म से निराशा दूर भगायेंगे,*
*गाँधी के सपनों का हिन्दुस्तान बनायेंगे,*
*चहुँ दिशाओं में परचम हम लहरायेंगे,*
*एक होंगे हम, अब और न हो अन–बन,*
*मिलकर बनायेंगे हम सपनों का वतन।*

# वजूद

रविन्द्र सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

*अक्सर ये सवाल*
*खुद से पूछता हूँ मैं*
*कहाँ से आये*
*कौन हैं ये लावारिस बच्चे।*
*अक्सर हम मूकदर्शक बनकर*
*देखते हैं इन्हें*
*लावारिस भीख मांगते।*
*नहीं सोचते कि कौन हैं वे*
*कहाँ से है लाये गए*
*वाकई है मजबूर*
*या बच्चे हैं किसी के चुराए गए।*
*क्या नहीं है*
*उनका कोई बचपन*
*उनका कोई वजूद।*
*कभी हम पैसे देते हैं तो*
*कभी देते हैं दुत्कार इन्हें*
*भिखारी कहकर*
*लेकिन कुछ तो सोचना होगा हमें*
*उनके वजूद के बारे में।*

*ताकि वो भी पा सकें*
*वही बचपन, वही खुशियाँ*
*अपने परिवार संग*
*जो मिली हैं हम सबको*
*अपने बचपन में।*
*आइये हम सब मिलकर*
*उठाए कोई ठोस कदम*
*और लौटाएं उन बच्चों को*
*उनके माता–पिता, परिवार*
*व वजूद उनका।*
*ताकि ये परिस्थितियां*
*न आये कभी भी*
*हमारे आपके बच्चों संग।*

# ग़ज़ल

सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

*यहां सूखा वहां नम है, बड़ा मायूस मौसम है।*
*कहीं आंखों में पानी है, कहीं फूलों पे शबनम है।*

*न कोई मील का पत्थर, न कोई रहनुमा तेरा*
*न दिखती दूर तक मंजिल कि हर रस्ता ही पुरख़म है।*

*सिपाही हो गया घायल, बहुत खुश है वहां दुश्मन*
*कि मां की आंख पुनरम है, दुआओं का ही मरहम है।*

*किसी के कान में तारें, किसी के हाथ में मोबाइल*
*कोई गूंगा कोई बहरा, हुआ जीवन ये दरहम है।*

*अकेला हो गया शायर, न सजती एक भी महफिल*
*बहुत है शोर गूगल का, दबा लफ़्ज़ों का मक्दम है।*

*वो कहते हैं जला देंगे, नहीं जी भरके सामां दो*
*करो रूसवा ज़लीलों को, जहां लालच का दमख़म है।*

*अजब हालत हुई दिल की, विदाई की जो बेटी की*
*निराली रीत दुनिया की, जुदाई में भी संगम है।*

*किया था इश्क हमने भी, छुपाया गुल किताबों में*
*हुई वो फूल से घायल, तो फिर क्यों हमसे बरहम है।*

*बड़ी मुश्किल से मिलती है मुहब्बत आज दुनिया में*
*बढ़ाए जो अदावत वो नहीं 'मीरा' का हमदम है।*

# अल्पविराम

मुनीष भाटिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

*पास होकर भी जो ना रहे दिल के करीब*
*कसमें खाई कभी साथ मिल के तुम हमने*
*पर दिल में रखा ना कभी दोनों ने एहतराम*
*रखा क्यूँ रिश्तों में सदा इक अल्पविराम।*

*रहे वो सदा सियायत में शरीक अब तक*
*भूल गए ये हकीकत कि सांस लेने का हक*
*सितम सहने वाले का भी है जाबिर जहाँ पर*
*समझा नहीं इंसा की गैरजरूरी है अल्पविराम।*

*गजब की रवायत है खताओं का रखें हिसाब तो*
*बे रौनक हो जाती है खुद की सांसों की रफ्तार*
*आओ परख लेते हैं खुद की हैसीयत इक बार*
*ज़रूरी नहीं है रिश्तों में सदा रहे अल्पविराम।*

*चाहा था इक हमसफर वफा ए इश्क़ के लिए*
*निभा रहा रिश्ता हर कोई खुदगर्जी की खातिर*
*कि कब कहाँ किस से क्या काम पड़ जाए*
*रखता इसलिए यहाँ हर शख्स अल्पविराम।*

# उपभोक्तावाद

अमित कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
मध्य रेलवे, मुम्बई–400001

*उपभोक्तावाद की जंजीरों में जकड़ा है आदमी,*
*संपदा के पीछे भागते–भागते दम तोड़ता है आदमी।*
*इच्छाएं हैं अनंत और वक्त की भरी कमी,*
*"और अधिक" की होड में सुख–चैन मिलता ही नहीं।*

*अब हालात है यह कि अपनों के लिए वक्त मिलता ही नहीं,*
*आखिर आवश्यकताएँ कितनी हैं कि अंत होता ही नहीं।*
*एक वक्त ऐसा भी था कि उमंगें थीं जीवन में असीम,*
*अब तो अवसादों से घिरता जा रहा है आदमी।*

*आप उपभोक्तावाद बन गया है पर्याय मानव जीवन के लक्ष्य का,*
*मानव ने खुद ही घोटा है गला अपने जीवन के हर्ष का।*
*अब वक्त है कि ऐ मानव पहचान करो जीवन के लक्ष्य का,*
*बाहर निकलो क्षणभंगुरता से और उद्घाटन करो जीवन के रहस्य का।*

*करो कुछ ऐसा जग में की छोड़ जाओ अपना निशान,*
*कर्म करो ऐसा कि याद करे सारा जहाँ।*

# दो कविताएँ

सुश्री लीना दरियाल 'सत्यम'
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
लखनऊ

## (1)
## प्रकृति से छेड़छाड़

*प्रकृति से छेड़छाड़ ये, मानव के क्रियाकलाप,*
*डायनामाइट आज, कल मानव करेगा संताप।*

*विस्फोट कर जो आज, पत्थर उछाल रहे हैं,*
*कल करोगे मिट्टी के, खिसकने का अनुताप।*

*जब पैरों तले न होगी, मिट्टी न ठोस धरातल,*
*सिर्फ हाथ आयेगा, करने को एक पश्चाताप।*

*विकास के नाम पर, कर रहे धरती को छलनी,*
*जननी कहकर तुम, कैसे करते हो ये घोर पाप।*

*एक विनाश सर्वनाश की, क्यों हो रही तैयारी,*
*क्यों ले रहे हो, भविष्य अनुजों हेतु अभिशाप।*

*कल कैसे पाओगे जल, नदी भी गयी जो सूख,*
*शिव को बुला कौन भगीरथ, दूर करेगा श्राप।*

## (2)
## ज़िंदगी जीने को है

*ज़िंदगी जीने को है, जी इसे जीने वाले,*
*हम भी तो तुझे, रोज़ नहीं मिलने वाले।*

*क्यों नाराजगी जाहिर करें, किसी से भला,*
*कौन हमेशा के लिए, हम हैं ठहरने वाले।*

*चल कर लेते हैं, कुछ नादानियां हम भी,*
*रोज कहाँ मिलेंगे, यूँ मरते हुए हँसने वाले।*

*जख्म जो मिले वो, फूल बन जायेंगे,*
*न मिलेंगे गुलिशतां में, यूँ महकने वाले।*

*ताबीर खुद 'सत्यम', लिखना जानती है,*
*ख़्वाब उसके क्या, पढ़ेंगे पढ़ने वाले।*

*कश्तियाँ उन्हीं की, डूबती हैं 'सत्यम',*
*नहीं होते जो, तूफ़ां में संभलने वाले।*

# 21 मई बनाम 16 जुलाई

केदार नाथ प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
जय महावीर कालोनी, संदलपुर
पी.ओ. महेन्द्र, पटना–800006

*स्मृतियों का प्रेमिल अभिव्यंजन*
*उठ जाता है अतीत का घूंघट*
*मन के सागर तट पर अंकित हो जाते हैं –*
*उल्लास उन्माद के मधुरिम क्षण।*
*21 मई याद आते ही ओठों पर सरसराने*
*लगते हैं नेह–स्नेह के प्रोज्ज्वल कम्पन,*
*बहने लगता है पूरवा का मदरिल बयार,*
*सामने खड़ा कचनार का कोमल पेड़,*
*लाल फूलों से लदा अमलताश का थिरकन,*
*कौंधने लगता है सोन–जूही का उन्मन–अभिषेक।*
*सुकुमार सपनों की स्नेहित अवतारणा,*
*सौरभ एवं पराग से गुंफित सांझ एवं*
*दोपहरी का सुकुमार परिरंभण।*
*लगता था जैसे वर्तमान के सानिध्य में*
*समाहित हो गया है भविष्य का क्षण–क्षण।*
*16 जुलाई –*
*वेदना का उद्घोष,*
*आंसूओं का बेदर्द उत्पीड़न,*
*अतीत के आवरण में वर्तमान की कसमसाहट,*
*चन्दन–नैवेद्य से बेष्टित प्रहर में*
*काल का क्रूर प्रवेश,*
*मैं समझ नहीं पाया दीपों की ज्योत्सना क्यों –*
*मौन हो गयी थी,*
*नश्वरता का अवदान घातक भी हो सकता है।*
*पक्षधर रहा शाश्वतता के पूनम का*
*उदासी के अश्रु–स्खलित यवनिका का नहीं,*
*खोजता हूं जीवन का अरूणोदय,*
*बनारस की रेशमी साड़ी, गोल सी बिंदी,*
*आंखों में काजल के रेख,*
*महावर–भिंगे पांव और मेहंदी–गुंफित हाथ,*
*मिसरी में भिंगे बोल।*
*श्रवणांकित हो गया नियति का घोष।*
*अतीत कुछ भी नहीं रहा,*
*सब कुछ वर्तमान,*
*वेदना–व्यथा, उन्मन क्रन्दन,*
*बन गयी नियति सब कुछ,*
*हम कुछ भी नहीं रहे।*
*हाथों में रह गये आंसू के शिलालेख।*
*जाते तो सब हैं।*
*कुछ का जाना अप्रतमिता का पर्याय बन जाता है।*
*सब जायेंगे। हर आना–जाना एक–दूसरे*
*का प्रतिरूप नहीं बन सकता।*

# आज का इंसान

सुश्री नीतू सिंह
वरिष्ठ लेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं ह.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

*मानव*
*ईश्वर की सर्वोत्तम रचना*
*जब से रचनाकार बना*
*उसकी सृजन क्षमता से*
*छटने लगा अन्धकार घना*
*कहीं बना सीयर्स टावर*
*कहीं प्रेम का सुन्दर ताज बना।*

*विकास के क्रमबद्ध चरणों से*
*दूने लगा नित नए आयाम*
*मन में सब कुछ पाने की धुन*
*रहा अछूता ना कोई धाम।*

*सभ्यता के उच्चतम बिन्दु पर भी*
*शायत कहीं कुछ कमी है*
*बहुत सी आँखों में*
*आज भी नमी है।*

*कहीं पर आई बाढ़*
*तो कहीं पड़ा सूखा है*
*यहाँ बह गया सब कुछ*
*वहाँ इन्सान भूखा है।*

*सहमे, आतंकित से*
*सभी के चेहरे हैं*
*पहले थे स्वच्छन्द कभी*

*आज सांसों पर भी पहरे हैं।*
*सभ्यता के इस पड़ाव पर*
*इन्सान का क्या रूप है*
*अन्दर है घनघोर अन्धेरा*
*बस बाहर ही धूप है।*

*हर आँसू, हर आह के पीछे*
*बस यही एक तथ्य है*
*आज का इन्सान*
*कुछ ज्यादा ही सभ्य है।*

*अभिलाषा उस मानव की*
*शायद ऐसी ना थी*
*मुश्किल तो थी बहुत*
*पर आज के जैसी ना थी।*

# अभिलाषा

पंकज अरोरा, एम.टी.एस.
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

*पुष्प, सुमन, कुसुम,*
*मंजरी, प्रसून, फूल,*
*कुछ भी दे दो नाम मुझको,*
*उल्हाना, मुझको मत देना।*
*काँटों से घिरा हूँ,*
*नाजुक हूँ, कोमल हूँ,*
*सुगंध बरसाऊँ!*
*तितलियां ललचाऊँ!*
*प्रेमिका का गहना बनूँ,*
*या फिर माता बन गूँथा जाऊँ,*
*देवताओं के माथे सजूँ,*
*या गुलकंद बनूँ!*
*तितलियों की भूख मिटाऊँ,*
*यह सब काम नहीं मेरे।*
*दुल्हन का श्रृंगार हो,*
*या अर्थी का आखिरी सफर,*
*ये सब नहीं भाता मुझको,*
*मैं तो रखूँ इक ही अभिलाषा,*
*जिस प्रकृति से मैं जन्मूँ,*
*उसमें ही मिल जाऊँ।*
*शहीदों के पथ पर गिराया जाऊँ,*
*ना मेरी कोई चाहत,*
*ना मेरी कोई अभिलाषा,*
*मंदिर, मस्जिद और गुरूद्वारा,*
*देश प्रेम ही,*
*मेरी चाहत! मेरी अभिलाषा!*
*मेरी चाहत! मेरी अभिलाषा.....*

# मुख्यालय में

**हीरा बल्लभ भट्ट**
**सलाहकार, मुख्यालय**
**भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक**
**का कार्यालय, नई दिल्ली–110124**

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में राजभाषा विभाग द्वारा तय प्रेरणा व प्रोत्साहन की नीति के अनुसार निर्धारित कार्यक्रमानुसार राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य प्रगति पर है। इस विभाग के मुख्यालय ने राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा संकल्प, 1968 तथा राजभाषा नियम 1976 (यथा संशोधित 1987) के अनुपालन में राजभाषा हिन्दी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने के लिए तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों में प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए परिचालित वार्षिक कार्यक्रमों के दिशानिर्देशों के अनुसार कार्यान्वयन के लिए कुछ ठोस उपाय किए हैं। वार्षिक कार्यक्रमों के अंतर्गत विचारणीय बिन्दुओं पर भी विशेष ध्यान दिया गया है।

लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में हिन्दी दिवस, हिन्दी पखवाड़ा अथवा हिन्दी मास सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में मनाया जाता है। मुख्यालय में मनाये गये हिन्दी पखवाड़ा की संक्षिप्त झलक 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के स्तंभ ''मुख्यालय में'' के अंतर्गत पाठकों के लिए प्रस्तुत की जाती है। हमारे विभाग के मुखिया माननीय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय तथा अन्य शीर्षस्थ अधिकारियों का प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्रतिवर्ष हमें लक्ष्यानुसार हिन्दी में कार्य करने को उत्साहित करता है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेशानुसार हिंदी प्रगति रिपोर्ट के निर्धारित लक्ष्यों को हमारे कार्यालय द्वारा प्राप्त किया जा रहा हैं। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, द्वारा वर्ष 2020–21 के लिए राजभाषा नीति के 300 से अधिक कार्मिक की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु सर्वोच्च राजभाषा कीर्ति पुरस्कार में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

मुख्यालय में दिनांक 14 सितम्बर, 2021 को हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ ऑनलाइन माध्यम से किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ 2.30 बजे मुख्य अतिथि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय श्री गिरीश चंद्र मुर्मू द्वारा महानिदेशक (राजभाषा) की गरिमामयी उपस्थिति में ऑनलाईन माध्यम द्वारा किया गया।

*मंच का संचालन करती हुई*
*सुश्री अनामिका अंतिल, सहायक प्रशासन अधिकारी*

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए मंच संचालिका ने महानिदेशक (राजभाषा) महोदय से अनुरोध किया कि वे माननीय गृह मंत्री, श्री अमित शाह जी का देशवासियों के नाम दिया गया संदेश पढ़ कर सुनाएं। महानिदेशक (राजभाषा), महोदय ने भारत सरकार के गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर देशवासियों के नाम दिया गया संदेश पढ़कर सुनाया। इसके पश्चात उन्होंने अपने सुस्पष्ट शब्दों में हिन्दी पत्राचार, राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3), राजभाषा नियम 5 के अनुपालन, हिन्दी कार्यान्वयन संबंधी प्रोत्साहनों, लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों के हिन्दी अनुवाद, क्षेत्रीय कार्यालयों व मुख्यालय के अनुभागों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण, ''लेखापरीक्षा प्रकाश'' पत्रिका प्रकाशन तथा पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा आदि पर भी प्रकाश डाला।

महानिदेशक (राजभाषा) द्वारा हिन्दी की प्रगति

*हिन्दी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए*
*महानिदेशक (राजभाषा)*

रिपोर्ट प्रस्तुत करने के पश्चात मुख्य अतिथि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय ने अधिकारियों को सम्बोधित किया। उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी एवं प्रेरणास्पद मार्गदर्शी भाषण में कहा कि भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग की कार्य शैली अन्य विभागों/मंत्रालयों से भिन्न है फिर भी हमने राजभाषा के प्रचार–प्रसार तथा संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु भरसक प्रयास किए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी में कामकाज को सरल और सहज बना दिया है। मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हमारे विभाग में हिन्दी के कार्यों के लिए इसका भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। हिन्दी पत्रिका का ई–संस्करण और ई–ऑफिस कार्यान्वयन इसका प्रमुख उदाहरण है। उन्होंने

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष 2020–21 के लिए राजभाषा नीति के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु सर्वोच्च राजभाषा कीर्ति पुरस्कार में प्रथम स्थान प्राप्त किए जाने को हमारे कार्यालय के लिए हिन्दी प्रगति के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि बताया। इसका श्रेय मुख्यालय के सभी कार्मिकों को दिया।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय ने कहा कि लेखापरीक्षा के कर्तव्यों का आधार जन साधारण के हितों की रक्षा करना है, जिसका पालन विभाग द्वारा लेखाओं के निरीक्षण या लेखापरीक्षा द्वारा किया जाता है। हिन्दी भाषा लेखापरीक्षा तथा जन मानस के बीच की वह कड़ी है जिससे लेखापरीक्षा का प्रभाव अत्यंत व्यापक हो जाता है। लेखापरीक्षा प्रतिवेदन तथा अन्य दस्तावेज विभाग द्वारा हिन्दी भाषा में भी तैयार किये जाते हैं, ताकि लेखापरीक्षा के प्रभाव को और भी व्यापक करते हुए जन साधारण की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित हो। माननीय प्रधानमंत्री जी ने इसी आधार पर आत्मनिर्भर भारत का नारा दिया है। हम इन प्रयासों को आम लोगों की भाषा, हिन्दी के प्रयोग से और गति दे सकते हैं।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय के ओजस्वी, मार्गदर्शी व प्रेरणादायी सम्बोधन के पश्चात पखवाड़े के शुभारम्भ कार्यक्रम का विधिवत समापन किया गया जिसमें सुश्री अनामिका अंतिल ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने तथा उसे सफल

*हिन्दी पखवाड़े के शुभारम्भ पर सभा को संबोधित करते हुए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय*

बनाने के लिए सभी विशिष्ट जनों का विनम्रतापूर्वक ऑनलाइन आभार प्रकट किया।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय की गरिमामय उपस्थिति में दिनांक 28.9.2021 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। महानिदेशक (राजभाषा) महोदय ने ऑनलाइन माध्यम से उनका तहे दिल से स्वागत किया। इसके पश्चात सहायक प्रशासन अधिकारी ने सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम की ऑनलाईन द्वारा घोषणा की जिसमें महानिदेशक (राजभाषा) महोदय ने सभी विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी।

इसके उपरान्त भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय ने हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित ऑनलाइन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को शुभकामनाएं दी, साथ ही हिन्दी में अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए सभी को प्रोत्साहित भी किया। तत्पश्चात समारोह का समापन किया गया।

# हिंदी पखवाड़ा 2021 के दौरान हुई प्रतियोगिताओं में विजेताओं की सूची

## हिंदी निबंध प्रतियोगिता (15-9-2021)

| क्र.सं. | विजेता का नाम एवं पद सर्व श्री/सुश्री | अनुभाग | स्थान |
|---|---|---|---|
| | **अधिकारी वर्ग** | | |
| 1. | सौरव कौशिक, सहायक प्रशासन अधिकारी | दक्षिण क्षेत्र | प्रथम |
| 2. | नरेन्द्र सिंह, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी | एन.सी.आर. विंग | द्वितीय |
| 3. | सुश्री पूनम पाहुजा, निजी सचिव | आई.आर. सचिव | तृतीय |
| | **कर्मचारी वर्ग** | | |
| 1. | मो. शिबली हुसैन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक | स्टाफ (एस एण्ड आर) | प्रथम |
| 2. | महेश चन्द्र भट्ट, लेखापरीक्षक | राजपत्रित अनुभाग–I | द्वितीय |
| 3. | गीता, लेखापरीक्षक | वाणिज्यिक–V | तृतीय |

## हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण (16-9-2021)

| क्र.सं. | विजेता का नाम एवं पद सर्व श्री/सुश्री | अनुभाग | स्थान |
|---|---|---|---|
| | **अधिकारी वर्ग** | | |
| 1. | जेम्स जोन कच्छप, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी | दक्षिणी क्षेत्र | प्रथम |
| 2. | सुश्री सोनाली चटर्जी, सहायक प्रशासन अधिकारी | स्टाफ (जे.सी.एम.) | द्वितीय |
| 3. | महेश कुमार दीक्षित, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी | कार्य एवं परियोजना | तृतीय |
| | **कर्मचारी वर्ग** | | |
| 1. | सरजीत सिंह बंसल, सहायक पर्यवेक्षक | सामान्य सेवा | प्रथम |
| 2. | राजीव रंजन, एमटीएस | सामान्य सेवा | द्वितीय |
| 3. | प्रकाश सिंह, सहायक पर्यवेक्षक | वेतन एवं लेखा | तृतीय |

## हिंदी टंकण (17-9-2021) केवल कर्मचारी वर्ग हेतु

| क्र.सं. | विजेता का नाम एवं पद सर्व श्री/सुश्री | अनुभाग | स्थान |
|---|---|---|---|
| 1. | जगदीश कुमार, लिपिक | स्थापना | प्रथम |
| 2. | ओमबीर, डी.ई.ओ. | प्रशासन–II | द्वितीय |
| 3. | सुश्री रजनी पाल, आशुलिपिक | उत्तर मध्य क्षेत्र | तृतीय |

## अनुवाद प्रतियोगिता (20-9-2021)

| क्र.सं. | विजेता का नाम एवं पद सर्व श्री/सुश्री | अनुभाग | स्थान |
|---|---|---|---|
| | **अधिकारी वर्ग** | | |
| 1. | सुश्री रेखा, सहायक प्रशासन अधिकारी | स्थापना | प्रथम |
| 2. | अनुराग प्रभाकर, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी | वित्त एवं संचार | द्वितीय |
| 3. | संदीप कुमार, सहायक प्रशासन अधिकारी | सी.ए.–I | तृतीय |
| | **कर्मचारी वर्ग** | | |
| 1. | सर्वेन्द्र कुमार, डी.ई.ओ. | रेलवे | प्रथम |
| 2. | सुश्री आशीष रानी, डी.ई.ओ. | स्थापना | द्वितीय |
| 3. | सुश्री अंजली सपरू, वरिष्ठ लेखापरीक्षक | दक्षिणी क्षेत्र | तृतीय |

## श्रुतलेख प्रतियोगिता (21-9-2021)

| क्र.सं. | विजेता का नाम एवं पद सर्व श्री/सुश्री | अनुभाग | स्थान |
|---|---|---|---|
| | **अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग** | | |
| 1. | सुश्री खेमा वती, सहायक प्रशासन अधिकारी | एस.एस.आर. | प्रथम |
| 2. | सुश्री विद्या जेनिफर डाडेल, पर्यवेक्षक | एस.एम.यू. | द्वितीय |
| 3. | सुश्री मयंका अधलखा, सहायक प्रशासन अधिकारी | निरीक्षण | तृतीय |

## वर्ग पहेली प्रतियोगिता (22-9-2021)

| क्र.सं. | विजेता का नाम एवं पद सर्व श्री/सुश्री | अनुभाग | स्थान |
|---|---|---|---|
| | **अधिकारी वर्ग** | | |
| 1. | सुरेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी | प्रोटोकॉल | प्रथम |
| 2. | सुश्री खेमा वती, सहायक प्रशासन अधिकारी | एस.एस.आर. | द्वितीय |
| 3. | सौरव कौशिक, सहायक प्रशासन अधिकारी | दक्षिणी क्षेत्र | तृतीय |
| | **कर्मचारी वर्ग** | | |
| 1. | राजेन्द्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक | स्थापना अनुभाग | प्रथम |
| 2. | सुश्री विद्या जेनिफर डाडेल, पर्यवेक्षक | एस.एम.यू. | द्वितीय |
| 3. | सतीश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक | सामान्य सेवा | तृतीय |

## भारत सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, नियम एवं हिंदी ज्ञान से संबंधित प्रतियोगिता (23-9-2021)

| क्र.सं. | विजेता का नाम एवं पद सर्व श्री/सुश्री | अनुभाग | स्थान |
|---|---|---|---|
| | **अधिकारी वर्ग** | | |
| 1. | जेम्स जोन कच्छप, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी | दक्षिणी क्षेत्र | प्रथम |
| 2. | नरेन्द्र सिंह, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी | एन.सी.आर. विंग | द्वितीय |
| 3. | सुरेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी | प्रोटोकॉल | तृतीय |
| | **कर्मचारी वर्ग** | | |
| 1. | सतीश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक | सामान्य सेवा | प्रथम |
| 2. | ओमबीर, डी.ई.ओ. | प्रशासन–II | द्वितीय |
| 3. | अशोक कुमार, लिपिक | केयरटेकर | तृतीय |

## सुलेख प्रतियोगिता (24-9-2021)

| क्र.सं. | विजेता का नाम एवं पद सर्व श्री/सुश्री | अनुभाग | स्थान |
|---|---|---|---|
| | **अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग** | | |
| 1. | सुश्री दया हीत, सहायक पर्यवेक्षक | स्टाफ हक–I | प्रथम |
| 2. | शंकर दत्त पाण्डेय, वरिष्ठ लेखापरीक्षक | दक्षिणी क्षेत्र | द्वितीय |
| 3. | महेश चन्द्र भट्ट, लेखापरीक्षक | राजपत्रित अनुभाग–I | तृतीय |

## वर्ष 2020-2021 के दौरान हिंदी में अत्यधिक शब्द लिखने वाले अधिकारी/कर्मचारी

| क्र.सं. | विजेता का नाम एवं पद सर्व श्री/सुश्री | अनुभाग | स्थान |
|---|---|---|---|
| | **अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग** | | |
| 1. | सतीश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक | सामान्य सेवा | प्रथम |
| 2. | राजेन्द्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक | स्थापना | द्वितीय |
| 3. | भवान सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक | प्रा.ले.प. (प्रत्यक्ष कर) | तृतीय |
| 4. | सुश्री सुधा बक्शी | हकदारी | तृतीय |

# हिंदी पखवाड़ा 2021 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों के फोटो

श्री सौरव कौशिक
सहा. प्रशा. अधिकारी

श्री नरेन्द्र सिंह
वरि. प्रशा. अधिकारी

सुश्री पूनम पाहुजा
निजी सचिव

मो. शिबली हुसैन
वरि. लेखापरीक्षक

श्री महेश चन्द्र भट्ट
लेखापरीक्षक

सुश्री गीता
लेखापरीक्षक

श्री जेम्स जोन कच्छप
वरि. प्रशा. अधिकारी

सुश्री सोनाली चटर्जी
सहा. प्रशा. अधिकारी

श्री महेश कुमार दीक्षित
वरि. प्रशा. अधिकारी

श्री सरजीत सिंह बंसल
सहा. पर्यवेक्षक

श्री राजीव रंजन
एमटीएस

श्री प्रकाश सिंह
सहा. पर्यवेक्षक

श्री जगदीश कुमार
लिपिक

श्री ओमबीर
डी.ई.ओ.

सुश्री रजनी पाल
आशुलिपिक

सुश्री रेखा
सहा. प्रशा. अधिकारी

श्री अनुराग प्रभाकर
वरि. प्रशा. अधिकारी

श्री संदीप कुमार
सहा. प्रशा. अधिकारी

श्री सर्वेन्द्र कुमार
डी.ई.ओ.

सुश्री आशीष रानी
डी.ई.ओ.

सुश्री अंजलि सपरू
वरि. लेखापरीक्षक

सुश्री खेमा वती
सहा. प्रशा. अधिकारी

सुश्री विद्या जेनिफर डाडेल
पर्यवेक्षक

सुश्री मयंका अधलखा
सहा. प्रशा. अधिकारी

श्री सुरेन्द्र कुमार
वरि. प्रशा. अधिकारी

श्री राजेन्द्र कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

श्री सतीश कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

श्री अशोक कुमार
लिपिक

सुश्री दया हीत
सहायक पर्यवेक्षक

श्री शंकर दत्त पाण्डेय
वरि. लेखापरीक्षक

श्री भवान सिंह
वरि. लेखापरीक्षक

सुश्री सुधा बक्शी

# आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका

## नाईजीरिया : यहाँ मिला 1000 रूपये में कॉफी का एक कप

**कमलजीत सिंह रामुवालिया**
**प्रधान निदेशक**

***भाग 1***

मेरी इस अफ्रीका की यात्रा में इथोपियन एयरलाइंस की उड़ान संख्या ईटी 687 दिल्ली से अदीस अबाबा, ईथोपिया की राजधानी के लिए बुधवार की सुबह 2.55 बजे की यात्रा और फिर वहां से कनेक्टिंग फ्लाइट ईटी 901 से लागोस, नाइजीरिया के लिए यात्रा शामिल थी। मंगलवार की शाम मैं दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुँचा, पर मेरे पास मेरे यात्रा संबंधी दस्तावेज नहीं थे। सभी जरूरी कागजात मेरी पार्टी के सदस्यों द्वारा लाए जा रहे थे क्योंकि वह इसे दूतावास से बहुत प्रयासों के बाद उसी शाम 7.30 बजे प्राप्त करने में सफल हुए थे। उस समय तक यह काफी अनिश्चित था कि क्या हम वास्तव में फ्लाईट पकड़ भी पाएंगे या नहीं। दिल्ली के आई.जी.आई. हवाई अड्डे के टर्मिनल 3 पर मैने पार्टी के अन्य सदस्यों के आने की प्रतीक्षा की क्योंकि उनमें से एक मेट्रो एयरलाइन एक्सप्रेस से आ रहा था परन्तु उसके पास कोई मोबाइल कनेक्टिविटी नहीं थी। अतः कुछ भी पता नहीं लग रहा था कि वो कब आयेंगे।

आखिरकार, एक के बाद एक, दोनों आ गए और मुझे मेरे दस्तावेज मिल गए और वे सही थे। फिर हम एयरपोर्ट लाउंज की तरफ चाय के लिये गए। ये

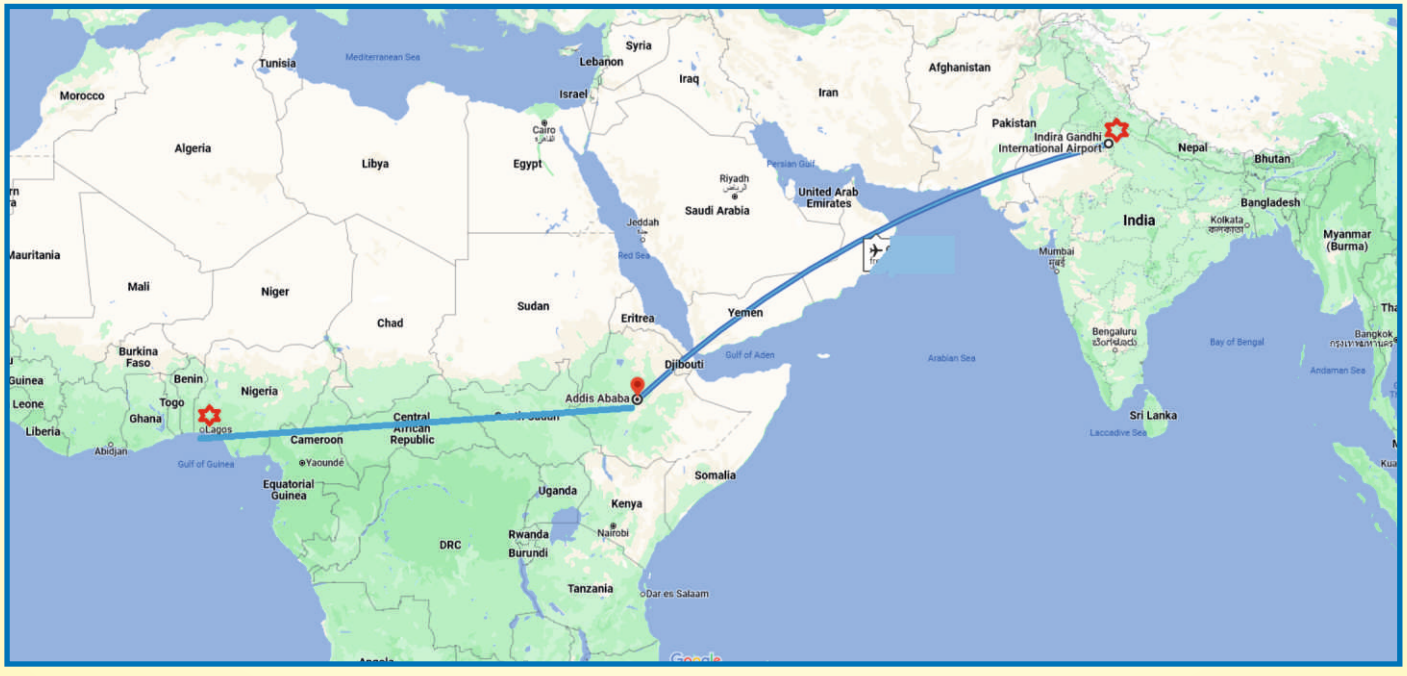

जरूरी था क्योंकि अगले 3–4 घंटे औपचारिकता पूरी करने में लग जाने थे। मैं बोर्डिंग पास चैक–इन डेस्क पर और इमीग्रेशन पर यात्रियों की लंबी–लंबी कतारें देख सकता था। एयरपोर्ट जांच और सुरक्षा जांच पर आई.जी.आई. हवाई अड्डे, दिल्ली पर व्यवस्था अच्छी थी जिसे हमारे लिये एक वरिष्ठ आई.एफ.एस. अधिकारी द्वारा सुरक्षित किया गया था। उनकी वजह से हमें उड़ान भरने से पहले सभी जगहों पर सर्वोत्तम संभव प्रबंध मिला। इसको हमने एक अच्छा शगुन माना और प्रार्थना की आगे की यात्रा भी सुखद रहे। हमें बताया गया था कि इस लम्बी यात्रा में कई स्थानों पर कानून व्यवस्था ठीक नहीं है और आपको सावधानी बरतनी होगी। लेकिन मुझे एक और ही चिंता थी और वह थी मेरे केबिन बैगेज का आकार, जो कि मामूली सा बड़ा था। मैंने चैक–इन काऊंटर पर बैठी महिला से बात की, उसने बैग देखा और कहा, "नो प्रोबल्म"। अतः इसे भी बिना किसी समस्या के अनुमति मिल गई। इसके बाद हम इमीग्रेशन और सुरक्षा गेटों की तरफ गये। यहाँ खचाखच भीड़ थी लेकिन साँप जैसी घुमावदार कतारों में इन सभी में हमें लगभग दो घंटे का समय लगा। इस तरह हमने एक–एक करके सभी औपचारिकताएं पूरी कर ली। फ्लाइट ई.टी 687 ने समय पर उड़ान भरी।

इथोपियन एयरलाइन का यह एक पुराना और छोटा

*अदीस अबाबा एयरपोर्ट टच डाऊन का बाहरी दृश्य*

*दिल्ली से अफ्रीका के लिये रवानगी*

विमान था। इसकी उड़ान सहज थी, इस विमान में एक कतार में तीन–तीन सीटें थी। कोई भी सीट खाली नहीं थी। 37000 फीट की ऊंचाई पर उड़ान भरते हुए प्रभात की छटा काफी शानदार लग रही थी। हवाई यात्रा में अक्सर आपको आराम की जरूरत होती है, मेरा ख्याल रखने वाली मेरी पत्नी, जो एक दिन पहले ही इंग्लैंड़ से लौटी थी, ने मुझे नींद की झपकी लेने के लिये एक गर्दन का छोटा सा कुशन दिया था, जिस पर सिर रख कर थोड़ी सी नींद लेकर मुझे इस यात्रा में बहुत आराम मिला। हवाई सफर अगर रात में शुरू हो तो नींद लेनी जरूरी होती है नहीं तो आपका थकान से बुरा हाल हो सकता है। एक घंटे की उड़ान के बाद, हमारा जहाज भारतीय एयर स्पेस को पार कर पाकिस्तान के एयर स्पेस में दाखिल हुआ, यह वहाँ का सिंध प्रांत था और फिर कराची से थोड़ा सा हट के आगे अरब सागर ओमान और फिर यमन के ऊपर उड़ते हुए सुबह सूर्य की पहली किरणों के साथ अफ्रीका महाद्वीप में प्रवेश हुआ। हमारी यात्रा का पहला टॅच डाउन बस अब आने ही वाला था। कॉकपिट से कप्तान ने लैंड़िंग के लिये घोषणा की और कुछ ही पलों में हम अदीस अबाबा पहुँच गये।

इथोपिया के अदीस अबाबा एयरपोर्ट के इर्द गिर्द भूरे रंग की मटमैली छटा वाली धरती सूखी, पथरीली और

बंजर सी लग रही थी। कुछ सूखे पहाड़ी टिल्ले भी थे। यह मंजर कुछ–कुछ रायपुर छत्तीसगढ़ के एयरपोर्ट जैसा लग रहा था। अदीस अबाबा के ''बोले अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे'' पर हवाई जहाज उतरा। वहां मौसम सुहावना और हल्की ठंडक वाला था। क्योंकि हमारी फ्लाईट थोड़ा देरी से पहुंची थी इसलिये उतरने पर हमें सीधा अगली उड़ान ईटी 901 जोकि नाईजीरिया के शहर लागोस के लिये तैयार थी, ग्राऊंड स्टाफ ने उस पर बैठने का संकेत कर दिया गया। हम अगली उड़ान भरने वाले हवाई जहाज की ओर चले गए जिसको उस समय तैयार किया जा रहा था। अदीस अबाबा से नाइजीरिया के शहर लागोस तक यह उड़ान एक नए विमान ''ड्रीमलाईनर'' में थी। इसमें सजावट और भोजन काफी अच्छा और अपेक्षा से भी ज्यादा बढिया था।

ड्रीमलाईनर जहाज परंपरागत हवाई जहाजों से काफी विकसित है और अत्याधुनिक सहुलियतों और तकनीकी से लैस हैं। जलपान व्यवस्था उत्तम दर्जे की थी, हालांकि हम इकोनमी श्रेणी में यात्रा कर रहे थे। यह फ्लाइट लागोस, नाईजीरिया के मुहम्मदु मुर्तला अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर समय पर उतरी।

*अदीस अबाबा एयरपोर्ट पर उतरते हुए*

हवाई अड्डे पर एच.ओ.सी. श्री वी.डी. चौधरी हमें लेने के लिए आए हुए थे। हमने पाया कि यहां पर आईरिस स्कैनिंग से यात्रियों की स्क्रीनिंग अनिवार्य थी और पासपोर्ट पर मुहर लगाने से पहले यात्रियों का संक्षिप्त साक्षात्कार भी किया जा रहा था। उन यात्रियों की बहुस्तरीय जांच भी की जा रही थी, जो नाइजीरिया के नागरिक नहीं थे।

हमने कुछ देर तक कार के आने का इंतजार किया जो कि एक निसान एसयूवी थी। निसान वाहन के चालक श्री जोसेफ ओडिया एक कुशल चालक थे और यात्रा

*ड्रीमलाईनर का बाहरी दृश्य*

*ड्रीमलाईनर के अंदर इकोनॉमी कक्ष*

*निसान एसयूवी के वाहन चालक*

के अंत में सभी ने उसके चालन कौशल की प्रशंसा भी की। दूतावास जाते हुए, मैंने सड़क के बीचों–बीच रंगीन चुनावी होर्डिंग और सड़क के किनारे बिलबोर्ड देखे। मुझे बताया गया कि 28 मार्च को राष्ट्रीय विधानसभा एवं सैनट के चुनाव और राष्ट्रपति पद के लिए भी चुनाव होने हैं और यहां कानून–व्यवस्था बिगड़ने का डर भी है। दो मुख्य प्रतियोगी – श्री गुडलक जोनाथन और मुहम्मदु बुहारी, एक पूर्व सैन्य शासक– अलग अलग समुदायों से हैं और मतदाता लगभग समान रूप से विभाजित हैं। ऐसी स्थिति में जीत और हार में मामूली अंतर होगा। कुछ अन्य प्रतियोगी भी हैं और एक महिला भी है जो महिला संबंधी मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करके परिणाम को प्रभावित करने की कोशिश कर रही है। हमारी मंजिल तो दूतावास ही थी और वहाँ तक पहुंचने के लिए यह एक लंबी ड्राइव थी। दोनों तरफ 5 लेन वाला राजमार्ग आंशिक रूप से समुद्र तट पर बनाया गया था। मैं देख सकता था कि वहाँ सभी वाहन एसयूवी जैसे बड़े वाहन थे और टोयोटा, निसान, हुंडई, फोर्ड, फोक्सवैगन और यहां तक कि टाटा बसें और पिकअप, बजाज और टी. वी.एस. ऑटो जैसे प्रमुख भारतीय ब्रांड के वाहन भी देखे जा सकते थे। मुझे प्यास लग रही थी और मैंने सीलबंद बोतल से पानी लिया। चूंकि सभी सड़कों पर भारी ट्रैफिक की भीड़ थी, हम कई मोड़ों पर फंस भी गए।

यहां का मौसम किसी भी अन्य तटीय क्षेत्र की तरह ही था– गर्म और नमी से भरपूर। अचानक मेरी तबीयत बिगड़ने लगी मुझे चक्कर आने लगे और जी मतलाने जैसा महसूस होने लगा, सिर में तेज दर्द भी हो गया। मेरी बिगड़ती हालत को देखते हुए हमारे मेजबान ने होटल इंटर–कॉन्टिनेंटल, लागोस की ओर आगे बढ़ने से पहले उनके घर पर दोपहर का भोजन करने का अनुरोध किया। मैं काफी थका हुआ था और खाने से मना करना पड़ा। वहाँ कुछ बातचीत के दौरान मुझे दो–तीन बार उबकाई आई। मैंने चौधरी साहिब से कहा कि मैं एक रात आराम करने के बाद कल तक ठीक हो जाऊंगा। वो कुछ चिंतित लग रहे थे लेकिन मैंने उनसे फिर कहा कि चिंता की कोई बात नहीं है, एक बार अच्छी तरह आराम करने के बाद मैं कल तक ठीक हो जाऊंगा। यह 13 घंटे से अधिक समय की लगातार थकान से भरी यात्रा और सारी रात एवं लंबे समय तक असामान्य रूप से जागते रहने के कारण था। और उससे पहले दो–तीन दिन की लगातार तैयारियों से हुई थकावट का भी नतीजा था। यह मार्च

*होटल के कमरे का लुभावना दृश्य*

के महीने का आखरी सप्ताह था और गर्मी भी बढ़ रही थी।

हमारे ठहरने का प्रबंध एक 23 मंजिला होटल, इंटर–कॉटिनेंटल में किया गया जोकि जून 2013 में विक्टोरिया द्वीप पर बनाया गया था। यहां पर उसी वर्ष सितंबर में मिस नाइजीरिया के लिए सौंदर्य प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी। यह होटल उत्कृष्ट था और कमरे बहुत भव्य और बहुत ही अच्छे थे। उनमें वो सभी सुविधाएं थी जिनकी आप स्वप्न में चाहत करते हो। बाथरूम विशेष रूप से अच्छी तरह से डिजाइन किए गए थे। हाँ एक हैरानी की बात थी कि कपड़े टांगने वाले हैंगर नदारद थे, इसको छोड़ दे तो बाकी सभी सुविधाएं वहाँ थीं। यह होटल समृद्ध व्यवसायियों और राजनयिक यात्रियों के लिए एक वर्ल्ड क्लास मेजबानी पेश करता है। इंटर–कॉटिनेंटल होटल लागोस के बिक्री और विपणन के निदेशक कृष्ण कुमार थे। हमने चैक इन किया और पाया कि यहाँ लगी लिफ्टें सिंगल डेस्टिनेशन फ्लोर स्टॉप के साथ–साथ उच्च तकनीक वाली है। यह आपकी चुनी हुई मंजिल तक पहुंचने के लिए एक सुरक्षित प्रणाली थी। कमरे में इलेक्ट्रॉनिक सेंसर था और अंदर और बाहर की सभी गतिविधियों को कैप्चर किया जा रहा

*कमरे में स्टडी टेबल एवं अन्य सहूलियतें*

*होटल इंटर–कॉन्टिनेंटल, लागोस*

था और दरवाजा सिर्फ इलेक्ट्रॉनिक कार्ड के साथ ही खुलता था। चाबी वाला ताला कही भी नहीं था।

9वीं मंजिल के 903 नंबर वाले मेरे कमरे में समुद्र के सामने सुंदर बालकोनी थी जो पूरी तरह शीशे की थी। दृश्य काफी मनमोहक था। थोडे बादल छाए थे और मैं नीचे इमारत और पांच–छह मंजिल नीचे स्विमिंग पूल को अच्छी तरह से देख सकता था। मेरे ग्रुप के अन्य सदस्यों के पास 906 और 907 रूम नंबर थे।

यह कमरा एक जोड़े के लिए भी पर्याप्त था। मुझे ख्याल आया कि मेरी पत्नी को भी यहां मेरे साथ होना

*कमरे का विस्तृत दृश्य*

चाहिए था और वह भी यात्रा का आनंद ले सकती थी। स्थान और परिप्रेक्ष्य दोनों इंटर–कांटिनेंटल के बड़े घटक हैं। यह 23 मंजिला इमारत नाइजीरिया की सबसे ऊंची ईमारतें में से एक है और पश्चिम अफ्रीका का सबसे ऊंचा होटल है। कमरे छठी मंजिल से आरम्भ होते हैं ताकि सभी 358 कमरों से मनोरम दृश्य दिखाई दें। कमरे के छोटे से छोटे विवरण का ध्यान रखना भी मायने रखता है। कपड़े इस्त्री करने के लिए बढ़िया ब्रांड की इस्त्री के साथ एक इस्त्री बोर्ड भी था और अलमारी में एक छाता भी रखा हुआ था। वॉशरूम में सभी प्रकार के तरल साबुन आदि थे जो कि दुनिया में मिलने वाले किसी भी सर्वश्रेष्ठ श्रेणी के थे।

इसमें उपलब्ध कमरे अफ्रीका के होटलों में मिलने वाले कमरों में से सबसे बड़े हैं। बाथरूम में दीवार की जगह सी–थ्रू लगी ग्लास एक बड़ी जगह होने का भ्रम पैदा करती है। रात के वक्त यह खिड़की एक विशाल दर्पण में बदल जाती है और पर्दे हटाने पर कमरे की जगह बहुत अधिक खुली–खुली सी लगती है। यहाँ से लागोस में विक्टोरिया द्वीप और इकोई के बीच दिखाई देता फाइव काउरी क्रीक का ऊँचाई से नजारा एक बहुत आकर्षक दृश्य है। उसमें तैरती अलग–अलग गति से जा रही, अलग– अलग बनावट और आकार की नावें जेट्स इत्यादि पानी की सतह पर उछल–कूद करती नज़र आती हैं और उधर, दूसरी ओर, सूर्यास्त का वो सुंदर नजारा एक खूबसूरत अहसास दिलाता है। यह एक रोमांटिक पल है जो सिर्फ स्वप्नों में ही होता है। परन्तु ये वास्तविकता मेरी आंखों के सामने थी।

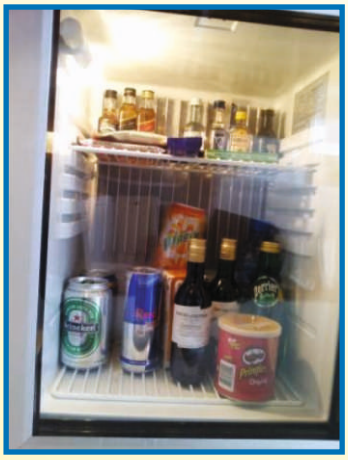

*छोटे फ्रिज में रखे पदार्थ बहुत ही महंगे थे*

*तरणताल का मनमोहक दृश्य*

अगले दिन वीरवार को होटल में हमारे लिए कई प्रकार के नाश्ते तैयार किए गए थे और हम बुफ्फे नाश्ते से अपनी पसंद की कोई भी चीज ले सकते थे। नाश्ते का अनुभव भी बहुत अच्छा रहा। लगभग 11 बजे हम दूतावास की इमारत में पहुँचे, रास्ते में फिर से ट्रैफिक जाम का अनुभव हुआ हालांकि होटल से दूतावास की दूरी 2 कि.मी. से भी कम थी। हमने श्री वी.डी. चौधरी एच.ओ.सी. को अपने कार्य के प्रकार और कार्यक्षेत्र के बारे में अवगत कराते हुए अपना कार्य प्रारंभ किया। मैं नाईजीरिया की राजधानी अबूजा में स्थित उच्चायोग में उच्चायुक्त श्री ए.आर. घनश्याम, आई.एफ.एस. को फोन करना चाहता था लेकिन मुझे बताया गया कि वह बहुत व्यस्त हैं और आप शाम 4 बजे के बाद कोशिश कर सकते हैं। शाम को सूचना मिली कि वो कहीं और व्यस्त है। इसलिए मैंने अगले दिन दूतावास पहुंचने पर तुरंत फोन करने का फैसला किया।

अगले दिन मैं थोड़ा बेहतर महसूस कर रहा था लेकिन फिर भी गले में खराश सी हो रही थी। लागोस में 33 साल से कार्यरत केरल के एक चिकित्सक डॉ. मैथ्यू को मेरी स्वास्थ्य की जांच के लिए बुलाया गया था और उन्होंने दवाएं लिखीं जो उन्होंने कहा कि दोपहर या

अगले दिन आपूर्ति की जाएगी। डॉ. मैथ्यू ने आधी जिंदगी लागोस में ही गुजारी थी और वे लगभग 60 साल की आयु के थे। जब मैंने पूछा कि उन्हें यह जगह पसंद है तो उन्होंने कहा, छिटपुट हिंसा के बावजूद, उन्हें यह जगह पसंद है क्योंकि आमतौर पर जब विकासशील देशों के लोग अन्य विकसित देशों में रहते है वहां आपको दूसरे दर्जे के व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। वहां उसके विपरीत यहां लोगों का व्यवहार काफी विनम्र और सम्मानजनक हैं। उन्होंने कहा, हमें इन लोगों से सम्मान मिलता है, और हम यहां बहुत संतोषजनक जीवन जीते हैं।

हमारा दोपहर का भोजन एक स्थानीय भारतीय होटल से लाया गया। यह शाकाहारी और स्वाद की संतुष्टि के लिहाज से काफी स्वादिष्ट था। अगर विदेश में हिंदुस्तानी खाना आसानी से मिल जाये तो क्या कहने। इस प्रबंध के लिये भी उच्चायोग धन्यवाद का पात्र था।

लागोस शहर नाईजीरिया की आर्थिक राजधानी कही जा सकती है जैसे हमारे यहाँ का मुंबई शहर। लागोस शहर में समुद्र से जुड़ी कई झीलें या एक प्रकार के

*कार्य में व्यस्तता*

*दूतावास के अंदरूनी स्वागती दरवाजे के सामने श्री चौधरी के साथ*

बैकवाटरस है जहाँ लोग कई स्थानों तक पहुँचने के लिए उच्चकोटि की मोटर चालित नावों का उपयोग करते हैं। इस होटल की बालकोनी से काफी सुंदर दृश्य दिखाई देता है। आसमान में ज्यादातर समय बादल छाए रहते हैं। शाम को मैंने देखा कि काफी बड़ी संख्या में समुद्री जहाज बंदरगाह की ओर बढ़ रहे हैं। यह एक अद्भुत नजारा था। मुझे बताया गया था कि नाइजीरिया कच्चे तेल का निर्यात करता है और यही उनकी अर्थव्यवस्था का मुख्य सूत्रधार है। मुंबई और टोक्यो के बाद लागोस विश्व का तीसरा सबसे बड़ा शहर और यह अफ्रीका महाद्वीप की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

शाम को हमें श्री सुदीप पाल, जो पिछले एक साल से दूतावास में तैनात थे द्वारा आमंत्रित किया गया था। उनकी पत्नी, दिल्ली के यमुना पार क्षेत्र के लक्ष्मी नगर की निवासी थीं। उनके दो छोटे बच्चे थे– एक बेटी और एक बेटा। उनका राष्ट्रों पर अपने विचारों और कार्य के साथ–साथ उनके रहन–सहन संबंधी सामान्य बातचीत को सांझा करना एक अच्छा अनुभव रहा। उसकी पत्नी ने कहा कि जब भी शहर घूमने का मन

करता है तो वो चले जाते है। श्री चौधरी ने बताया कि गर्मी के दिनों में शहर को कभी–कभी उत्तरी अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान से आने वाली धूल भरी आंधी का सामना भी करना पड़ता है और ऐसे समय डॉक्टर घर के अंदर रहने की सलाह देते हैं।

शाम को जब वापस लौटे तो होटल की एक महिला कर्मचारी फीडबैक लेना चाहती थी कि हम अपने ठहरने के बारे में बताएं कि यह ठीक था, क्या कमियां हैं। हमने उसे बताया कि ज्यादा समस्या नहीं है और रिसेप्शन पर बैठे एक युवक श्री टुंडे को दूसरे रूम नंबरों पर फोन न कर पाने की समस्या के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि उसके लिए फोन के आगे 80 और उसके बाद रूम नंबर लगाना है। इस तरह मेरे ग्रुप मेंबर्स को फोन न कर पाने की समस्या हल हो जाएगी। शाम ढल चुकी थी और शरीर को तरोताजा करने के लिए कुछ जलपान की इच्छा थी। हमने सोचा क्यों न रेस्तरां में बैठकर चाय या कॉफी ली जाए। मैंने पाया कि नाइजीरिया की मुद्रा को नायरा कहा जाता है और एक भारतीय रुपया तीन नायरा के बराबर है। यहां तक कि एक कप कॉफी की कीमत 3000 नायरों से भी ज्यादा है यानी होटल के रेस्टोरेंट में एक कप कॉफी की कीमत रु. 1000 है।

अगले दिन शुक्रवार, हमने तैयार होकर होटल के रेस्तरां में हल्का नाश्ता किया। जैसा कि कल फैसला किया गया था, श्री चौधरी ने नाइजीरिया की राजधानी अबुजा में उच्चायुक्त के कार्यालय में फोन लगाया और मुझे लाइन पर रखा। किसी उच्चायुक्त के साथ यह मेरी जिंदगी की पहली बातचीत थी। यह एक अच्छी बातचीत हुई और उनकी इच्छा थी कि उनके कार्यालय का भी जल्द से जल्द निरीक्षण किया जाए क्योंकि कुछ समय बाद वे इस कार्यालय से दूसरे कार्यालय में स्थानांतरित हो जाएंगे। मैंने उनसे कहा कि वह उसके

*लागोस शहर का होटल से दृश्य*

लिये मुख्यालय से संपर्क करें क्योंकि अंतिम फैसला उनके द्वारा लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह ठीक है और उन्होंने लागोस में अपने प्रवास के दौरान किसी दिन हमसे मिलने की उम्मीद भी जताई। इस बातचीत में कहीं भी रुतबे के गुमान की हवा नहीं थी। बहुत ही सहज चर्चा थी, जमीन से जुड़ी हुई थी।

हमने समाचारों और इंटरनेट पर पढ़ा कि वहां राष्ट्रीय चुनाव अगले दिन होने वाले थे और शहर में 28 और 29 मार्च को यातायात बंद रहेगा। वहां पहले भी चुनावों के दौरान हिंसा का इतिहास रहा है और 25 मार्च को हिंसा और कारों को क्षतिग्रस्त करने की कुछ घटनाएं सामने आई थीं। हमें होटल में भारतीय भोजन ना मिलने की कुछ समस्या हो सकती है। कुछ अनुभवी भारतीय लोगों ने हमें बताया कि होटल का खाना आपको ज्यादा पसंद नहीं आएगा क्योंकि यह अलग तरह का होता है और स्वाद की संतुष्टि नहीं देता है। इसलिए यह तय किया गया कि यदि संभव हो तो भारतीय खाने के टिफिन की कुछ व्यवस्था की जाएगी अन्यथा हम इस असामान्य गतिविधि के कारण होटल में ही भोजन कर सकते हैं।

***क्रमशः आगामी अंक में***

# संसदीय राजभाषा समिति को सौंपे हुए कार्य

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 4 (3) के अनुसार समिति का कर्त्तव्य है कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग के लिए हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति की समीक्षा करें और उस पर सिफारिशें करते हुए महामहिम राष्ट्रपति को प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

समिति की पहली बैठक उस समय के गृह मंत्री श्री गोविंद वल्लभ पंत की अध्यक्षता में 4 मार्च, 1976 को दिल्ली में हुई। जिसमें विभिन्न विभागों/उपक्रमों/कार्यालयों आदि में मौके पर जाकर निरीक्षण करने और हिंदी के प्रयोग संबंधी स्थिति की समीक्षा करने के लिए तीन उपसमितियों के गठन का निर्णय लिया गया था। संघ का शासकीय कार्य राजभाषा हिंदी में निष्पादित करने के लिए भारत सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा संघ के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की दिशा में हुई प्रगति की समूचे देश में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के निरीक्षणों के माध्यम से समीक्षा करना और अपनी सिफारिश करते हुए महामहिम राष्ट्रपति को प्रतिवेदन प्रस्तुत करना एक अभीष्ट कार्य है। समिति इस कार्य से जहाँ एक ओर समूचे देश में केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी के प्रयोग का जायजा लेती है वहीं दूसरी ओर महामहिम राष्ट्रपति को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत कर भारत देश में हिंदी को राजभाषा का अपेक्षित अधिकार दिलाने में होने वाली समस्याओं का समाधान खोजने के एक महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करती है।

किसी भी नीति के सफल कार्यान्वयन में अन्य पक्षों के साथ–साथ निरीक्षण व्यवस्था एक अहम भूमिका का निर्वाह करती है। ये निरीक्षण लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अंतिम प्रयास नहीं हुआ करते वरन् ये तो लक्ष्य की प्राप्ति में वे पड़ाव हैं जहां पर बैठकर हम चिंतन–मनन करते हैं और अपने अभीष्ट की प्राप्ति के लिए भावी कार्यनीति तैयार करते हैं।

पंजीकरण सं.–2 एल (9)/8747177/87(90)

*राजभाषा कीर्ति पुरस्कार वर्ष 2020–21 के लिए प्रथम पुरस्कार*

**भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय**
**9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124**